श्रीरामचन्द्रिका।
श्री केशवदास

॥ श्रीगनाधपतयेनमः॥ श्री
सरस्वतैनमः॥ श्रीपरमगुरभे
न्मः॥ अथाश्रीरामचंद्रकालि
ष्यते॥ दंडक॥ वालकेमनो
वालकमनालननज्योंटोरिडोरे
सबकठिनकरालवेअकालदी
हदुष्यको विपतहरतहरप
द्मिनीकेपातसमपकज्योंपता
लपेलपठवैकलुष्यकों दूरि
केकलंकअंकभवसीस[illegible]
समरावतहैकैसोंहामदास
केवपुष्यकों॥ सांकेरकीसा
करनसन्मुषहोतहीदसमु

॥श्रीगनाधपतयेनमः॥श्री
सरस्वत्यैनमः॥श्रीपरमगुरभे
नमः॥अथश्रीरामचंद्रकालि
ख्यते॥दंडक॥वालकेमनो
वालकमनालनज्योंटोरिजोरे
सवकठिनकरालवेअकालदी
हदुष्यको विपतहरतहटप
द्विनीकेपातसमपकज्योंपता
लपेलपटवैकलुषकों दूरि
केकलंकअंकभवसीससि
समगावतहैकेसोदासदास
केवपुष्यकैं॥सांकरकीसा
करनसन्मुषहोनहीदसमु

ए॰ चं॰
१

समुषजोवेगजमुषमुषकौं॥ १॥ बानीज
गंनीकीउदारतावषांनीजाइ ऐसीम
तिउदितउदारकौनकीभई॥ देवताप्र
सिद्धरिषराजतपवृद्धकहकहिहारस
वकहिनकाहूंलई॥ भाभीभूतवर्त्तमा
नजगतुवषानतहैकेसौदासकौपैह
नवषांनीकाहूपैगई॥ वेनैंपतिचार
मुषपूतवेनैंपाचमुषनातीवरनैंष
टमुषनदिपनईनई॥ २॥ पूरनपुरा
नऔरपुरिषपुरांनपरिपूरनवतावैन
वतावैऔरउक्तिकों॥ दरसनदेतजेनदर
सनदरसैननेतिनेतिवेदकेहैछांडिभे
दजुक्तिकों॥ जानयहकेसौदासअनु
दिनुरांमरांमरटतुरहतनडरातुपुन
रुक्तिकौं॥ रूपदेहिअनिमाहिगुनदे
हगरमाहिभक्तिदेहमहिमाहिनां
मदेहमुक्तिकैं॥ ३॥ गीतका॥ सन

सजातिगुनत्यहैजगसिद्धसुद्धसुभा
इ॥ कस्यदत्तप्रसिद्धहैतहमिश्रपं
डितराई॥ गनेससोसुतपाइयेोबुधि
कासीनाथअगाध॥ असेषसास्त्रवि
चारकैजिनसमुझियोमतुसाधि
४॥ दोहा॥ उपजोतिहिकुलमंदमति
सुतकवकेसवदास॥ तिनरामचंद्रकी
चंद्रकाभाषाकियोप्रकास॥ ५॥ भाषा
वोलनजानहीजिनकेकुलकोदास
भाषाकोकविमंदमतिसुहिकुलके
सोदास॥ सारासेअठावनाकातिकसु
दिवुधिवार॥ रामचंद्रकीचंद्रकातवली
नोअवतार॥ ७॥ वालमीकमुनिसुप्रमे
दीनोदरसनचारु॥ केसवपहतिनसोक
ह्योक्योपाऊसुषसारु॥ ८॥ मुननाग
स्वरूपनीछंद॥ भलोवुरोनतूगने॥ वृथाकथाकहैसुनै॥ नरामदेवगा

ईहै॥ नदेवलोकपाईहै॥ ९॥ छप्पै॥ दीनि
नबोल्यौबोलुदियोफिरितोहिनदीनौ
मानिमारिसत्रुक्रोधमनहूथानकीनो
जुनिमुरनिमाहिलोककीलीकनलो
पी॥ दानसत्यमनमानसुजसदिसिविदि
सिनवोपी॥ मनुलोभमोहिमदकाम व
सभयवनकेसवदासभनि॥ श्रीराम चंद्र
रुद्रादिप्रभअवतारिअवतारमनि १०
॥रमनजाछंद॥ दुषकोंदरिहै॥ हरिजू
हरिहै॥ ११ मधुछंद॥ रामनाम॥ सत्यधा
म ओरनाम॥ कौनकाम॥ १२॥ तरने
जाछंद॥ वरनिसेवरनो॥ जगतकोसर
नसो॥ १३॥ प्रियाछंद॥ सुषकंदहेरघु
नंदजू॥ जगयोकहेजगवंदजू॥ १४
सोमराजीछंद॥ गुनोएकरूपी सुनो
वेदगावे॥ महादेवजाको सदाचित्तला
वे॥ १५॥ कुमारललिताछंद॥ विरंच

गुननदेषे॥ गिरागुननिलेषे॥ अनंत मुषगावै॥ बिसेषनपावै॥ ६॥ श्रीधी न्नधे॥ दोहा॥ मुनपतियह उपदेसदै जवहीभएअदिस॥ केसवदासतही करोरामचंद्रजूईस॥ ७॥ गाहाछंद श्रीरामचंद्रपदपद्मिनियं॥ वृंदारक वृंद अभिवंदनियं॥ केसवमतभूत नया विलोचनचच्चरीकायते॥ ८॥ ॥ चतुपदीछंद॥ जिनकोजसुहंसाज गतप्रसंसामुनिमनमानसरंता॥ लोच न अनुरूपनस्यामसरूपनिअंजनअं जितसंता॥ कालत्रयदर्सीनिर्गुनपर सीहोतविलंवुनलागे॥ तिनकेगुनक हेहोसवसुषलहिहोपापपुरातनभा गे॥ ९॥ दोहा॥ जागतिजिनकीजो तजगएकरूपस्वछंद॥ तिनरामच्चं द्रकीचंद्रकावरनतहोंवहुछंद॥ १०॥

रा॰
३

॥छंद॥ सुभसराजकुलकलनप द सरथभवभूपति॥ तिनके सुतसुनचारि चतुरचितचारुचारुमत॥ एमचंद्रभुव चंद्रभरथभारथभवभूषन॥ लछमन अरुसत्रुघनदीहदानवदलदूषन सर ऊसरितातटनगरवरवैसैअवधनाम जसधामधर॥ अघवोघविनासीसव पुरवासीअमरलोकमानहुनिकर॥२१॥

॥छपय॥ गाधिराजकोपुत्रसाधिसव सत्रमित्रवल॥ दांनकृपांनविधानव सकीनेभुवमंडल॥ केमनुअपनेहाथजीतिजगइंद्रयगनअति॥ तपवल येहीदेहभयेछत्रियतेरिषपति॥ तिहि पुरप्रसिद्धकेसवसुमतिकालअतीतना गतनिगुन॥ तहअद्भुतगतिपगुधारियै विस्वामित्रपवित्रमुनि॥२२॥ पद्धटिका॥ मुनआएसराऊसरततीर॥ तहदेषे

ग ज्जलअमलनीर॥ नवनिरषनिरषि
डुलगतिगभीर॥ कछुवरनैलागेसुम
तिधीर॥२३॥ अतिनिपटकुटिलगति
जदपिआपु॥ वहदेतसुद्दगतिछुवत
आपु॥ कछुआपुनअधिअधगतिच
लंत॥ फलपतितनकोऊरधफलंत।
२४॥ पद्मावती॥ मदमतियजदपिमा
तंगसंग॥ अतितदपिपतितपावनतरं
ग॥ वहुन्हांइन्हाइतिहिजलसनेह
सवजातस्वर्गसकरसदेह॥२५॥ नवप
दी॥ जहतहलसतमहांमदमत्तियवर
वारनवारनदलन॥ अंगअंगचरचेअ
तिचंदन॥ मुंडनमुरकेदेषदेषअभक
वरवंदन॥ दीहदीहदिग्गज्जनकेकेसव
मनहुकुमार॥ दीनेएजादसत्थहि
दिगपालनउपहार॥२६॥ अरिल्ल॥
देषवागअनुएगउपज्जिय॥ वोलत

कोकिलकुलधुनिसज्जिय राजति र
तिकीसषीसुवेसनि ॥ मनहुकहतमन
मंथसंदेसनि ॥ २७ ॥ फूलनफूलतनफूल
वढावतु ॥ मोदितमहांमोदउपजावतु उ
ड़तपरागनचित्तउडावत ॥ भ्रमरभ्रमत
नहिचित्तभ्रमावत ॥ २८ ॥ पदकुलकुसं
द ॥ सुभसरसोभै मुनिमनलोभै ॥ सरसि
जफूलै ॥ अलिरसभूलै ॥ जलचरडोलै ॥
वहुविधिवोलै ॥ उपमरुआई ॥ वाननजा
ई ॥ ३० ॥ पदमावतीछंद ॥ देषीवनवारी
चंचलभारीतदपितपोधनमानी ॥ तप
मयलेषीग्रहथितदेषीजदपिदिगंवर
जांनी ॥ जदपिदिगंवरपुष्पवतीनननि
रषनिरषमनमोहै ॥ पुष्पवतीतनअ
तिअतिपावनगर्भसहितसवसोहै
३१ ॥ गर्भसजोगीरतिरसभोगीजगजन
लीनकहावै ॥ जगजनलीनानगसबी

नापिपकेजियतेभवे॥पतिहिरमोवेरवि
नुभामावेसोतिनप्रेमुवठावे॥अवयो
दिनएतिनअद्भुतभाननकविकुलकी
रतगावे॥३२॥हाकलिकछंद॥संगलि
येरिषिसिष्यनिषेने॥पावकसेतपतेजनि
सेने देषतसरिताउँवनभले॥देषनअ
वधिपुरीकेहचले॥३३॥मधभार॥ऊ
चेअवास॥अतिधुजप्रकास सोभाविला
स॥सोभेअकास॥३४॥अभीर॥अतिसुं
दरअतिसाधु॥थिरनेरहतपलआधु॥स
वनितपोमयमानि॥दंडधारनीजानि॥३
५॥हरिगीतका॥सुभद्रोनगिरगनसिषि
रऊपराउदितवोषदिसीमनो॥बहुवार
वादिवहारहीरहिउरझिदंामिनदुति
मनो॥किधोसुचिरप्रचंडपावकपगट
सुरपुरकोचली॥कहिकिधोसरितसु
देसमेरीकीदिविषलतिभली॥३६॥

प

रा० ५

दोहा॥ जीतजीतकीरतिलईसत्रुनकीवहुभांति॥ पुरपरवाधीसोभिजेमानोतिनकीपांति॥ ३७॥ त्रिभंगी॥ सुभघरसोवैमुनमनलोभैपिगनिछोभैदेषसवैवहदुंदभीवाजैजनुघनगाजैदिगजलाजैसुनननवैजहतहस्रुतपठहीविघनिवठहीजयजसमठहीसकलदिसा॥ सवईसवविधिछमवसतजथाक्रमदेवपुरीसमदिवसनिसा॥ ३८॥ कविकुलविद्याधरसकलकलाधरराजराजवरवेषवनै॥ गनपतिसुषदाइकुपसुपतिलाइकसूरसहाइककौनगनै॥ सेनापतिवुधजनमंगलगुरजनधर्मराजसमवुध्यघनी॥ वहसुमनसतनरवरकरुनामयश्रुसरतंरगिनीसोभसनी॥ ३९॥ हीरछंद॥ पंडितगनमंडितगुनदंडितमतिदेषिये॥ क्षत्रियवरधर्मप्रवरकुद्धसम

५

रलेषिये ॥ वेस्पसहितसत्सरहितपापप्र
गटमानिये ॥ सुद्धसक्ति विप्रभक्ति जीवज
न्तुजानिये ॥ ४० ॥ सिंघावलोकन अतिमु
नतनुतह मोहि रह्यो ॥ कछुबुधिवलवच
नुनजाइ रहयो ॥ पसुपंछिनारिनरनिरख
तवे ॥ दिनरामचंद्रगुनगनतसवे ॥ ४१ ॥
मरठा ॥ अतिउच्च अगारनवनीप्रगारन
जनुचिंतामनुनारि ॥ सुभसतमखधूपन
धूपति अंगनिहारिकेसीउनहारि ॥ चि
त्रीवहुचित्रनपरमेविविचित्रनकेसव
दासनिहारि ॥ जनुविस्वरूपकीअमल
आरसीरचीविरंचविचार ॥ ४२ ॥ सोरठा ॥
जगजसवंतविसाल ॥ राजादसरथकी
पुरी ॥ चंद्रसहितसवकाल ॥ भालथली
जनुईसकी ॥ ४३ ॥ कुंडरिया ॥ पंउित्त
अतिसिगरीपुरीमनहुगिरागतगूढ ॥ सि
घनजुतिजनुचंउिकामोहतमंत्रमूढ ॥

मोहतमूढअमूढदेवसगअदितविचारी
सवअंगारसदेहमनौरतमनमथकारी
सवअंगारसदेहसकलसुषमामुषमंडि
त॥मनहुसचीविधिरचीविविधिवरन
नपंडित॥४४॥छप्प॥मूलनहीकोजं।
हांअधोगतिकेसवगाडिय॥होमहुतास
नधूमनगरएकेमलिनारिय॥दुर्गतिदु
र्गनहीजुकुटिलगतिसरतनहीमै॥श्रीफ
लकोअभलाषप्रगटकविकुलकेजी
मै॥अतिचंचलजहचलदलैविधि
वावनीननारि॥मनमोहरह्योरिषरा
जजूअद्भुतनगरनिहारि॥४५॥सोरठा
नागरनगरअपार॥महामोहितमनमि
वसे॥अस्नालनाकुठार॥लोभसमुं
दअगस्तसे॥४६॥दोहा॥विस्वामित्र
पवित्रमनकेसववुध्धउदार॥देषतसो
भानगरकीगएराजदरवार॥४७॥इति

श्रीमस्तकलोकलोचनचकोरचिंताम
निश्रीरामचंद्रकायांविस्वामित्रआग
मनवर्ननंनामप्रथमप्रकास॥दोहा॥
यहदूसरेप्रकासमेंदसरथराजविचित्र
रामचंद्रलक्षमनदुहोदेहेविस्वामित्र
१॥हंसछंद॥आवतजातराजकेलोग
मूरतिधारीमानहुभोग॥अससिद्धिन
वनिहसजोग॥देहसदाजिनकीनिरोग
२॥दोहा॥आदिनगनपुनियगनरचि
चरनषटछुरजानि॥सुनहुमालतीछंद
दुसहकुलकौंसुषदांनि॥३॥माल
ती॥तहदरवारी॥सवसुषकारी॥कृतजु
गकेसे॥जनुजनवेसे॥४॥दोहा॥महि
षमेषमगहषभकहुभिरतमस्तगज
राज॥लरतकहूपाइकसुभटकहुनि
र्तननटराज॥५॥आदिअंगुरूवरनिसे
रगनजगनतिहिमाह॥कीनीएगटस

हे

त

मानिकासमवानकविनाहा॥ ७ ॥समानि
का॥ देषदेषकेसभा॥विप्रमोहियोप्रभा
स॥राजमंडिलीलसे॥देवलोककोहसे
॥दोहा॥ अक्षवानपददेहिक्रमगुरुलघु
केसवदास॥मदनमल्लिकानामयह
कीजेछंदप्रकास॥ ८ ॥मदनमल्लिका॥
देसदेसकेनरेस॥सोभिजैसभासुवेस
ज्ञानजैनआदिसंत॥कौनदासकौन
कंतु॥ ९ ॥दोहा॥सोभतवैठेतिहिस
भासातदीपकेभूप॥तहराजादसरथ
लसतदेवदेवअनुरूप॥ १० ॥देषतिन्है
नवद्वारितेगुदरनगोप्रतहार॥आए
विस्वामित्रजनुजगकोकरतार॥ ११
उरसैरन्नपसुनतहोजाइगहेनवपाइ
लेआएभीतभमनज्योसुरगरसुरए
इ॥ १२ ॥सोरठा॥सभामधवेताल ते
होतमैजुपटिठिठो॥केसवबुधिविसा

ल ॥ सुंदरसतौभूपसौ ॥ १३ ॥ दंडक ॥ वि
धकेसमानिहैविमानकेनराजहंसविं
विधिविवुधजुमेरसोअचलुहै ॥ दीप
तिदिपतिअतिसातोदीपदीपजतुद
सौदिलीपसौसुदक्षनाकोवलुहै ॥ सा
गरजागरकेवहुवाहनीकोपतिछन
दानप्रियकिधोसूरजअमलुहै ॥ सव
विधिसमरथराजैराजादसरथभागी
रथपथगामीगंगाकैसोजलुहै ॥ १४
॥ दोहा ॥ जदिपइंधनजरिगएअरि
गनकेसवदास ॥ तदपिप्रतापीनल
नकेपलपलवढतप्रकास ॥ १५ ॥ नग
नआदिरचिहैजगनरचिजेवहसु
षकंद ॥ चरनचारूनववरनमयप्रग
टहुतोमरछंद ॥ १६ ॥ तोमरछंद ॥
वहुभातपूजसुराइ ॥ करजोरकैपर
पाइ ॥ हसिऐसोकह्योजगमित्र ॥ अव

रा.
८

बैठराजपवित्र ॥१७॥ मुनउवाच ॥ सुन
हानमानसहंस ॥ रघुवंसकेअवतंस
मनमाझिजोअतिनेहु ॥ इकबातेमा
गेदेहु ॥१८॥ दोहा ॥ नगनरचौदुज
गनमयदेहुएकगरअंत ॥ प्रगटकरै
सहअमत्तगतिछंदनामभगवंत ॥१
९ ॥ अमत्तगति ॥ सुमतिमहारिषसु
नैजे ॥ तनधनकेसमग्रनैजे ॥ मनम
हहोइसोकहियै ॥ धंनजुआपुन
लहियै ॥२०॥ दोहा ॥ आदअंतगु
रुमध्यपुनिहीनतिभगनविचार ॥
पदऐकादसबानकौदोधकछंदसु
धार ॥२१॥ रिषवाच ॥ दोधक ॥ राम
गएजबतेबनमाही ॥ राषसवैरुक
रैबहुधाही ॥ रामकुमारहमैनपदी
जै ॥ तौपापरनजज्ञकरीजै ॥२२॥
॥ दोहा ॥ रचेपदबारहबरनकौ के

सवदासुजान॥ चारिसगनकोचारु
मतितोटकछंदप्रवान॥२३॥ तोटक
पहवानसुनीनपनाथजवे॥ सास्ते
लगेआषरचितसवे॥ मुषनेकछुवा
ननजाइकही॥ अपराधविनाषिदे
हदही॥२४॥ राजउवाच॥ अतिको
मलकेसववालकना॥ वहुदुष्कार
छुसवालकाना॥ हमहीचलहैरि
षसंगअवे॥ सजिसेनचलोचतुरंग
सवे॥२५॥ रिषिउवाच॥ छप्पै॥ जि
नहाथनिहठिहरषिहननहरिनीर
षुनंदन॥ तिननकारनुसंघारकहा
मदमंत्तगयंदन॥ जिनवेधनसाल
सलक्षनपकुअरकुवामन॥ तिन
वाननवारहवाधनहिमारतसिंघ
न॥ नपनाथनाथदससाध्यकथत्र
कथकथापहमानिसै॥ मगराजराज

कुलकलसएवालक बूहूनजानिये
दोहा ॥ २६ ॥ चारिभिगनकौसुंदरीक्षं
दछबीलौहोइ ॥ प्रतिपद द्वादस व
रनमयवरनतबुधजनकोप ॥ २७ ॥
सुंदरी ॥ राजनमेतुमराजवडेश्रुति मे
मुहुमाग्योसुदेहुमहामति ॥ देवमहा
इकहौनलोइक ॥ हैयहकाजरामम
हिलाइक ॥ २८ ॥ राजउवाच ॥ दोधक
मेजुकह्यौरिषिदेनसुलीजे ॥ काजुक
रैहरभूलनकीजे ॥ प्रानदियेधनजा
हिदिएसव ॥ केवलरामनजाइदिए
अव ॥ २९ ॥ रिषिउवाच ॥ राजुतज्यो
धनमाधतजेसव ॥ नारितजीसुत
सोचतजेतव ॥ आपनपेजुतज्योज
गवंदह ॥ सत्तुनएकुतज्योहरचंदह
३० ॥ राजुवहेवहसाजुवहेपुर ॥ धा
मुवहेवहनामुवहेगुर ॥ अूठसोअ

रहीबाधतहेमन॥ छांडतहोनपसस
सनातन॥३१॥ दोहा॥ जान्यो विस्वा॥
मित्रकेकोपउठोउरआइ॥ राजादसाथ
सोकहोवचनवसिस्टवनाइ॥३२॥
छपय॥ इनहीकेतपतेजजग्यकीरक्षा
करहे॥ इनहीकेतपतेजसकलवलर
क्षसहरिहे॥ इनहीकेतपतेजतेजवढ
हेतननतान॥ इनहीकेतपतेजहोहिंगे
मंगलपूरन॥ कहवेसवजयजुतआ
इहेइनहीकेतपतेजघर॥ नपवेगरा
मलछमनदुयोसोपोविस्वामित्रक
र॥३३॥ सोरठा॥ राजाआनमित्र जा
नोविस्वामित्रते॥ जिनकोअमितच
रित्र॥ रामचंद्रमयमानिये॥३४॥ दो
हा॥ नपसोवचनवसिष्टकोकेसेम
टोजाइ॥ सोपेविस्वामित्रकोरामचं
द्रअकुलाइ॥३५॥ आदिमगनपनि

नगनरचवहु।जगनहै।आनुअंतलपं
कजवाटिकातेहवरनवषानु॥२६॥पं
कजवाटिका॥ रामचलततनृपकेजुग।
लोचन॥ वाजिभरिभएवारिदमोच
न॥ पाइनपरिरिषकेसजिमौनहि॥ के
सवउठिगएभीतरभौनहि॥२७॥दोहा
रगनजगनपुनिभगनिरचिवहुरेरग
नहिआन॥ आदिअंतगरचामरहि
पंद्रहवरनवषान॥२८॥ चांमर॥ वेद
मंत्रतंत्रसोधिअस्त्रसस्त्रदेभले रा
मचंद्रलछमनेसुविप्रछिप्रलेचले
लोभछोभमोहगर्भकामकामनाहि
ई॥ नीदभूषप्याससत्रासवासनासवै
गई॥३९॥ दोहा॥ भगनजगनपुन
सगनरचिवहुतेगनविचार॥ होहि
छंदनिसपालकापंद्रहवर्नविचार
४०॥ निसपालका॥ कांमवनएम

सववामनस्देषियो नैनसुषदेनम
नमैनममलेषिझो ईसजहकामत
नुकैअतनुउारिझो क्षोरिवहजग्प
पलुलोचनिनिहारियो ४१ दोहा
एमचंद्रलछमनसहिततनमनअत
सुषपाइ देष्योविस्वामित्रकोपामत
पोवनजाइ ४२ इतिश्री मत्सकल
लोकलोचनचकोरचितामनश्रीरा
मचंद्रचंद्रकायांविस्वामित्रतपोव
नदर्सनंनामदुतीयप्रकास॥ श्रीदो
हा॥ यहतीसरेप्रकासमेरक्षाकरमे
षमित्र धनषजज्ञकीसुभकथासुने
हैपरमविचित्र १ छंद पद्म नरूत्ता
लीसतमालतालहितालमनोहरमं
जुलवंजुललकुचवकुचकुलनारि
केरवर ऐलाललितलवंगसंगपुं
गीफलसोहे सारीसुककुलकलि

नचिंतके किलन्नलमोहै सुभाजहं सकलहंसजहनाचतमत्तमयूरगन॥ अति प्रफुल्लितफरातिसदारहतकेसवदासविचित्रवन॥२॥दोहा॥समुझिसवैलघुअंतगुरुसुप्रियछंदप्रकास॥अक्षिप्तपदपंचदसवरनहुकेसवदास॥३॥सुप्रिया॥कहुदुजगनमिलिसुषश्रुतपठहीं॥कहुहरिहरिकहहरहरटहीं॥कहुमगपतिमगसिसुपयपियहीं॥कहुमुनिगनचितवतहियहरहीं॥४॥दोहा॥लघुगुरुक्रमहीदेहुपदसोरहवरनप्रमानछंदनराजवषानियैकेसवदाससुजान॥५॥नराज॥विचारमानब्रह्मादेवअर्चमानमानियै॥अदीहमानहुदुषःसुषःदीहमानिजानियै॥अदंडमानदीनवर्गदंडमान

भेदुवे॥ अपसमानपापगंपपसमा
नवेदुवे॥ ६ ॥ दोहा ॥ पंचभगनमय
अंतगुरएकरचहुसुषमाज॥ प्रगटहु
छंदविसेषकाकेसवकविकविराज॥
७॥ विसेषक॥ साधुकथाकथिएत
हकेसवदासजहां॥ निग्रहकेवल
हेमनकौदिनमानतहां॥ पावनवा
सुसदारिषिकौसुषकौवरषै॥ कोव
रनैकविताहिविलोकतह्मोहरषै
८॥ दोहा॥ कमहीगुरलघुदेहुप
दप्रतिपदषोडसवर्न॥ चारुछंदय
हचंचलाप्रगटहुकविमतिधर्न ६
चंचला॥ रक्षिवेकौजगपकूलवेठि
वीरसावधान॥ होनलागेहोमके
जहांतहांसवैविधान॥ भीमभां
तिताडिकासुभंगलागीकरनआ
इ॥ रामपेनवाननताननारिजानिक्ष

प्र॰
१२

डिजाइ॥१०॥षिचाच॥सोरठा॥कर
मकरनपहघोर॥विप्रनकौदसहूदि
सो मन्नसहसगजजोर॥नाएंजोनि
नछंडिए॥११॥कुंडरिआ॥सुतावि
रोचनकीहुतीधीरघजिह्वानामसु
रनाइकवहसंघरीपरमपापनीवा
म॥पापापनीवामच्यौउपजीकपि
माता॥नाएयनसोहतीचक्रचिंता
मनदाता॥नाएइनसोहतीसकल
दुजदूषनसंजुत॥त्यौच्यवत्रभुवन
नाथतारकातालहुसःसुत॥१२॥दो
हा॥दुजदोषीनविचारिसैकहापु
रिषकहनार॥एमविरामनकीजई
वांनतारिकातार॥१३॥मरैठा॥सुन
गुरबानीधनगननानीजांनीदुज
दुषदान॥ताकासंघारीदारूनभा
रीमारीअतिवलजान॥मारीचुवि

म

ह

उग्रेजलिधिउतारैमारैसवलसुवा
हु॥देवनिगुनपरषैपुष्पनवरसैहर
रष्यो अतिसुरनाहु॥१४॥दोहा॥प्र
स्नजगपभयोजहींजानोविस्वामित्र
धनषजगपकीसुभकथालागेसुनन
विचित्र॥१५॥दोहा॥रागनहोइपुनि
तगनइकुवहुरजगनहैआन॥आदि
अंतगुरुचचरीवरनअठारहजान
१६॥चचरी॥आईयोतिहिकाल
वाम्हनजगपकौफलदेषके॥ताहि
बूझतवालकेरिषिभांतिभांतिविसे
षके॥संगसुंदररामलछमनदेषिदे
षिसहर्षही॥वैठकैसोईराजमंडि
लवनईसुषवर्षही॥१७॥सादूल
विक्रीडितश्लोक॥सीतासोभनमा
हंत्सवसभामध्यसंभावना॥ततः
कार्जसमग्रामीमिथिलावासीजन

उ

॥सोभना॥राजाराजप्रोहितादिसुइंदरा
गंद्रीमहामंत्रदा॥नानादेससमागता
नृपगनापूजापरासर्वदा॥१८॥दोहा॥
श्रीषंडपरसकौसोभिजैसभामहको
हेत॥मानहूसेषअसेसधराधरनहा
रवलवंत॥१९॥सवैया॥सोहतिमंच
नकीअवलीगजदंतमईछविउज्जलता
छाई॥ईसुमनौवसुधामेसुधासुधा
धरमंडलीमंडिजुन्हाई॥तामहेकेस
वदासविराजतराजकुमारसबैसुष
दाई॥देवनसोजनुदेवसभासुभसी
पसयंवरदेषनआई॥२०॥दोहा॥
नचतमंचपंचालिकाकारसंकुलित
अपार॥राजतहेजनुनृपनिकीचित्र
वृत्तिसुकमार॥२१॥सोरठा॥सभाम
ध्यरनग्राम॥वंदीजनहैसोभिजै सु
मतिविमतइहिनाम॥राजनकौवर

ननकरन ॥ २२ ॥ सुमत ॥ दोहा ॥ कोय
कुदेषतुआपनेपुलकितवाहुविसा
ल ॥ सुरभिस्वयंवरजनुकरीमुकलि
तसाषरसाल ॥ २३ ॥ विमत ॥ सोरठ
जिहिंजसपरमलमत्त ॥ चचरीकचा
रनफिरतदिसविदिसिनअनुरत्त सु
तौमल्लिनिकापंडनृप २४ ॥ सुमतिदो
हा ॥ जाकेसुषमुषवाससेंवासितहो
तदिगंत ॥ सुपुनिकह्योयहकोनुनृप
सोभासोभिअनंत ॥ २५ ॥ विमत ॥
दोहा ॥ राजराजदिगवान भालला
ललोभीसदा ॥ अतिप्रसिद्धहि
नाम ॥ कासमीरकोतिलकुयह ॥ २६
सुमति ॥ दोहा ॥ निजुप्रतापदिनक
रकरनुलोचनकमलप्रकासु ॥ पान
पातमसक्यानुमहुकोयहकेसोदा
स २७ ॥ विमति ॥ सोरठा ॥ नृपमा

ति

निकवसुदेस। दक्खिनतियजियभाव
तो करतिनदिसपरसवेस। कलका
चीकहिमंडई॥ २८ ॥सुमति दोहा॥
कुंडलनपासन मिसकहतुकहौकौन
यहराज। संभुसएसतगुनवेरैककन्ना
लंवित आज॥ २९ ॥सुमति॥सोरठा॥
जानहिबुध्धनिधान मत्तराजयह
राजकौ॥ समरसमुद्रसमान। जानतु
सवअवगाहिकै॥ ३०॥सुमति॥दोहा॥
अंगरागरंजितरुचिरभूषनभूषत
देह। कहतविदुषनसोकछुसपन
कहेनपएहि॥ विमत॥सोरठा॥
चंदनचित्ततरंग। सिंधराजयहजानि
पै। वहुतवाहनीसंग। मत्तामाल
विसालउर॥ ३१ सुमति॥दोहा॥ सि
गेराजसमाजकेकहे गोतगनग्रा
म। देससुभाउप्रभाउअरुवलवि

क्रमपरनाम॥३३॥ विमन॥ दंडक॥ पाव
कपवनमुनिपनंगपतंगपवित्रजितजो
तिवंतजगजोतिसिनगाएहे॥ असुर
प्रसिद्धिसिधितीरथसरितसिधक्रम
वचराचरजेवेदनवतारएहे॥ अजर
अमरअजअंगियोअंगीसवरनिमु
नाए॥ ऐसेकौनेगुनगाएहे॥ सीता॥
केस्वयंवरकोरूपअवलोकिवेकोभू
पनिकोरूपधरविस्वरूपआएहे॥
॥विमति॥ सोरठा॥ कह्यौविमतिप
हठेरि॥ सकलसभाहिसुनाइकै॥ च
ह्वोरकरफर॥ सवहीकोसमुझाइ
कै॥३५॥ दोहा॥ सगनजगनहूंभग
नपुनिरगनसगनपुनिआनलघुगु
रअंतहगीतकाविंसतवरनवषान
३६॥ गीतका॥ कोईआजराजसमा
जमेवलसंभुकोधनकर्षिहै॥ पुनक

नेकिपरिमानआनसुचित्तमेंअतिह
र्षहै॥वहरंकुहोइकैराजुकेसवदास सो
सुषपाइहै॥नृपकंनिकापहत्तासकेउ
रपुष्पमालानाइहै॥३७॥ दोहा॥ नै
कुसरासनआसनैतजेनकेसवदास॥
उदिमकैथाकेसवैराजसमाजप्रकास॥
॥विमति॥सुंदरी॥सत्रुकरीनहिभत्रु
करीअब॥सोननयोपलसीसनरेस
व॥देषहुराजकुमारनकेबर॥चापुच
ढैनहिआपुचढेषर॥३८॥सवैया॥
दिगपालनकीभुअपालनकीलोक
पालनकीकिनिमातगईत्वै॥भाडभ
एतजआसनतैकहिकेसवसंभुसरा
सनकोस्वै॥सुकाहूतवायोनकाहूंव
ढायोनकाहूंउढायोनअंगुलद्वै॥कछु
स्वारथभोनभसोपरमारथआएतेवीर
चलेवनितान्है॥४१॥इतिश्रीमत्सक

लोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीराम
चंद्रिचंद्रकायांसीतास्वयंवरवरननंनाम
त्रेतीसप्रकास॥३॥दोहा॥चौथेचार
प्रकासमेकेसवदासप्रमान॥धनषजग्य
मेराम्रतिकरेहेरावनवान॥१॥सवही
कोसमुझौसवनिवलविक्रमपरमानु
सभामधतेहीसमेआरेराउनवानु॥२॥
डिल्ला॥नरनारतवे॥भयभीतसवे॥
अचिरज्जुयहे॥सवदेषिकहे॥३॥दोहा
हेराषसुदससीसकोदेयंतुवाहुहजा
र॥कियोसवनकेचित्रमयअद्भुतरस
संसार॥४॥रावनविपोहा॥संभुकोदं
डहे॥दूकहेतीनके॥राजपुत्रीकितेजा
हुलंकाहिले॥५॥विमतससिवदन द
ससिरआवहू॥धनषचढावहू॥कछुव
लकीजे॥जगुजसलीजे॥६॥वानगीत
का॥दसकंठरसरछांडिदेहठवारवा

ए॰
१६

रनबोलिये॥ अब आजुएजसमाजमे
बलुसाजचित्तनडोलिये॥ गिराजेतै
गुरज्ञानिपैसुराजकोधनुहाथलै॥ ७
सुषपाइताहचगाइकैघराजाहरेजसु
साथलै॥ ७॥ रावनमंथरा॥ बानीकही
बानकीनीनसोकान॥ अद्यापि अं नी
न॥ ऐसंदकांनीन॥ ८॥ दोहा॥ जगनदे
इषटवान॥ जुनज्ञानमालनीकंतु॥ न
गनदेइगुरअंतहै॥ रचहुंतुरंगमसंतु
॥ बानमालनीछंद॥ जोपैजियजोर
तजैसबुसोहु॥ सरासननतोसु॥ लहो
हितजोर॥ १०॥ रावन॥ दंडक॥ वजके
अषर्वगर्भजैपैतिहि पर्वतारिजीते
हैसुपनेसर्वभाजे लैलै अंगना ष
डित अषंड आसकीनैहैजलेस
पासचंदनसीचंद्रिकासोंकीनीचं
दवंदना॥ दंडकमेकीनोकालदंडही

गं

१६

कौमानषंडमानौंकीनींकालहीकी
कालकालषंडना। केसवकोदंड वि
सहंड ऐसौरंजे अवमेंभुजदंड न
कोवडीपैविरंमना॥ ११॥ वाननुरंग
म॥ वहुनवदनजाके॥ विविधिवच
नताके॥ वहुभुजजुनजोई सवल
कहियैसोई॥ १२॥ एवन॥ दोहा॥ अ
तिअसारभुजभारहीवलीहोहुगे
वांन॥ ममवाहुनकेजगतमेमुनि द
सकंठविधांन॥ १३॥ वान॥ सवैया॥
हौंजवहींजवपूजनजातुपितापद
पावनपापप्रनासी॥ देषिफिरौंसि
गरेतवकेसवसातौरसातलकेजि
विलासी॥ लेअपनेभुजदंडअषंड
धरौंछितिमंडलछत्रप्रभासी॥ जाने
कोकेसवकेतिकवारमेंसेसकेसीस
नदीनीउसासी॥ १४॥ दोहा॥ गन
न

आदिदै सगन दै लघुगुरु दीजहि अंत ॥
अह ठवत प्रतिपद निदै कमला छंद
कहंत ॥ १५ ॥ रावन कमला ॥ तुम प्रवल
जुहते ॥ भुजवल निसंजुते ॥ पितहि
भुवलाठते ॥ जगत जस पावते ॥ १६ ॥
॥ दोहा ॥ सगन एक रचै हजगन तो मर
छंद प्रसिधि ॥ प्रतिपद नव धावरन कौ
केसवदास सुसिधि ॥ १७ ॥ वान तोमर
पितु ग्रषि एकहि हिवोक ॥ द्विपद छिना
सव लोक ॥ यह जान राउन दीन ॥ पितु
वम्ह केर सलीन ॥ १८ ॥ सवैया ॥ कैट
भसौ नरकासुर सौ पल मै मधु सौ मु
र सौ जिहि मार्‌यो ॥ लोक चतुर्दस र छ
कु केसव पूरन वेद पुरान विचार्‌यो ॥
श्रीकमला कुच कुंकुम मंडित पंडि
त देव अदेवनि हासो ॥ सो कर मांग
न को वलि पै करतार हूतै कर ताहि

पसारी ॥ १९ ॥ रावनदोहा ॥ हमेंतुम्हे नहिबूझिएविक्रमवाहुअषंड ॥ अब वजुयहैकहिदेहिगोमदनकदनकोदंड ॥ २० ॥ संजुता ॥ वजुवांनरावनको सुन्यो ॥ सिरराजमंडिलकोधुन्यो ज गदीसअवरक्ष्याकेरो ॥ विपरीतवा तसवेहरो ॥ २१ ॥ दोहा ॥ रावनवां नमहावलीजांनतसवसिंसार ॥ जोदोऊधनकर्षहैताकोकहाविचार ॥ २२ ॥ वान ॥ सवैया ॥ केसवऔ रतेऔरभईगतजानीनजाइककुक रतारी ॥ सूरनकेमिलवेकहआयमि लोदसकंठसदाअविचारी ॥ वाढि गयोवककवादवृथाअवभूलनभा टसुनावहिगारी ॥ चांपचढायजेकी रतकोयहराजकरैतेरीराजकुमा री ॥ २३ ॥ रावन ॥ मोकहरोकसके

रा० १८

कहिकोर॥जुध्धजुरैजमहीकाजो
रे॥राजसभातिनुकाकरलैषो॥दे
षिकेराजसुताधनुदेषो॥२४॥वान
सवैया॥ वानकहोनवएवनसो
न्नववेगचठावसएसनको॥वाने
वनाइवनाइकहाकहिछोडदैश्रा
सनवासनको॥जाननहेकिधोंजा
ननताहिलेंअपनेमदनासनको॥
ऐसेहीकेसेमनोरथपूजनपूजे
विनानपसासनको॥२५॥एवन॥
वानृनवाततुम्हेकहिआवै॥वान
जोइकहोजियतोहिसुभावै॥एव
नकोहोहमसोहीहरेंगे॥वान हे
हूएराजकरीसुकरैगे॥२६॥एवन॥
दंडक॥भोजसोभवतवासुकिगनेस
जुतमानोमकरंदवुंदमालगंगालको॥
उउतपएगपटनालसीविसालवाहु

क

रा १८

कहा कहैहो केसवदास सोभा पल पल
की ॥ आजु सगन सर्वमंगला समेत
जुत पर्वत उठाइगति कीनीहो कम
लकी ॥ जानन सकल लोक लोक
पाल दिगपाल जानतु नवा नमेरे
वाहु बलकी ॥ २७ ॥ मधुवार ॥ तज
के हुए ॥ एसि चित्त मारि ॥ दसकंठ
आनु ॥ धनु छिपो पान ॥ २८ ॥ विम
ति ॥ तुम वल निधान ॥ धन आति
पुएन ॥ पोस जहु अंग ॥ नहि होइ
भंग ॥ २९ ॥ सवैया ॥ षरतु मान भसो
सव कोन पमंडल हारि रह्योजगती
को ॥ व्याकुल वाहु निराकुल वुद्धि
थको ॥ वल विक्रम लंकपती को के
टि उपाइ करेक हिकेसव क्यों हूं न
छांडतु भूमरती को ॥ भूरि विभूत प्र
भाव सुभाउ हि ज्यों न चले चितु जे

गीजतीकौ ॥ २०॥ पधिटक ॥ धनुश्र
तिपुरनलंकेसजानि॥ यहवातवा
नसोकहीश्रान॥ हौपलकमाश्र
लैहोचराइ॥ कछुतुमहीघोदषौउ
ठाइ॥ २१॥ वान॥ दोहा॥ मेरगुरकौ
धनुषयहसीतामेरीमाइ॥ दुहुभात
श्रसमंजसेवानचलेसिरुनाइ॥ २२॥
रावन॥ मोदक॥ श्रवसीयलपेवि
नुहौनटरो॥ कहजाउननोलगिनै
मुधरो॥ जौलौनसुनोश्रपनेजनको॥
श्रतिश्रारतसब्दहतोतिनको॥ २३॥
॥ ब्राह्मनोवाच॥ दोहा॥ कहसरस्मा
सरमारिये॥ श्रारतसब्दश्रकासपु
कारिय॥ रावनकेवहिकानपर्योज
व॥ क्षोडिस्वयंवरजातुभयोतव॥ २४॥
॥ दोहा॥ जवजानोसवकोभयोस
वहीदिशिघिद्युतभंग॥ धनषुधरो

लैभवनमैराजाजनकअनंग ॥३५॥
॥इतिश्रीमल्लकुललोकलोचनच कोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांरामचानसंवादवर्ननंनामचतुर्थप्रकास॥४॥दोहा॥ यहपाचैयप्रकासमैजनकराजसुषजाल॥ सीताज्रघुनाथकौपहिराहेसुभमाल॥१॥वालनउवाच॥ नवश्रानिभईसवकैउचताई॥ केसवकाहूतौमेटीनजाई॥ सियसंगलियैरिषकीतियश्राई॥ इकराजकुमारमहासुषदाई॥२॥मोहनि॥ सुंदरवपुअतिस्यामलसोहै॥ देषतसुनरकौमनुमोहै॥ श्रानिलिषीयसियकैवहुऐसो॥ यहराजकुमारदेषियतुजैसो॥३॥तोटक॥ रिषिराजसुनीयहवाततजही॥ सपपांच

६

रा॰
२०

लेमिथलाहितही॥ वनरामसिलाद
रसीजवही॥ त्रियसुदाररूपभईतवही
४॥ श्रीराम॥ दोहा॥ वूझीविस्वामि
त्रकोरामचंद्रअकुलाइ॥ पांहनतेति
यकैवोभईकहमोसोरिषिराइ॥ ५॥ वि
स्वामित्रसोरठा॥ गोतमकीयहनार
इंद्रदोषदुरगतिभई॥ देषतुम्हेनका
र॥ परमपतितपावनभई॥ ६॥ कुसम
विचित्र॥ तिहिअतिरूपरघुपतिदे
षे॥ सवगुनपूरतनमनलेषे॥ यहव
रमागपोदिसोनकाहू॥ तुममममजि
यनेकवहूनजाहू॥ ७॥ कलहंस॥ त
हताहदेवरचलेश्रीरघुनाथजधी
रदोउसरसुंदरालसतपोरिषिसा
थजू॥ जनुसिंघकेसुतदयोसिंघ
हश्रीदए॥ वनजीवदेषनहोसवैमि
थलागए॥ ८॥ विस्वामित्र॥ दोहा॥ २०

काहूकोनभयोकहूं ऐसोसगुननहो
न॥ पुरपेठत श्रीरामकोभयोमित्र उ
दोत॥ ९॥ श्रीराम॥ चौपही॥ कंचुरा
जतराजअस्त्रनघेरा॥ जनुलक्ष्मन
केअनुरागभेरा॥ चितवतचित्तकमो
दिनचैसे॥ चोरचकोरचितासो लसे
से॥ १०॥ लक्ष्मण॥ छपय॥ अरुन
गातअतिप्रातपद्मिनीप्रांननाथभ
य॥ मानहुकेसवदासकोकनदकी
कप्रममय॥ परिपूरनिसिंदूरपूरके
धोमंगलघट॥ किधोसक्रकोछत्र
मढ्योमानिकमयूषपट॥ कैश्रोनित
कलितकपालयहकिलकापालि
कपालको॥ ललितलालकेधो।
लसतदिगभांमिनिकेभालको।
॥ ११॥ तोटका॥ पसरेकरकुमुदिन
काजमनो॥ किधोपद्मिनिकोसु

षदेनमनौजनुक्षिसवैद्रिहिचासभगो॥जनुजानिफूदांनिचकोरउगे॥१२॥चच्चरी॥ओमेमैमुनिदेषिएअतिलालनश्रीसुषसाजही॥सिंधमेवडवाग्निकीजनुज्वालमालविराजही॥पद्मरागनिकीधौदिविधूरपूरितसीभरी॥सूरवाजनकीषुरीअतितिक्षनातिनकीहरी॥१३॥विस्वामित्र॥सोरठा॥चढोगगनतरधाई॥दिनकरवांनरअरुनमुष॥कीनोझुकअहराइ सकलतारकाकुसमविनु १४॥लक्ष्मनदोहा॥जहोवारुनीकीकरिंचकरुचिदुजराज॥तहीकस्योभगवंतविनसंपतिसोभासाज॥१५॥तोमर॥चहुभागवागतडाग॥अवदेषिएवडभाग॥फू

लफूलसोभसजुक्त । अलियोरमेत्र
नुमुक्त ॥ १६ ॥ दोहा ॥ तिननगरीतिन
नागरीप्रतिपदहंसकहींन ॥ जलज
हारसोभितनजहप्रगटपयोधरपी
न ॥ १७ ॥ सवैया ॥ सातहूदीपनिके
अवनीपतिहारगएजियमेजवज्ञा
नै ॥ बीसविसैव्रतभंगभयोसुकहो
अवकेसवकोधनुतानै ॥ सोककी ।
आगलगीपरपूरिसुआइगए ॥ घ
नस्यामविहानै ॥ जानुकीकेजन
कादिकेकेसवफूलउठेतनरूपंनपु
रानै ॥ १८ ॥ दोहा ॥ आइगएरिषिरा
जहिलीनै ॥ मुष्यसतानदविप्रप्रवी
नै ॥ देषिदुवोभएपाइनिलीनै ॥ आ
सिषसीषवासुलेदीनै ॥ १९ विस्वा
मित्रसवैया ॥ केसवयेमिथिलाधि
पहेजगमेजिनिकीरतवेलवई

हैं॥ दानकृपानविधाननिसौंसिग
रीवसुधाजिनिहाथलईहैं॥ अंग
छैसातकुआठकुसौंभवतीनहूंलो
कनिसिद्धिभईहैं॥ वेदत्रईअरु
राजसिरीपरिपूरनतासबजोग
मईहैं॥ २०॥ जनक॥ सोरठा॥ जि
निअपनौतनस्वर्न॥ मेलितपोम
यअग्निमें कीनोउत्तमवर्न॥ तेईवि
स्वामित्रए॥ २१॥ विस्वामित्रमोदक॥
जनराजवंत॥ जगजोतिवंत॥ तिनके
उदोत॥ किहिभांतिहोत॥ २२॥ सवैया॥
सबछत्रियआदिदैकाहूछुईनलगै
विजनादिकुवातडगै॥ घटैनवढैनि
सवासरकै सबलोकनिकैतमतेजभ
गै॥ भवभूषनभूषितहोतुनहीमदमत्त
गजादिमसीनलगै॥ जलहूथलहूंपरि
पूरनश्रीनिमकेकुलअद्भुतजोतिजगै॥

॥ जनक ॥ तारक ॥ यह कीरति योरन
रैसन सोहै ॥ सब देवन औ देवनि कौ मन
मोहै ॥ हम को वपुरा सुनिजे रिषि राई ॥
सब ग्राम छसात ककी ठकुराई ॥ २४ ॥
॥ विस्वामित्र सवैया ॥ आपने आपने
ठौरन तौ भुव पाल सबै भुव पालै स
दाई ॥ केवल नाम ही के भुव पाल क
हावत है भुव पाली न जाई ॥ भूपनि
की तुम्ह ही धरी देहि विदेहनि मैं क
लकीरति गाई ॥ केसव भूषन को भ
यो भूषन भूतल लै ने तन पाउ पजाई ॥
२५ ॥ जनक ॥ दोहा ॥ इहि विधि की चि
त चातुरी तिन कौ कहा अकथ्य लो
कनि की रचना रुचिर रचि वे को जु
समथ्य ॥ २६ ॥ सवैया ॥ लोकन की र
चना कह चित्त जहीं परि पूरन बुधि
विचारी ॥ केसव दास तही स

वम्रमिश्रकासप्रकसितभारी॥ सुब्दसला
कसमानलसोश्रतिरोषमईद्दगदोह
तिहारी॥ होतभएतवसुरसुधाधरजा
वकसुभसुधारोधाई॥ २७॥ दोहा
केसवविस्वामित्रकोरोषमईद्दगजा
न॥ संध्याजोत्रैलोककेमेकिहिनउपा
सीश्रांन॥ २८॥ जनकतरक॥ येसुतके
नकेसोभहिश्राजे॥ सुंदरस्यामलगोर
विराजै॥ जोंनतुहोजियमेदरदोउ॥ के
कमलाविमलापतिकोउ॥ २९॥ वि
स्वामित्र॥ सुंदरसांमसुरामहिजानौ
गोरसुलक्षमननामवषानौ॥ श्रा
सिषदेहइन्हेंसबकोउ॥ सूरजकेकुल
मंडनदोउ॥ ३०॥ दोहा॥ नृपमनिदस
रथनपतकेप्रगटेचारकुमार॥ राम
भरथलछिमनललितअरुसत्रुघु
न्नउदार॥ ३१॥ दंडक॥ दांननकेसी

लेपरदांनकेप्रहारीदिनदांनवातन्त्र तिदेषिएसुभाइके॥दीपहंकेदीपन्त्र वनीपतिकेन्त्रवनीपप्रयुसमृकेसोदा सदासदुजगाइके॥ ऋांनदकेकंदसु रपालकेसवालकेरएपरदारप्रियसाधु मनोवचकाइके॥देहधारीधर्मसेवि देहिराजजूसेराजराजनकुमारन्त्र सेदसरथराइके॥३१॥सोरठा॥जब तेवैठेराज॥राजादसरथभूंमिमें॥सु षसोएसुरराज॥ताहिनैतेतिहिलोक मे॥३३॥स्वागता॥राजराजदसरथ जनेजू॥रांमचंद्रभुवचंद्रवनेजू॥ त्योविदेहतुमहंन्त्रसीता॥ज्योच कोरतनयासुभगीता॥३४॥विस्वामि त्रतारक॥रघुनाथसरासनचाहतदे ष्यो॥न्त्रतिदुष्करराजसमाजनिले षो॥जनक॥रिषिहैवहमंदिरमां

रा॰ २८

झमगाऊ॥गहिलावनिकोजनुप्थ
वुलाऊ॥३५॥विस्वामित्रतोटक॥ञ्च
वलोगकहाकरिवोञ्चपार॥रिषिराज
कहीयहवारवार॥इनराजकुमारन
देहुजांन॥सवजांनतुहैवलकेविधां
न३६॥जनकदंडक॥वजतेकठोरके
लासतेविसालकालदंडतेकरालस
वकालकालगावही॥कैसवत्रैलोक
केविलोकहारेदेवसवछोडिचंद्रचू
डएककोरकोचढावही॥पनगप्रच
उपतिप्रभुसीपनिचपीनपर्वतार
पर्वतप्रमानमानपावहीविनाइ
कञ्चनगहेपेञ्चावेनपिनाकुताहि
कोमलकलपानरामकैसैल्यावहीं
ही॥३७॥विस्वामित्र॥दोहा॥रामह
त्योमारीचुजिहञ्चस्तारिकासुवा
हु॥लक्षमनकोयहधनषुदेतुम

जु

म

२८

पिनाककोजाहु॥३८॥जनकव्रतभंग॥
सिगरेनरनाहकव्वसुरविनाइकरक्ष
सपतिहियहारगए॥ काहूंनउठायो
थलुनछुडायोटरयोनटारोभीतभ
ए॥सोनिराजकुमारनिव्रतिसुकमा
रनिलेव्वाएरिषपैजकेरे॥ व्रतभंग
हमारभैएतुम्होरेरिषितपतेजन
जानिपरै॥३९॥विस्वामित्र॥नाम
ह॥सुनिरामचंद्रकुमार॥धनुव्वान
योरिहिवार॥पुनिवेगिताहिचढा
उ जसुलोकलोकपठाउ॥४०॥ज
नक॥दोहा॥रिषहिदेषिहरषेहि
येरामदेषकुम्हिलाइ॥ धनषुदे
षिरपेमहांचिंताचित्तडुलाइ॥४१॥
॥प्रतहारिनी॥स्वागता॥रामचंद्र
कटसोंपटवाध्यो॥लीलाहीहरि
कोधनुसाध्यो॥नेकुनाहिकरप

ल्लवसोछै॥ फूलमूलसमदूकक
चौहे॥४४॥ सवैया॥ उन्निमणाथजेव
धनुश्रीरघुनाथजूहाथकेलीनो॥
निगुनैतेगनवंतभयोसुषकेसवसं
तञ्चनंतनदीनो॥ ञ्चोजहीतव
हीकियोसंजुततिक्षकटाक्षनराचु
नवीनो॥ राजकुमारिनिहारिसनेह
सोसंभुकोसाचोसरासनुकीनो॥४३॥
सतानंद उक॥ प्रथमटंकारझुकिआ
रसंसारमददउकोटंडरह्योमडिनव
षंडको॥ चालिअचलाअचलचा
लिदिगपालवलपालरिविराज
केवचनपरचंडको॥ सोधुदेईसवो
धुजगदीसकोकोधुउपजाइभगु
नंदवलिवंडको॥ वाधिवरस्वर्गको
साधुअपवर्गकोधनभंगकोसव्द
गएभेदिव्रह्मांडको॥४४॥ जनकदो

हो॥सतानंदआनंदमतितुमजुहते
उनिसाथ॥बरजेनकाहजवधनसु
ऐचौहोरघुनाथ॥४५॥सतानंदतो
मर॥सुनराजराजविदेह॥जवहोगयौ
उहिगेह॥कलुमैनजानीवात॥कव
टोरियोधनुतात॥४५॥प्रतहारिनीदो
हा॥सीताजूरघुनाथकोअमलक
मलकीमाल॥पहिराईजनुसवनि
कीहृदयावलिभुवपाल॥४६॥चि
त्रपद॥सीयजहीपहिराई॥रामहि
मालसुहाई॥दुंदुभीदेववजाए॥फू
लनहीवरषाए॥४७॥इतिश्रीमत्सक
ललोकलोचनचकोरचिंतामनि।
श्रीरामचंद्रचंद्रकायांधनषुभंगव
र्ननंनामपंचमप्रकास॥५॥दोहा॥
छटयेमैयहवरनवोहहैअतिउन
साह॥नरनारीआनंदअतिसीता

रा०
२६
समदो

रांमविवाह॥१॥दोधक॥विनतीरिषि
राजकीचित्तधरौ॥चक्रभैयनकेअ
बमाहकरौ॥अववोलहुवेगवरात
अवै॥विटियांसुषपाइसवै॥२॥दो
हा॥पठईतवेहीलगुनलिषअव
धपुरीसुववात॥राजादसरथसुनत
सजिचांलोचलीवरात॥३॥मोहन
आएदसरथ्थवरातसजै॥दिगपाल
गयंदनदेषिलजे॥चामोदलदल
हचारवने॥मोहेसुरयारनकोनुगने
४॥तारक॥वनिचारविरानचहूंदि
सिआई॥नृपचारिवमंअगिवान
पठाई॥जनुसागरकोसरितापगधा
रे॥तिनकेमिलवेकहवाहुपसारे॥
५॥मरहटा॥दसरथ्थसघातीसक
लवरातीवनिवनिमंडिफमाञ
गए॥आकामविलासीप्रभाप्रका

२६

सीजलजगुछजनुनषतनए॥ चत्र
निसुंदरनारीसवसुषकारीमंगलगा
रीदैनलगी॥ वाजेवहुवाजेजनुघन
गाजेजहातहांसवसोभजगी॥ दोहा
रामचंद्रसीतावनेसोहतिहैतिह
ठौर॥ सुरवनेमयमनिमयषचित
सुभसुंदरसिरमोर॥ ७॥ छपय॥ वैठे
मागधसूतविविधिविधोधरचार
नकेसवदोसप्रसिध्यसिध्यसव
असुभनिवारन॥ भरद्वाजजावा
लअत्रगोतमकस्पवमुनि॥ विस्वा
मित्रपवित्रचित्रमतिवांमदेवमु
नि॥ सवजगतप्रतिष्ठितनिष्टम
तितहवसिष्टपूजतकलस॥ सता
नंदमिलउच्चरतेसाषोचारसवेस
रस॥ च॥ अनकूल॥ पावकपूजोसम
धसुधारी॥ आहूतिदीनीसवसुष

कारी॥ दैतवकन्यावहुधनुदीनो॥
भावरपारिजगतजसलीनो॥ ९॥
स्वागता॥ राजपुत्रिकनिस्योछवि
छाए॥ राजराजसवडेरहिआए॥ हो
रखीरगजवोलुटाए॥ सुंदरीनवहु
मंगलगाए॥ १०॥ सोरठा॥ वासर
चौथजाम॥ सतानंद आगेदिये
दसरथनपकेधाम॥ आएसकल
विदेहवनि॥ ११॥ भुजंगप्रयात॥ क
हूंसाभनेदुंभीदीहवाजे॥ कहूंभी
मभंकारकरनालसाजे॥ कहूंसुंद
रिवेनवीनावजावे॥ कहूंकिन्नरी
किन्नरीलेसुगावे॥ १२॥ कहूंनत
कारीनचेसोभसाजे॥ कहूंभांड
वोलेवोलेकहूमल्लगाजे॥ कहूं
भाटभासोकरैमानुपावे॥ कहूंलो
लिनीवेडनीतगावे॥ कहूंवेलभे

जै य गी

साभिरैभीमभार॥ कहूं छैन छैनी
नकेहेतकारे॥ कहूंवांकेवांके कहूं
मेषमरे॥ कहूंमत्तदंतीलरैलोह
पूरे॥ २४ दोहा॥ आगेंहूं दसरथ
लियभूपति आवत देष॥ राजराज
मिलवै उभै सो ब्रह्म ब्रह्मरिषि लेष॥
२५॥ सतानंदसोभन॥ सुनहु भरहु
जवसिष्ठ जा वालिविस्वा मित्र
सवे हा तुमव ब्रह्मरिषि सिंसा सुद्ध
चरित्रिकानी जु तुम पाव सकौ क
हिएक अंसन जाइ॥ स्वादु कहवे
कौसमर्थ्यु नगंग ज्यौ गहषाइ॥ २६॥
सुषद॥ ज्यौ अति प्यासो मगमें पा
वैगंगाजलु॥ प्यासन एक बुझा
इ बुझै ते तापवलु॥ त्यौ तुमते है
मकौ न भयो अब वे एकु सुषु॥ पूजे
मन के काम जु देष्यौ राम मुषु॥ २७॥

जनकसवैया॥ सिद्धिसमाधिधैरे अजहूनकहूजगजोगिनदेषनपा ई॥ रुद्रकेचित्तसमद्रवसेतिनश्रंहूहूपैवरनीनहिजाई॥ रंगुनरूपनरेषविसेषनआदिनअंतसुवेदसगाई॥ केसवगाधिकेनंदहमैपहजोतिसुमूरतिवंतदिषाई॥ १८॥ तारक॥ जिनकेपुरषाभुवगंगहिल्याए॥ नगरीसवस्वर्गसदेहसिधाए॥ जिनकेसुतपाहनतेत्रियकीनी॥ हरकेधनभंगभमेपुरलीनी॥ १९॥ जिनआपुअनेगअदेवसघारे॥ सवकालपुरीकरषवारे॥ जिनिकीमहिमामहिअंतुनपायो॥ हमकोवपुराजसुवेदनगायो॥ विनतीकजेजनुजोजिपलेषो॥ दुषदेषोज्योकालिन्योआजुहीदे

षो॥ यहजांनहियेंठिठईमुषभा
षी हमहेंचरनोंदिककेअभिला
षी॥२१॥तामरस॥वशिषिराजवि
नोकरलीनो॥सुनिसवकोकुरु
नामनुभीनो॥दसरथराजयहें।
जियजानी॥यहवहएकभईराज
धानी॥२२॥दोहा॥हमकोतुमसे
नपनकीदासीदुल्लभराज पुनि
तुमदीनीकन्नकात्रभुवनकोसि
रताज॥२३॥भरद्वाज॥तामरस॥
सुषदुषआदिसवेतुमजीते॥सु
रनरकोवपुरावलरीते॥कुलमह
होइवरोलघुकोई॥प्रतिपुरषांन
वडोसुवडोई॥२४॥वसिष्टसवेया॥
एकसषीइहिलोकविलोकिये
हेंउहिलोकनिरूपणधारी॥एक
इहिंदुषदेषतकेसवहोतउहां

रा

ए॰
२९

सुरलोकविहारी॥ एकइहांऊंउहां
अतिदीनसुदेतदुहूदिसिकेजन
गारी॥ एकहीभांतसदाअवलोक
निहैप्रभुतामिथलेसनिहारी॥२५
जावालसवैया॥ जोमननिमेंअति
जोतिहतीअरुओएकसरूपवितै
छबिछारी॥ चंदहिवंदतंतेसवके
सवसंभुतेवंदकनाअतिपारी॥भा
गीरथीहतियेभुवपावनतेअति पावन
पावनताई॥ त्योनिमिवंससुवंडाई
हतोभईसीयसजोगवडीयेवडा
ई॥२६॥विस्वामित्रमालती॥गु
नगनमनिमाला॥ चित्तचातुजु
माला॥ जनकसुषदगीता॥ पुत्रि
ता काषाईसी॥२७॥ अषिलभुवन
भर्त्ता॥ व्रह्मरुद्रादिकर्त्ता॥ थिरच
रअभिरामी॥ किपजामातनामी॥

२५ दोहा॥ पूजि राजरिषि वंश महारिषि
दुंदुभी दीह वजाइ॥ जनक कनक कंम
दिए राए ग्रसमेत सुष पाइ॥ २६॥ स
मानिक॥ आसमुद्र के छितीस आ
एदेव के गने॥ राज भौन भोज का स
वे जने नगए वने॥ भांति भांति अन
पान विंजना दिजे वही देति गारि ना
रि पारि भूरि भूरि भे वही॥ ३०॥ हरिगी
तकागारि॥ अवगारि तुम कहदहि
वढ़ कहि सुनहुं दूलह राम जू॥ तु
व वापु पित्र पादारि सुनि जनु कीए
कहतु कवा मजू॥ कोगने जितने
पुष कीने कहत इस समाज॥ सुनि
कुवार मनु दे वानिता के कहो सव
मोहा जू॥ ३१॥ वहुरूप सौन व जा
वना अनति रत्नमय वपुमानिये॥
पुनि वस्त्र रत्ना करन के स्मात न चि

रा०
३०

त्रचंचलजानियो ॥ सुभसेषफनिम
निमालपलिकापरतिपदतिप्रवंध
जू ॥ कासीसपक्षिमपाइपूरवगात
सहजसुगंधजू ॥ ३१ ॥ वहहोहरि
हिरनाक्षदैयतदेषसुदरदेहिसो ॥
वलवीरजगपवराहतिनलइछीन
सहजसनेहसो ॥ ह्वैगईविह्वल
श्रंगप्रयुफिरिसजेसकलसिंगारज ॥
पुनिकछुकदिनवसभइतिनकै
दिप्रसवससाज ॥ ३२ ॥ वहगयोप्र
भुपालोककीनोहितेकासिवना
थजू ॥ तिहभांतिभांतनभोगईभ
मिपलुनछाडैसाथजू ॥ वृहच्य
सुध्यौनरसिघमासोलइप्राव
लछिडाइकै ॥ लैदइहारहरचंदरा
जहिवहुतजिसषपाइकै ॥ ३४
हरिचंदविस्वामित्रकोदईइष्ट

३०

तनमनमानिकै॥ तिहिवरौवलिव
लवडवरहीविप्रतपसीजानकै॥ व
लिवांधछलवलंइवावनदइ[illegible]
द्वहिच्यांनिकै॥ इंद्रतजपतिकस्यौ
अर्जुनसहसकरकौजानिकै॥ ३५॥
तवतासुमदछवछकौअर्जुनह।
त्योरिषिजमदग्निजू॥ परसरामत
वसकुलजायोप्रवलवलकौअ्र
ग्निजू॥ परसरामतवसकुलजायौ
तिहवैतवतिनिसकलक्षत्रिय
मारिमोविनाइकै॥ इकईसवे
रजुदईविप्रनहधिजलअन्हवा
इकै॥ ३६॥ वहरावैरपितुकरियप
तिनीतजिपविप्रनिप्थूकिकै॥ अर
कहनहेअवरहेताकहएउनादि
कटकिकेपहिलाजमरियततता
हितुमसोभयोनातोनाथजू॥ अ्र

ए॰
३१

वपेरस्युषनिरषेनजेरात्मोंराषियो रघुनाथजू॥३७॥सोरठा॥गातभये सवभूप॥वनिवनिमंडिफमेंगपे जहंतेवहुरूप॥सवईविधिस सोभिजे॥३८॥समानका॥रचीवि चित्रवासरोनिपंभराजिकाभली॥ जहांतहांविछांवनेघनेवनेथली थली॥वितानसेतस्यामपीतला लनीलकारंग॥मनोकुहूंदिसान केसमांनविंविसेजगे॥३९॥पधि टिका॥गजमोतिनकीअवलीअ पारकलसनऊपरऊरमतिसुढार॥ पूरितसुचिजनुकुचिहचिरठाइ जहंतहंअकासगंगाउदार॥४०॥ गजदंतनिकीअवलीसुवेस॥त हकुसमराजराजतिसुदेस॥सुभ नपकुमारिकांतिगरा॥जनुदे

का

विनकेपुष्पकविमां ॥ ४१ ॥ नामर
स ॥ इतउतसुदासोभनडोले ॥ अर्थ
अनेकनिवोलनिवोले ॥ सुषमुष
मंडितचित्तनमोहे ॥ मनहुअन
ककलानिधिसोहै ॥ ४२ ॥ भकुटि
प्रकासविलासनिदेषे ॥ धनुषम
नोजमनोमयलेषे ॥ चर्चितहांसु
चंद्रिकनिजानो सुषमुषवासुनि
वासितमानो ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ अम
लकपोलेआरसीवाहेचंपकमा
र ॥ अवलोकनेविलोकिएमृग
मदमयघनसार ॥ ४४ ॥ गतिकोभा
रुमहावरोअंगअसुकेभार ॥ केस
वनषसिषसोभिजेसोभाहोअं
गार ॥ ४५ ॥ सवेया ॥ वैठीइजेरप
लिकापरएामसियासवकोमनु
मोहे ॥ जोतिसमूहरहेमठिकेसु

न

न त

ज

ऐभूलिरहेवपुराणकेहै॥केसचतीनहलोकनिकेअवलोकिकैयथाउपमाकहहौहै॥सोमनसाराजमंडिलसोहमनौकमलाकमलापतिसोहै॥दोहा॥गंगाजलकीपागसिरसोहतश्रीरघुनाथ॥सिवसिरगंगाजलकिधौचंद्रचंद्रिकासाथ॥४७॥तामरस॥कचभकुटिकुटिलसुवेस॥अतिअमिलसुमिलसुदेसविधिलिषेसोधिसुतंत्र॥जनुजयाजयकेमंत्र॥४८॥दोहा॥जदपिभृकुटिरघुनाथकीकुटिलदेषिजतुजोति॥तदपिसुराअसुरानरनकीनिरषिसुद्धगतिहोति॥४९॥श्रवनमकराकुंडललसतमुषसुषमाएकत्र॥ससिसमीपसोभितमनौश्रवननिमकरनछत्र॥५०॥

॥पधिटिका॥ अतिवदनसोभसरसी
सुंएण॥सुभकमलनयननासानएण
जगजुवतिचितविभ्रमिविलास॥ति
ह्रीभमाभ्रमतुसन्नूपश्चास॥५१॥नि
सपालिका॥सोभिजतुदंतह्रचिसु
भउद्योनिसे॥सत्यअनुनूपजनन
पकुचषानिये॥ओठन्नुचिरषसवि
सेषसहहेपे॥सोधिजनुईससुभ
लक्षनसवैदय॥५२॥दोहा॥ग्रीवा
श्रीरघुनाथकीलसतिकंवुकेव
ष॥साधुमनोवचकाइकीमानो
लिषीत्रिरेष॥५३॥सुंदरी॥सोभ
नदीरघवाहुविराजत॥देवसिहा
तअदेवतिलाजनहेहितकानि
कीधुजमानो॥वेरिनिकोअहिरा
जवषानो॥५४॥पोउमेभगुल्ला
नवषानों॥श्रीकरकोसरसीरुह

मानौ॥ सोभित है उर मै मनि यौ ज
नु॥ जोंनु की के अनुराग एपौ मनु॥ ५
५॥ दोहा॥ सोहति पनएगएम उदे
षति तिनकौ भाग॥ आइ गयो उप
मनौ अंतरकौ अनुराग॥ ५६॥ सुंद
रि॥ मोतिनकी दुलरी देस॥ जनु बे
दनके आपरगु वस॥ गजमोतिन
की माला विसाल॥ मन मानहु सं
तनिको साल॥ ५७॥ विसेषक॥ ।
स्यांम दुरै औ षगलाल लसै दुति पे
तलकी॥ मानहु सेवति जो त्रिगिर
जमुना जलकी॥ पाट जरी अंत षे
तमुहीनकी अवली॥ देवनदी क
न सेवति मानहु भांति भली॥ ५८॥
॥दोहा॥ क्यौं वरनौ रघुनाथ कु
व केसव बुद्धि अनुसार॥ जाकी सो
भा सोभजे सोभा सब संसार॥ ५९॥

सवैया॥ कोहै दमयंती दमती रति राति दिन होहि न छबीली छबि छिन जो सिंगारिये॥ केसव लजात जलजात वेद वो पै जात जात रूप वापुरे विरूप से निहारिये॥ मदन निरूपम निरूपम निरूप भयो चंद बहुरूप अनरूप कवि चारिये॥ सीता जू के रूप पर देवता कुरूप को है रूप ही के रूपक तो वारि वारि डारिए॥ ६५॥ गीतका॥ जहँ सोभिजै सषि सुंदरी जनु दामिनी दुति मंडि कै॥ घनस्याम को जनु सेवहीं जड़ मेघ नि छंडि कै॥ इक अंग चर्चित चारु चंदन चंद्रिका तजि चंद को॥ जनु राहु के भय सेवहीं रघुनाथ आनंदकंद को॥ ६६॥ मुष ए कहै न तलोल लोचन लोक लोचन को हरे॥ जनु जानु की सगसो

री

उरि

चा

वों ष

भिजैसुमलाजदेहनिकौधेरे ॥ तहऐ
कफूलनिकेविभूषनएकैमोतिन
केकिये ॥ जनुक्षीरसागरदेवतानन
श्रीकेक्षीटनिक्षिये ॥ ८७ ॥ सोरठा ॥ प
हिरवसन[illegible]सुरंग ॥ पावककुंतस्वा
हामनो ॥ सहजसुगंधितअंग ॥ मान
हुंदेवीमलयकी ॥ ८८ ॥ चांमर ॥ मत्त
दंतएजसाजिवाजराजएजिकै ॥ हे
महाहेमुक्तिचीरवाहसाजिके ॥
विषवांहनीअसेषवस्तुसोधिसो
धियो ॥ दाइजोविदेहएजभांतिभां
तिकोदियो ॥ ८९ ॥ वस्त्रभोनस्योंवि
तानआसनेविछावने ॥ अस्त्रस
स्त्रअंगत्रानभाजनादिकौगने ॥ दा
सिदासबासिबासरामपाटकेकि
यो ॥ दाइजोविदेहराजभांतिभां
तिकोदियो ॥ ९० ॥ दोहा ॥ जराजकएजपहिं

सो

राइयैराजादसरथसाथ॥ क्षत्रचो
राजवाजदेचासमुद्रछितनाथ॥ द
द॥ निसपालिका॥ दानदियराइद
सरथ्यसुषपाइके॥ वोलिरिषिंद्र
हरिषितजनिवुलाइके॥ नोषि
जाचकसकलदादुलमपूरसे॥ मे
घजिमिवर्षिराजपयपूरसे॥ द७॥
॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचन
चकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचं
द्रिकायांसीताजूविवाहिवर्ननंना
मषष्ठमप्रकास॥ ६॥ दोहा॥ यहसा
तैप्रप्रकासमेकेसवदाससुजां
न॥ परसरामश्रीरामसोंकरहेवा
दवषांन॥ १॥ विस्वामित्रविदाभ
येजनकफिरिपहुचाइ॥ मिलेआ
गिलीफौजकोंपरसरामअकुला
इ॥ २॥ चंचरी॥ मत्तदंतिअमत्तह्वै

ज
ष

रा०
३५

गएदेषिदेषनगर्ज्जही॥ ठौरठौरसुद
सकेसवदंदभीननहीवज्जही॥ को
टिकैतनत्रांनएकंनाविषनसज्जही॥
उग्गिहथ्यारसूरनजीवलेलैभज्जही॥
३॥ दोहा॥ वांमदेवरिषिसोकहोपर
सरामनधीर॥ महांदेवरिषिकोधनु
षु[illegible]किहिदोप्योवलवीर॥४॥ वांम
देव॥ महांदेवकोधनषुसुनपरसरां
मरिषराज॥ तोप्योरांमहकहतहोस
मझ्योरावनराज॥५॥ परसरांम॥ अति
कोमलनपसुननिकीरावादनी
अपार॥ अवकठोरदसकंठकेकाट
हुकंठकुठार॥६॥ सवैया॥ वांधिकेवां
धौजुवालवलीपलिनापरलेसु
तकोहितगौरे॥ हैहयराजलिमोग
हिकेसवक्राप्राहोछुद्रजुछिद्रनि
ओठे॥ वाहिरकाढदियोवलदासि

३५

नआपिसोजुपतालकीहोटै॥तो
कौकुठारवडाइकहाकहतोदसकं
ठकेकंठनिकाठे॥७॥सोरठा॥जहँप
है अतिदीन॥मोहितथापिसुमा
रैन॥गुरुअपराधहिलीनकेसवके
सिछेदियें॥८॥चंद्रकला॥वरवांनसि
षीनअसेषसमुद्रहिसोषिसषासु
षहीनरहिो॥पुनिलंकहिऔरटिके
लंकिनकेफिरिपंककनंकहिकीभ
रिहो॥भुजिकेरिषसषासमसेदु
षदोरषदेवनकेहरिहो॥सितकं
ठकेकंठनिकोकठलादसकंठकेकं
ठनिकोकरिहो॥९॥संजुता॥परसरां
म॥यहकौनकोदेषिये॥वांमदेवा॥
यहरांमसोप्रभुलेषिये॥परसराम
कहिकोनुरांमनजानिये॥वांमदेव
सरतारिकाजिहितारिये॥१०॥पर

दल

सरांम॥त्रभंगी॥नारिकामं॥धारीत्रै
पुनविचारीताहवडाईकोहहैनै॥वां
मदेव॥मारीचुहतौसगप्रबलसकल
षलञ्चरसुबाहुकाहूनगनैं॥कर
कूतरषवारीगुरसुषकारीगौतम
कीत्रियसुधिकरी॥जिनरघुकुलं
मंडौहरधनषंडौसियासवयंबरमां
अवरी॥११॥परसरांम॥दोहा॥ह
रहूंहांनोंदंडहै धनषुचढावनक
त॥देषहमहिमाकालकीकीनौं
नासिसनष॥१२॥सवैया॥वोरो
सैवैरघुवंसकुठारकीधारमेवार
नवाजसरथ्थहि॥वांनकीवाइउ
डाइकैलक्ष्मनलक्षिकरौञ्चरिहां
समरथ्थहि॥रांमहिवांमसमेत
पठैवनुकोपकेभारनिभूंजोभरथ्य
हि॥जोधनुहाथलियौरघुनाथ

तौआजुजनुनाथकौदसरथ्यहि॥
३॥सोरठा॥रांमदेषरघुनाथ॥रथतें
उतरेवेगदै॥गहेभरथकोहाथ॥आ
वतरांमविलोकिकै॥१४॥दंडक॥अ
मलसजलघनस्यांमवपुकेसोदास
चंदहूतेचारुमुषसुषमाकौवासुहै॥
कोमलकमलदलदीरघविलोचन
नि॥सोदरसमानरूपन्यारेन्यारेना
मुहै॥वालकविलोकिजनुपूरनपुरु
षगुनमेरौमनमोहिजनुऐसोए
कजामुहै॥वैसमांनिवांमदेवकौ
धनषुत्पोत्सोइनिजांनतुहैंवीस
विसौरांमवेषकांमुहै॥१५॥भरथ
गीतकौ॥कुसमुद्रिकासमधेंस्रुवा
कुसकोकमंडलकौलिये॥कटि
मूलसर्बननतर्कसीभृगुलातसी
दरसैहिये॥धनुवांनुतिक्ष्नकुठार

ए॰
३८

केसवमेषल्लामगचर्मसो॥रघुवीर
कोपहदेषिरसवीरसातुकधर्मसे
॥१६॥श्रीरामनराज॥प्रचंडहेहेया
दिराजदअमाननमानिसे॥अखंडक्ष
तिलयभूमिदीयमानिजानिसे॥रि
वदेवजेअभीतरुसमानलेषिसे
अमेयतेजगर्भजुन्नभार्गवेसदेषि
से॥१७॥तोमर॥सहभारपल्लाछिम
नराम॥वहकिसेआनिप्रनाम॥भृ
गुनंदआसिषदीन॥रनेहोहुअज
मप्रवीन॥१८॥पासराम सुनिराम
चंद्रकुमार॥ममवचनकातिउदा
र॥श्रीराम॥भृगुवंसअवतंस॥म
नवृत्तिहेकिहिअंस॥१९॥परसरा

के

ममंदिर॥तोरिसरासनसंकरकोसु
भसीयस्वयंबरमाझवरी॥तातेवढी
अभिमानुमहामनिमेरियोनेकु

नसंककरी॥सोअपराधअगाधिपरेअ
वकेयोंसुधरैतुमहींधोकहैं॥बांकु
टेटेउकुटारहिकेसबआपनेधा
मेकोपयुगहे॥२०॥श्रीरामकुंडरि
या॥टूटहिटूटनेहारनेरुवानहिदी
जतदोस॥सौअवहरकेधनुषको
हमसोकोजननेएसु॥हमसोको
जननेएसुकालगनिजानिनजा
ई॥होनहारह्वैरहैमिटैमेटीनमि
टाई॥होनहारह्वैरहैमोहमद
सबकोछूटै॥होहितिनूकाव
जवजतिनुकाह्वैटूटै॥२१॥प
रसरामसवैया॥केसवेहैहयरा
जकोमासुहलाहलकोरनिषा
ईलियोरे॥तोलगिमदमहीपन
केघनघोरपियोनसिराणोहिये
रे॥मैंऐकहीकरीकोपकरालजो

ए. चं.
३८

चाहत है वह काल जियौ ए ॥ जौ लौ
नहीं सुष जौ लौ हूं नेर षुवंस कौ औ
न सुधा न पियौ ए ॥ २२ ॥ मत्तगयंदी
वोलत कै सम गुप तिसु निजै सो कहि
जै तन मन वनि आवै ॥ आदि वडे हौ
वडपन राषौ ज्यौं सिगरे जग जन सु
ष पावै ॥ चंदन हीं कौ आनि न न घर कै
आगि डढै यह सुनि सवु की जे ॥ हे ह
य मालन पति सषा ए यह जसु लीजै
न जुग जीजै ॥ २३ ॥ परसराम नराज ॥
भली कही भिरघ्थ नेउ टाइ आगि
अंग नै ॥ चढाउ चौंपि चापु आपु वां
न लै निषंग नै ॥ प्रभाव आप नौ दि
षाउ वाल भाउ छांडि कै ॥ रिझाउ रा
ज पुत्र मोहि राम लै छिडाइ कै ॥ २४ ॥
॥ सोरठा ॥ लिये चापु जव हाथ ॥ ती
न हू भैय न ए संके ॥ वरजे नव षुना

३८

य ॥ तुम बालक जानौ कहा ॥ २५ ॥ श्री
राम दोहा ॥ भगवंतनि सो नहि जी
तिये कबहूं न कीजे सक्ति ॥ जीति ए
एक हि बानते कीनै केवल भक्ति ॥ २
६ ॥ गीतिका ॥ जब हनौ हैहयराज इ
न बिन छत्र छिति मंडल करौ ॥ गिरि बि
धष न्मुष जीति तारक नंद को जब
ज्यों हरौ ॥ सुन मैं न जायो एम सो इ
ह कहौ पर्वे नंदनी ॥ बहु है नु कात्रि
य धन धनी मे भई जग वंदनी ॥ २
७ ॥ परसराम नाराच ॥ सुनि एम सो
ल समुद्र ॥ तुव बंध है अति छुद्र ॥ म
म बाड़वानल कोप ॥ अब के माचा
हत लोप ॥ २८ ॥ सत्रघन दोधक ॥ हो
भयु नंद वली जग माही ॥ राम बिदा
क जे घर जाही ॥ है तुम सो फिरि
जुद्ध हि मांडो ॥ छत्रिय बंस को बैर लै

छांडो ॥ २९ ॥ तोटक ॥ यह वात सुनी भ
गुनाथ जवे ॥ कहो हो एमहि लेष र जाऊ
अवे ॥ इन ते जग जीव न जो वचि हो ॥ न
हि तो तुम सो फिर के रचि हो ॥ ३० ॥ दोहा
निज अपराधी क्यों हनो गुर अपरा
धी छांड ॥ तो ते कठिन कुठार अब
एमहि सो रन मांड ॥ ३१ ॥ सवैया
भूतल के सब भूपनि को मिर भोज
न तो बक भांति लियो ही ॥ मोहू से
नारि कि निर नमे मदु पस्मा वरि यो
न सिरायो हियो ही ॥ वोरयो डार
मह के सब सो पल मै दुहि पान लि
यो ही ॥ एम तुम्हा री कंठ को श्रो
नित पानी को चो है कुठार पियो ही
॥ ३२ ॥ लछमन तोटक ॥ जिनको
जु अनुग्रह वृद्धि करे ॥ तिनको के
से निग्रह चित्त धरे ॥ जिनके जग

अछतसोसधरे॥तिनके ननसछ
तकौनकरे॥ ३३॥श्रीएमसवैया॥
कंछकुठारपरै अवहास्तकिफूल
किसोकुअसोकसमूएरे॥के चिन
सारीचकिचितातनुचंदनचिन्न
केपावकपूरे॥लोकमेंलोकवडे
अपलोकुकिकेसवदासजुहोउ
सुहोऊ॥विप्रनकेकुलकोभ्रगुनं
दनसूरनसूरजकेकुलकोऊ॥३
४॥परसरामविसेषक॥हाथ
धरेहथियारसबैतुमसोभन
हो॥मारनहारहिदेषकहाजिय
कोभनहो॥छत्रियकेकुलहोकै
ऊवेननदीनचवौ॥कोटिकोउप
चारनेकेसकूमोचुवचो॥३५॥ल
छमन॥क्षत्रियहगुगलोगनके
प्रनपालकरे॥भूलिहुतोतिनके

गुनयोगुनजीनधरे॥ त्यौंहमपैगुर
दोषुनहोइवॆपैकरती॥ त्यौंतुमहो
अपनीजननीसुषपाइहती॥ ३६
॥परसराम॥ लछिमनकेपुरिषांनि
किषेपुरिषारघ्यसोनकह्योपर
री॥ वेषुवनाइकियौंवनितानिको
देषनैकसवहोहरी॥ क्रूरकुठार
निहारतजेफलताकोयहैजुहियो
जरी॥ आजुतेकेसरवताकौमहाथ
कुक्षत्रिनकोजुदयाकरी॥ ३७॥
गीतका॥ नवयैकविंसनिवेरमेवि
नछत्रिकीप्रथिवीरची॥ वहुकुंडिओ
निनसोभरेपितनतपैमारिक्रियासु
ची॥ उवीजुक्षत्रियछद्रभूतलसो
धिसोधिसघारहो॥ अववालवृ
द्धनज्वानछाडोंधर्मनिर्दयपाल
हो॥ ३८॥ श्रीरामदोहा॥ भगुकु

लकमलदिनेसतुनिजोतिसकलसंसा
र॥ केयोचलिहैहरिनितिसुनसिरतापते
हौनिजुभार॥ ७९॥ पदमेरामसोरठा॥
रामसवंधसम्हार॥ कोउतुहैसमप्रां
नहर॥ देहकहत्यारनउर॥ हायसमे
ननिवेगदे॥ ८०॥ श्रीरामपद्धिडिका
सुनिसकललोकगुरजामदग्नि॥ त
विसेषनिकोजुअग्नि॥ सविसेषके
ऽसहिहो-अंवंश॥ हरयनुंकरोजिहिवं
उवंस॥ ८१॥ सवैया॥ वानरमारिनि
केननआनउपायविचारविरंचिरचे
है॥ गोकुलग्राम्हननारिनिपुंसकके
जगदीसतुमाउभये है॥ रामकहाक
रिहोतिनकोतुमवालकेदेवअदेव
उहै॥ गाधिकोनंदनिहारोगुरुह
मेवारिविवेककियेउवोहै॥ ८२॥
छप्पय॥ मगनभयोहरिधनुषताल

तुमको अवसा लै॥ ब्रथाहाहि विधि
अष्टईस आसन तेचालै॥ सकल
लोकसंघरहि सेससिर नेथ रोरे॥
सप्तसिंध मिलि जाइ होइ न महीन
मभारै॥ अनि अमल जो लिनराप्र
नीक है कै सबबुधि जाइ बर॥ भगुंब
सकुठासंम्हा॥ अवको सरासन
जुक्रेसर॥ ४३॥ स्वागता॥ राम राम
जवको पकौ ऐजू॥ लोक लोक भय
भूपभयो जू॥ वंमदेव नव आपुन
आये॥ राम रोमदो ऊस मुआए॥ ४
४॥ दोहा॥ महादेव को देखि के टुहूं प
म सबसेष॥ कौने परम प्रनाम उनि
आसिष दिये असेष॥ ४५॥ चतुस्प
दी॥ भगुनंदन सुनियै मनिमै गुनि
ये षुनंदन निरदोसी॥ निजु ऐत्र
विकारी सबसुषकारी सबही विधि

संतोषी॥ एकै तुम दोऊ ओलेको
ऊ एकै नाम कहायो॥ आयु बल
पूरो चापु सुदृढ भंजन मन सुख पा
यो॥ ७८॥ पध्धरिका॥ तुम अमल
अनंत अनादि देव॥ नहि वेद बखा
नत सकल भेव॥ सब को समान न
हि बैर नेह॥ सब भक्तनि काजे धर
त देह॥ ७९॥ अब आपु नैन पेषहि
बानि विप्र॥ सब कहूं आगिले का
ज छिप्र॥ नव नारायन को धनुष जा
न॥ भृगुनाथ दियो रघुनाथ पानि
॥ ८०॥ तारक॥ नारायन को धनु बानु
लियो॥ ऋषि को हसि देव निमोद दि
यो॥ श्रीरामकहै अब काहहनौ
त्रैलोक कपो भयमानि घनौ॥ ८१
दिगदेव दहै वडवानल है॥ भुव कंपु
भयो गिरा जन ठहे॥ आकास अम

विमानछाये॥ हाहासवहीय ह्सवछन
प्रै॥ ५०॥ सस्विवदना॥ जगगुरुजागैयो
त्रभूखनमान्यो॥ममगतिमारो स
मपुविचारी॥ ५१॥ दोहा॥ विवधिकी
जैयोपुष्पसरगनिकोहनन-ग्रनंग
एमदेखजूम्यो कियोभगुपतिकोग
तिभंग॥ ५२॥ मरहटा॥ सुरपुरगलि
योनीसासनमानीभगुपतिकोसु
षभाये॥ ग्रासिषरसभीनेसबव
निदीने-ग्रबदसकंठहिमारो॥ ग्रति
ग्रमलभयेरविगगनिवटीडुवि
देवनिमंगलगाये॥सुरकुलसब
हरष्योपुष्पनिवरष्योदुंदभिटी
हवजाये॥ ५३॥ दोहा॥ सोवन
सोनानाथकोभगुदीनीहेनाल
भगुकुलपतिकीगतिहरीमनो
सुमितिविहवात्त॥ ५४॥ मधुभार॥

दसरथजगाइ॥ संभ्रममभगाइ॥ च
लेरामराइ॥ दुंदुभिवजाइ॥ ५५॥ स
वैया॥ नारिकानारिसुवाहुसंघारि
कै गौतमनारिकेपातिकटारे॥ चां
पुहसींहरकौहसिकैसवदेव-अ
दवहतेसवहारे॥ सीतहिब्याह-अ
नीतचहैगिरिगर्भचहैभगुनंदह
नारे॥ श्रीगुरुदसरथजकोधनुलैरघु
नंदनअवधिपुरीपगधारे॥ ५६॥ इ
तिश्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायां
रामपरसरामसंवादवननोनाम
सप्तमप्रकासः॥ ७०॥ दोहा॥ पह
-लेअठेप्रकासमेंअवधिपुरी-अ
तिभीर॥ राजादसरथब्याहकैगर
-अवैरघुवीर॥ १॥ सुमुषी॥ सव
नगरीचहुसोभभये॥ जहतहसं

र॰चं॰
४२

गलचारुरुठये॥वरनतहैकवराजसैनै
ननमनबुद्धिविवेकसेनै॥२॥मोटन
कु॥ऊंचेबडृबनेपनाकलसे॥मानो
पुरदीपनिसीठरसे॥टरीगनदेषन
आमवसे॥सोभेनिनकेसुभि-अच
लसे॥३॥दोहा॥कलमनलोनेको
टपरपैलेनतसिमुचकृतो॥-अमल
कमलपुरपरमनोचक्रीएकचित
चोर॥४॥कलहंस॥पुर-आठ-आठ
दरवारविराजेम॥जुन-आठ-आठसे
नावलसाजे॥रहेचारिचारिघरिको
परवानै॥घरजारहि-औरजब-आउ
जांनै॥५॥दोहा॥आठोरसकेसी
लगुनभाषोवषविचार॥-अवलो
कनैविलेनाकियेकेसवयेकहिवार
॥६॥कुसमविचित्रा॥-अतिसुभवी
पीरजपरहेर॥चदकनीपीसहप

नघैए।दुंदुंदिसिराजैसुवरनमये
कलनसविएजेमनिमयनये॥७॥नो
टक॥घघघघंटनकेरवएंजे।वि
चविचसंषजुआलरवाजे॥पटह
पषावअि-आवअसोहे॥मिलस
हनाइनकौमनुमोहे॥८॥हीरा॥
सुंदरिसबसुदसातिमंदिरपरयो
बनी॥मोहनगिरअगनपरमानहू
मननमोहनी॥भूषनगनभूषतनत
नभूरिचितनिचाहीदषतजनु
देषतननवांननयनकोरहीं॥९॥मु
द्रा॥संकरसित्लचढ़ीमनमोह
नि॥सिद्विनकीनतुयाजनुसोह
ति॥पषिनिऊपपषिनिमान
हु॥रूपनिऊपरदीपनिमांनहू॥
१०॥कीरतिसीजसंसंजुतसोहति
श्रीपतिमंदिरकीजनुमोहति॥उ

ए॰चं॰
४४

परमेरमेनोमनरेघन॥ अवनेलनता
जनुलोचनिलोचन॥ २१॥ विसेष
का॥ एकल्लियेकरदर्पनचंदनचि
त्रकरै॥ मोहूनिहैमनुमानकैचंद
निचंदुधरै॥ नैनविलासनअंबर
लालनिजोनजगी॥ मनहूंरागिनि
एजतिहैअनुरागगी॥ २२॥ नील
निचोलनिकोपहिरै इकचित्रहहै
मेघनिकीदुतिमानहुदामिनदे
हिधरै॥ पेकनिकेननसूक्षमसा
रिजराइजरी॥ मरकएवलिसोज
नुपसिनिदेदिहिधरी॥ २३॥ नीरक
वरषेकुसमाचलिरेकघनी॥ सु
भसोभतिकांमकलासीवनी॥ बर
षेफलफूलनिलाइककी॥ ज
नुहेतनहनीरनिनाइककी॥ २४॥
॥दोहा॥ भीरभैयेगजपरचढेमी

रघुनाथ विचार॥ जिन्हे देषिवात
त सेवेन गरनागरी नार॥ १५॥ तो
टक॥ तमपुंज मनो गहि भांनु लि
यो॥ गिरि अंजन ऊपर सोम बियो
किधो भास तुलो महि दानु धरै॥
किधो राजनु काम सिंगार करै॥ १६॥
॥ मरहठा॥ आनंद प्रकासी सब पु
रवासी करहि ते दौरादौर॥ आरती
उतारै सर्वस वारै अपनी अपनी
पौर॥ पढि मंत्र असेषनि करि अ
भिषेकनि आसिष देहि बिसेष॥
कुंकुम करपूरनि मृगमद पूरनि
बरषत बरषा बेष॥ १७॥ तोमर॥ इहि
विधि श्रीरघुनाथ॥ गहे भरथ
को हाथ॥ पूजत लोग अपार॥ ग
ये राजदरबार॥ १८॥ गये येकरी
वार॥ चांसो राजकुमार॥ सहित

वधूनिसनेह॥कौसिल्याकेगेह॥१९॥त्रभंगी॥बोजवधूथोजेतारनसा
जैसुनिसुरलाजेद्युभाजे॥नाचे
नवदूनारीसुवनसिगारैमनिमय
हारीसुषकारी॥बीनांनवजाबेगी
ननगावैमुननिरिआवैमनभीजै॥
भूषनपटदीजेसबरसभीजेदेष
नजीजेहसिलीजे॥२०॥सोरठा॥र
घुपतिपूननचंद॥देषिदेषसबसुष
बैठ॥दिनदूनेआनंद॥नारिनमैनि
हिपुरबैठ॥२१॥इतिश्रीमत्सकल
लोकलोकलोचनचकोरचिंताम
नश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांअजोध्या
प्रवेसोवनेनंनामअष्टमप्रकासअष्ट
मा॥दोहा॥नमयेपनपसीमामागिहै
कैकेदोवरदोहि॥भरथराजरघुनाथ
जूसबवनकोजाहि॥रामचंद्र

लछुमनसहितघराएषदसरथ्थ॥
विदाकरीननसारकौसंगसत्रुघन
भरथ्थे॥२॥तोटक॥दसरथ्थमहा
मनमोदरिहै॥तिनिबोलिवसिष्टसु
मंत्रलेहै॥दिनुएककहैसुभसोधि
रषो॥हमचाहतनएमहिराजदयो
॥३॥यहबातनभरथ्थकीमाइसुनी
यरदूबनएमहिबुधिगुनी॥तिहिमंदि
रमैनपसौविनैयौ॥वहदेहुदेहुतौहम
कौजुदयौ॥४॥नपबातनकहीहसिहे
रिहियौ॥वहमागिसुलोचनमेजु
रियौ॥नपतासुविसेषभरघलेह
वेषेवनचौदहएमहै॥५॥पधरिका
यहबातलगीउरवज्रतूल॥हियफ
टौमनहुजीरनदुकूल॥उठिचलेवि
पतिकौसुनतएम॥तजनातमातत्रि
यवंधयांम॥६॥हरिलीला॥छूटसेवे

रा॰वं॰
४६

सवनकेसुषरुचिविपास॥विद्याबि
नोदरागनगीतविधानवास॥ब्रह्मादि
अंतजनअनेकलोग॥भूलेविसेषि
सविसेषनिरागभोग॥७॥मोदक॥
गयेतवरामजहांनिजुमातु॥करीप्र
हवानसुहेघनजातु॥कक्षजिनजी
दुषपावहिमाइ॥सुदेहुअसीसमि
लोफिरआइ॥८॥कौसिल्यावाच॥
रहौचुपहेसुतक्योवनजाहु॥नदेषि
सकेतिनकेननदाहु॥लगीअवबा
पतुम्हारहिवाइ॥करीउलटीविधि
क्योकहिजाइ॥९॥रामब्रह्मरूपक॥
अंनुदेहिसीषदेहिराषिलेहिप्रान
जात॥राजबापुमोललेकैरैजुदोह
पोषगात॥दासुहोहितुत्रेरोहिसि
ष्यहोहिकोइमाहि॥सासनानमान
हीसुकाटजन्मनकेजाहि॥१०॥कौ

सिल्या हरनी॥ मो हि चल्लो वन संग
लिये॥ पुत्र तुम्हें हम टेषि जिये॥ प
ह औधि पुरी म हगाज परो॥ केअव
एअप र ष्यकेरे॥ ११॥ एमनाम ए॥ तु
म क्यो चल्लो वन आज॥ नितु सीस
एज निएज॥ जिय जांनि जे पति टे
व॥ कर सर्व भांवन सेव॥ १४॥ पति टे
हि जो अनि दुष्य॥ मन मांनि लीजे
सुष्य॥ सव जानि जे जु अमित्र॥ पति
जांनि के वल मित्र॥ १३॥ अम नगन
नित प्रनि पंथ ह चलिये॥ सुष दुष
को दल दलिये॥ तन मन दु सेव दु
पति को॥ तव लहि हो सु भगति को
॥ १६॥ स्वागता॥ जो गजा ग व्रत आ
दि जु कीजे॥ न्हांन गंन न दिन दांन
हि दीजे॥ धर्म कर्म सव निफल देवा॥
हो हि सु फल पति की सेवा॥ १५॥ ता

फल

तमानसुतसोदरजानौ॥ जेठदेवर
सवसंगवषानौ॥ पुत्रपौत्रसुतश्री
छविछाई॥ है विहीनभरताढुषदा
ई॥ २६॥ कुंडलिया॥ नारिनजहनआ
पनोसपनेहूभरतार॥ पंगुगुंगुबौरा
वधिरअंधअनाथअपार॥ अंध
अनाथअपारवृद्धबावनअति
रोगी॥ वालककुपढकुरूपसदाकुव
चनजडजोगी॥ कलहीकोढीकुरू
पसदाकुवचनजडजोगी॥ कलही
कोढीकूरचोरज्वारीविभचारी॥ अ
धमअभागीकुटिलकुपतिपति
तजेननारी॥ २७॥ स्वांगन॥ नारित
जैनमोभरताहि॥ ताकेसंगसहति
धनंजयप्राएहि॥ जोक्योहूकरता
एजिवावत॥ तोतिनकौयहवातत्रु
नावत॥ २८॥ निसिपालका॥ गा

नविनमांनविन हांसिविनजोवही
तम्ननहियाइजलसीतलनपीवही।
तेलनजिषेलनजपारनहिसावही
सीतलजलन्हाइनितउसवनजो
वही॥२९॥याइमधौएननहियाइयन
हीयौ॥कायमनवाचसवधमेक
रयोकै॥कछुउपवाससवइंद्रीइन
जीतही॥पुत्रसिषलीननजो ल
गि-अतीतही॥२०॥दोहा॥पतिहित
पितुपएननुतजोसतीसाषिदेदेव
लोकलोकपूजतभईतुलसीपति
कीसेव॥२१॥मनसांवाचाकर्मनांह
मसोछांडेनेह॥राजाकोविपदाप
रीतिनकीतुमसुधिलेहु॥२२॥पध्ध
डिका॥उठरामचंद्रलछिमनसमे
त॥तवगएजनकतनयानिकेत॥
मुनिराजपुत्रकायकवान॥हमवन

ए॰चं॰
४८
८न

पठऐहैनपतन्नान॥२७॥तुमजननिसे
वकोरहैधाम॥कैजाऊंञाजहीजन
कूधाम॥सुनिचंदवैंगजगमनियेन॥
जियरुचाहसुकीजैजलजनैन॥२८॥
॥श्रीसीताजू॥नराज॥नेहोहैनजो
ऊंजूविदेहधामकोञौवे॥कहीजुबात
मातसोसुञाजेमसुनीसवै॥लगेदु
षाहिमाभलीविपनमाझनारि
ये॥पियासञासनीरबीरजुथमेस
म्हारिये॥२५॥लक्ष्मनसुग्रिवछंदा॥
वनमहविकटविविधिदुषसुनिये॥
गिरगहवरमगञगमनिगुनिये॥क
हूंञरिसिंहविकिहनिनिसिचरहहे॥क
हूंदवदहनदुसहतनदहहे॥२६॥सी
ताजूदंडका॥केसोदासनीटभूषप्या
सउपवासत्रासदुषकोनिवासविष
मुषहूंगह्यौपरे॥वाह्कोवहनदिन

दवाकौ दहन वडी वाडवा अनल ज्वा
ल ज्वाल मे रहो परै ॥ जी लजन्म ज्ञा
न ज्ञो रज्जु छोर परि पून प्रगट पर
ताप कैयो कहो परै ॥ सहि हो तपन
ताप पनि के प्रताप रघुवीर कौ विर
ह वीर मो पैन सहो परै ॥ २७ ॥ श्रीरा
म विसेषका ॥ या मरहो तुम लछिम
न राजकी सेव करै ॥ मात निके सुनि
तान सु दीरघ दुष है ॥ आइ भरथ्य
कै है धौ कहा सव भ्रात गुनौ ॥ जो दुष
देइ नौ लेउ रगौ यह सौ पसु नौ ॥ २८
॥ लछमन दोहा ॥ नाथ नैम दो जाइ
कैयो जीवन मैं रहाय ॥ असी के से वृ
पिये सके कय दीन नाथ ॥ २९ ॥ दूत
विलंवना ॥ विपन मारग रम विए
जहौ ॥ सुघदि संदर सोदर साथ ही
विविधि श्रीफल सिद्धि मानौ फ

रा.चं.
४८
दन

पठऐहैनपतत्तान॥२३॥तुमजननिसे
वकोरहैधांम॥कैजाहुआजहीजन
कधांम॥मुनिचंदवैगजगमनियेन॥
जियरुचाहैसुकीजैजलजनेन॥२४॥
॥श्रीसीताजू॥नराज॥ नेहौहैनजौ
डंजूविदेहधामकोअवे॥कहीजुबात
मातसोसुआजेमसुनीसवे॥लगेहु
धाहिमाभलोविपत्नमाझनारि
ये॥पियासआसनीरवीरजुध्धमेस
मारिये॥२५॥लक्षमनसुगिपछुंद॥
वनमहविकटविविधिदुषसुनिये॥
गिरगहवरमगअगमनिगुनिये॥क
हुअहिहाकिहुनिसिचरहहहो॥क
हुरवदहनदुसहतनदहही॥२६॥सी
ताजूदंडका॥केसोदासनीटभयप्पा
सउपवासत्रासदुषकोनिवासविष
मुषहुगह्योपेरे॥वाकोबहनदिन

दवाकों दहनवडीगाडवाअनलज्वा
लजालमेंरहोपेरे ॥ जौलजन्मजा
तजोरजुघोरपरिपूलनप्रगटपर
तापकेयाकेहोपरे ॥ सहिहोतपन
तापपतिकेप्रतापरघुवीरकोविर
हवीरमोपेनसहोपरे ॥ २८ ॥ श्रीभ
गविसेषक ॥ धामरहोतुमलछिम
नराजकोसेवकेरा ॥ मातनिकेसुनि
तातसुदारयदुषहेरा ॥ आइभरथ्य
केहेधोकहासवमंत्रगुनो ॥ जोदुष
देइतोलेउरगोयहसोषसुनो ॥ २९
॥ लछमनदोहा ॥ तासनेमेदोजाइ
कैजोजीवनमोरहाय ॥ ऐसीकेसेवू
झियसेवकयरवनताय ॥ ३० ॥ दूत
विलंवना ॥ विपनमाएगरामविए
जही ॥ तुषदिसदरसोदरसाथही
विविधिश्रीफलसिध्यिमानोफ

लो॥ सकलसाधनासिधिहिलैचलो॥३०॥ दोहा॥ एमचलतनृपचलोजहतहसहितउछाह॥ मनहुभगीरथपृष्ठचलेभागीरथीप्रवाह॥३१॥ चंचल॥ एमचंद्रधामतैचालसुनैनेज्वेनपाल॥ वातकौकहैसुनैसुहेगए महाविहाल॥ वृस्हर्धफारिजीउहेप्रमिल्योविलोकजाइ॥ग्रहचौजैसोचकोरचंद्रिमेमिलोउराइ॥३२॥ कुमारललिन॥ नृपहिदेषनमोहैरीएकटौनरकोहै॥ संभ्रमचित्तप्रहलेजे॥ एमहियोसववूझे॥३३॥ चर्चरी॥ कोनहोकिततेचलेकितजानहोकिहकामजू॥ कौनकोविरियावहूकहिकोनकीवहधामजू॥ एकगांउवसैकिसाजनमित्रवंधुवषानिये॥ देसकेपरदेसकेकि

धौंयंपकोपहिचांनिये ॥ ३३ ॥ दंडक ॥
किधौराजपुत्रीयहवरहीवरीहै किधौ
उपधिवैरहोइहिसे भाअभिरतेहौ
किधौरतिरतिजनसमा पकेसोरास
जानतपावनसिवैरूसुमिरतेहौ ॥
किधौमुनिआमहनिके धौंब्रम्हदा
परतेकिधौसिध्यजुतबरमैविहरते
हौ ॥ किधौकोउठगेहोठगोरीलिये
किधौतुमहीहरसिबाभौरिचाह
नफिरतेहौ ॥ ३४ ॥ नी नाकरदंडक ॥
मेघमंदाकिनीचारुसौदांमिनी
रूपरुरेलसेदेहधारीमनौ ॥ भूरि
भागीरथीभारथीहंसजा अंस
केहैमनौभागभारैमनौ ॥ देवराजा
लियेदेवरानी किधौपुत्रसंजुक्त
भूलोकमैसोहिये ॥ पष्यदूंसध्य
संध्यासुधीहै ॥ किधौलक्ष्मियेलव

क्षप्रतसक्षहीमोहियो॥२५॥ अनंघसेष
रदंडका॥ तडागहीननीरजेसनीरहे
नकेसोदासपुंडरीकपुंडभौरमंड
लीनमंडहो॥ तमालवल्लरीसमेत
सूषिसूषिकेरहेतिबागफूलिफूल
केसमूलसूलषंडहो॥ चितेचकोरनी
चकोरमोरमोरनीसमेतहंसहंसि
नीसुकादिसारिकासबैपढै॥ जहीं
जहीविरामलेतरामजूतहीतहीं अ
नेकभांतिकेअसेषभोगभागसो
बढे॥२६॥ सुदती॥ घांमकोघांमसमी
पसदावलु॥ सोतहिलागतहै अति
सीतल॥ ज्योंघनसंजुतदांमिनकेत
न॥ हातहैपूषनकेकरभूषन॥२७॥
मारगकीरजतापतिहै अति॥ के
सवसीतहिसीतललागति॥ पीप
दपंकजऊपरपाइन॥ देजुचलेतेति

हिनेसुषदाइन॥३९॥दोहा॥प्रतिपुर
अरुप्रतिग्रामकीनगरनागरीना
रि॥सीताजूकोनिषेमुषवरनन
हेसुषकारि॥३९॥टीका॥वासोमग
अककहेतोसोमगनेनीसववासो
सुधाधरतुहीसुधाधरमांनिये॥व
हदुजराजएजेनेरे दुजराजएजेव
हकलानिधतुहीकलाकलितव
बानियें॥एनाकरकेदोईकेसवप्र
कासकरअवरविलासकुवलय
हिनगानिये॥वाकेअतिसीनकर
तुहेसीतासोनकरचंद्रमासीचंद्र
मुषीसवजगजानिये॥४०॥अप
रंचवाच्या॥कलितकलंककेतुकेतु
असेतुगातभोगजोगकोअजो
गएगहीकोथलुसो॥पूतेहीकोपू
रतेपप्रतिदिनदूनोदीनछिनछिन

ए.चं.
५१

छीनछुवछीलरकौजलुसो॥चंदसो
जुवलनतएमचंद्रकोदुहाईसोहीमति
मंदकविकसवकुसलसो॥सुंदरसुवास
अरुकोमलअमलअतिसोताजु
कोमुषसषीकेवलकमलसो॥४१॥
॥अन्यहवाचा॥एकेकहेअमलकम
लमुषसीताजूकोएकेकहेचंदमए
अनंदकोकंदरी॥रोहूजोकमलतो
वैनिमाअसकुचेरी॥चंदजोतोवास
रहूहेहिदुतिमंदुरी॥वासरहीकमलु
एयनमाअचंदुमुषवासरहीरयनवि
राजेजगवंदरी॥देषोमुष[illegible]
भावतुनदेषोहिकमलचंदनातामुष
मुषेसषीकमलवेनचंदुरी॥४२॥दोहा
सीतानेनचकोरमुषविवंसीरघुना
थ॥एमचंद्रप्रियकमलमुषभलो
वनोरहसाथ॥४३॥मंदरोपवाग

५१

रुठागतं गिनीतीतेमालकी छाह
विलोकि भली॥ घटिका इक वैठ तिहि
सुषपाइ वनाइ तहां कुस कांसथली
मग को श्रमु श्रीपति दूरि करै सिय
को सुचि वालक अंचल कै श्रमु ते
इ हैं तिन को कहि केसव चंचल चा
रु दृगं चलकै॥४४॥ सोरठा॥ श्री र
घुपति के दृष्टि॥ अश्रु वलित सीता
नयन सांची कही अदिष्टि॥ सूठैउप
मामीनकी॥४५॥ दोहा॥ मारगमें र
घुनाथजू दुष सुष सब ही देत॥ चित्र
कूट पर्वत गये सोदर सिया समेत॥४६॥
॥इति श्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकायां वन
वागवर्ननं नाम नवम प्रकासः॥९॥ दो
हा॥ दसयें जैसे भरथजू चित्रकूट को
आस॥ रामचंद्र के दरस कां नंदीपुर में

वासु॥१॥ धोधक॥ आइमध्यपुरी
अवलोकी॥ थावरजंगमजीउससो
की॥ भाटनहीविरदावलिसाजै॥ कुं
जरगाजेनदुंदभीवाजै॥ राजसभा
नविलोकियकोउ॥ सोसगसेतनवो
दरदोउ॥ मंदिरमातनविलोकि-अके
ली॥ जैसोविनव्रक्षबिराजतिवेली
३॥ तोटक॥ तबदेखिदेषुप्रनामकिये॥ उ
ठिकैउनकेरलगाइलिये॥ नदिषो
जलसंभ्रमभूलिरहे॥ तबमातसो
वातभरथ्थकहे॥ ४॥ सवैया॥ मात
कहांनपतातनगये॥ सुरलोकनिकेयो
सुतसोकलये॥ सुतकौनुसुराम क
हाहै-अवेवनसोयसुलक्ष्मनसा
थगये॥ वनकाजकहाकहकेवलमो
सुषजोकोकहासुषयाभेभये॥ तुम
कोप्रभुनाथकतोकोकहा-अपरा

धविनासिगरेहिहूये ॥५॥ दोहा ॥ भ-
र्त्तो सुन विहूंषिनी सवही कौ दुष दा-
हि ॥ यह कहि देषि भरथ तव कौसि-
ल्या के पाइ ॥६॥ तोटक ॥ तव पांइन
जाइ भरथ्थ परे ॥ उनि मैं लिय उठाइ
के अंक धरे ॥ सिर सूंघि विलोकि व-
दनाइ लई ॥ सुन ता बिन ह्यां विपरी-
त भई ॥७॥ भरथवाक्य ॥ सुनि मात
भई यह वात अनैसी ॥ करी सुत भर्त्त
विनासिन जैसी ॥ यह वात भई अव
जान न जाके ॥ दुज दोष परै सिगरे
सिर ताके ॥५॥ जिनके रघुनाथ वि-
रोध वसै जू ॥ मरि धाम न कौ तिन्है
पाप गसै जू ॥ सर राम रम्यो मन ना-
हि नै जाके ॥ रन मैं रिन है भइ पराज-
य ताके ॥८॥ कौसिल्यावाच ॥ जिन
सोह करौ तुम पुत्र सयाने ॥ अतिसा

धचरित्रतुम्हसबजानै॥ सबकोस
बकालसदासुषदाई॥ जिपजाननन
हैंसुतज्यौंरघुराई॥१०॥ बर्छरी॥
हाइहाइजहांतहांतबंदेरहीसिगरी
पुरी॥ धांमधांमनिसुंदरीप्रगटीस
बेजितुतीदुरी॥ लोगमेनरपनाथको
सबलोगश्रीसरजूतटी॥ राजपत्नि
समेतपुत्रनविप्रबलाप्रगटीरटी॥
१॥ तोमराजी॥ करैअग्निअर्चा
मिटीप्रेतचर्चा॥ सबैराजधांनी॥ भई
दीनबांनी॥१२॥ कुमारललिता॥
नृपभरथकीन्ही॥ बियोगरसभी
नी॥ सजीमतनवीनी॥ मकुटपटली
नी॥१३॥ नोरक॥ पहिरेबकलासु
जटाधरिकै॥ निजपाइनपंथचले
अरिकै॥ नगिंगगयेगुहसंगलियो
चित्रकूटबिलोकितजेंडिदियो॥१४

॥सवैया॥ सब सारस हंस भगे षग
षेचर बोरि दै मौंन चहूं बाननि गाजे ॥ ब
नके न षोन रहे कि नत बोलन के लेम
ग ज्यों मृगनाइक भाजे ॥ नजि सिद्धि
समाधिन के सब टोर घरे टोरि टीनि
मे आसन साजे ॥ भूतल भूधर हालो
अचानक आनि भरथ्थ की दुंदभी
बाजे ॥ १५ ॥ लछि मनमोहन ॥ देषो
भरथ्थ चमू सजि आये ॥ जानि अ
वनि हम को उठि धाये ॥ हीस न हय ब
बारन गाजे ॥ टोरष जहन ह दुंदभी बा
जे ॥ १६ ॥ तारक ॥ गजराज निरूपार
पाषर सोहे ॥ आनि सुंदर सी सस सिरीम
न मोहे ॥ मनि घूंघर घंटनि के बाजे
तडित जु नमानहु बारिद गाजे ॥ १७ ॥
विजय ॥ जुद्ध को आज भरथ्थ चढे
घन दुंदभी की दसहूं दिस धाई ॥ प्रा

नचलीचतुरंगचमूवनीसुनकेसव
कासहजाई॥सवकेतनत्रांननिमे
अलकेअवधोअद्भुतोदयकीअ
द्भुताई॥अंतरतेजतुंजनकोज
पूननकीजेऊणआई॥१९॥तो
टक॥उठिकेधरिधूएअकासचली
अतिचंचलवाजखुरीनदली॥मु
वहाल्तनजानिअकासहिये॥ज
नुथंभनिनैटारनिटोहकिये॥१९॥
तारक॥रनराजकुमारअरूझहि
गे॥अतिसांमुहेघाइनिजूझहिगे
जनुठौरनिठौरनिभूमिनवीने॥नि
निकेचढिवेकहमारगकीने॥२०॥
सीताजू॥रहीपूरिविमाननिओ
मथली॥तिनकोजनुटारनथू
रिचली॥परपूरिअकासहधूरि
रही॥सुगयेमिरिसूरप्रकासस

हौ॥२१॥दोहा॥अपनेकुलकोक
लहकैयौदेखेएविभगवंत॥येहजानि
अंतएकियौमानकुमहीपअनंत
॥२२॥तोटका॥बहुतामहदीहपता
कलेसे॥जनुधूममेअगनिकीज्वा
लवसे॥एसनाकिधौकालकएल
छनी॥किधौमीचनचेचहुवाएवनी॥
२३॥दोहा॥देखिभएकीचलधु
जाधूरनिमेसुखदेनि॥जुद्धजुरन
कोमनकुमतजाधनवोललेनि॥२४॥
॥लक्षिमन दंडका॥मारडारोअनुज
समेतइहितअबमेदिडारोकेव
लबचननिजगुरकौ॥सीतासान
सीतानाथवेदेदेखोछुचतरहिहसु
बसखोत्रासुसबहीकेउरकौ॥क
सोदासससविलासवीसविसोवा
सुहोइकैकहीकेअगअंगपुत्रसो

ए. चं.
५५

कुजुरकौ॥ रघुराजजूकौ साजु सक
ल छ्छिडाइ लैकुंभर थहि आजु राज
टहू प्रेतपुरकौ॥ २५॥ दोहा॥ एक रा
जमे मग रज्ज रहैहै प्रभु के लव दास
तहां वसत हैं रैनु दिन मूरत वन वि
नास॥ २६॥ कुसमविचित्रा॥ नरदु
निसैनाउ हि यलराषी॥ मुनिजन
लीने सग अभिलाषी॥ रघुपति
कंपाइन सिरनाये॥ उनि हसि लेके
कंठलगाये॥ २७॥ दोधक॥ मातु
सबै मिलि विकट आई॥ ज्यो सुत
कौ सुरभी अलवाई॥ लछि मन सो
उठि कैरघुराई॥ पाइन जाइ परे सुष
दाई॥ २८॥ मातनि कंठ उठाइ लगा
ये॥ प्रान मनो मत देहनि पाये॥ आं
नि मिलीत व सीय सभागी॥ देव
रसासु नि के पग लागी॥ २९॥ तोमर

मर॥ तब पूछि पठैयो रघुराइ॥ सुख है पि
ता तन माइ॥ तब पुत्र कौ सुख जोर
सिगरी उठी आनि रैइ॥३०॥ दोधक
मा सुनि सो सब पर्वत धायो॥ जी
व कहा जर जंगम गैयो॥ सिद्धि बधू
सिगरी सुन धाई॥ राज बधू सिगरी
स मुआई॥३१॥ सुषदा॥ धीरि चित्र
धीर॥ गये गंग तीर॥ सुचि ह्वै सरीर॥
पितु तर्प कीन॥३२॥ भरथ नाराच॥
घरैकौ चलिये अब श्री रघुराई॥ ज
नेहौं तुम राज सदा सुषदाई॥ पर
वात कही जल सों गलु भीन्यौ॥ उ८
सोटर पाइ पैनि वतीमौ॥३३॥ श्री
राम॥ राजु दियौ हम कौ बन दीनौ॥ ए
जु दियौ तुम कौ अति पीनौ॥ सो ह
म ही तुम ही अब कीजै॥ बापु कौ
बोलु न नेकहु छीजै॥३४॥ दोहा॥

रा. चं.
५६

एजाको अरुवापकोवचनुनमे
टैकोइ॥जौनमांनिजैभरथनैमा
रैकोफलहोइ॥३५॥भरथस्वागता
मद्यपांनअस्त्रीजिनकोइ॥संनि
पातिजुनवानिलजोइ॥दिषिटे
षितिनकोसवभोगै॥नासुयानह
तिपापुनलागै॥३६॥ईसईसज
गदीसवषानौ॥वेदवाक्यसवतै
वलजानौ॥नाहिमैरिहकेरहि
हैतौ॥गंगनीएतनकोनजिहौ३७
॥दोहा॥मोनगहौपहवानकहि
छौडौसवैविकलपु॥भरथजाइ
भागीरथीतीरएकिपासंकलप॥३
८॥इंद्रवज्रा॥भागीरथीरूपअ
नरूपकारी॥चंद्राननलोचन
कंजधारी॥वांनीवषांनीमुषतत्व
सोध्यौ॥एमानुजैआनिप्रवोधु

बोध्यौ ॥ ३९ ॥ अनंतवसौरदिन अं
नुपायौ ॥ अनेगधावरनिगीनगा
यौ ॥ तिन्हैंन एमानुजौं बंधुमानौ ॥
सुनौ सुधी केवलब्रह्मजानौ ॥ ४० ॥
निजैं छायाभूतल देहधारी ॥ अथ
मैं संघारकु धर्मचारी ॥ चलैदसग्री
वहिमारिवेकौं ॥ जपीतपीकेवल
पालवेकौं ॥ ४१ ॥ उठौ हठौ होहुनका
जकीजै ॥ सुबपाइए जअग्यांमप
तिलीजै ॥ अंदायनेरीसुतमान
सोहै ॥ सुकैनमायाइ निकौनमो
है ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ पहकाहिकैभागीर
थी केवलभईअदिष्ट ॥ भरथक
हो उठिरामसौं देहुपादुकाइष्ट ॥ ४३
॥ इंद्रवज्रा ॥ चलैवलीपावनपादुका
लैकै ॥ प्रदछिनांएमसीनाहिदैकै ॥
गयेतिनंदीपुरवासुकीनौ ॥ सवध

ए॰चं॰
५७

श्रीएमहिहिचित्तुदीनो॥४४॥दोहा॥के
सवमरथहि–आदिदेसनगरकेलो
ग॥वनसमानघरघरवेसेसकलवि
कलसंभोग॥४५॥इतिश्रीमत्सकल
लोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीए
मचंद्रचंद्रिकायांभगवत्पादुकाग्रह
ननामदसमप्रकासः॥१०॥दोहा॥
येकादसेप्रकासमेपचवटिनकोग
मु॥सूपनेकेरूपकोएयुपतिकरहै
नासु॥१॥उपता॥चित्रकूटएमजू
तजैौ॥जाइजग्यथलु–अत्रेकोम
जैौ॥एमलछिमनसमेतसीतादेखि
यो॥अपनोजनमसुफलकरिले
खियो॥२॥अत्रउवाच॥चंद्रवतीनि
र्मलनदीनतपजापुजुकरिये॥सोधि
सोधचितजोमनधरिऐ॥जोगजग्य
हमजोलगिकरिये॥एमचंद्रसव

षा

५७

कोफलनलहियो ॥ २ ॥ वंसस्थविलता ॥
अनेकधापूजनु अत्रजूकेरे ॥ ऋपा
लते ह्वै श्रीरघुनाथजूधेरे ॥ पतिव्रता
देविमहर्षिकीजहां ॥ सुबुधिसीतासु
बरगईतहां ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पतिव्रतानि
कीदेवता अनुसूयासुभगाय ॥ सी
ताजू अवलोकियोजएसषीकेसा
थ ॥ ५ ॥ चतुष्पदी ॥ सिरहसेतुविएजे
कीरतिएजेजनुकेसवतपवलको ॥
तनुवलीपलितजनुसकलबासु
नानिकसगईथलथलको ॥ कंप
तिसुभग्रीवासवअंगसीवदेषत
चित्तभुलाही ॥ जनुअपनेमनमे
यहउपदेसतिया जगमेकछुनाही ॥
६ ॥ प्रमानाकृता ॥ हवोइजाइपग
सियपरी ॥ रिषनारिसूंघिसिअंक
धरी ॥ वहुअंगएगअगअंगरये ॥

सबभांतिनिकेउपदेसदये॥७॥ अं मदि
रा॥ रामअंगेचलेमध्यसीनाच
ली॥ बंधुपीछेचलेसोभिसोभाभ
ली॥ देखिदेहीसबैकोटिधांकैभनौ॥
जीवजीवेसकेबीचमायामनो॥८॥ मा
लनी॥ बिपनबिराधुबलिष्टदेखियो॥
नृपतनयाभयभीतकेपिख्यो॥ तबर
घुनाथबांनकेहयो॥ निजषिवीनपं
थपाठयो॥९॥ दोहा॥ रघुनाथिकसा
इकधरैसकललोकसिरमोर॥ गए
कृपाकरभक्तिवसीषेअगस्तके
ठोर॥१०॥ वसंततिलका॥ रामल
क्ष्मनअगस्तसनारिदेखियो॥ सो
हासमेतसुभपावकरूपलेखियो॥
अष्टांगछिप्रअभिवंदनजाइकीनें॥
सदानंदआसिषअशेषदीनै॥११॥
बैठारआसनसबैअभिलाषपूछे॥

सीतासमेतसवंधरामपूजे॥ जोकेनिवि
त्तहमजग्यपजजेसुपाए॥ ब्रम्हांडमंडलनू
पजोवेदनगाए॥ १२॥ पद्धिटिका॥ ब्रह्मा
दिदेवनववविनयकीन॥ तरक्षीरसिंधुद्वेप
रमदीन॥ तुमकह्योदेवअवतरहूजाइ॥
सुनुहेपदसरथकेहोहुआइ॥ १३॥ हम
नवतेअतिआनंदमान॥ चितवतहे
मगआगमनजान॥ ह्यांएहियेकारिसे
देवकाजु॥ ममफूलिफलोनेपवरस
आजु॥ १४॥ श्रीरामवाच्य॥ अगस्तरि
षएजजूवचनइकमेरैसुनो॥ सवभांत
भूतलसुदेसमनमेगुनो॥ सनीरतम
डिसंमध्यसोभाधेर॥ जहांहमनिवा
सकेविमलसालाकेर॥ १५॥ अग
स्तपवाचनी॥ जदपिजगकत्रोपा
लकहत्रोपरिपूरनवेदनगाये॥ अ
वनदपिकृपाकरिमायावपुधरिय

लपूछन है मकह आये॥ सुनि सुरना
इक राक्षस घाइकार क्षह मुनि जनु जमु
ली जै॥ सुभ गोदावरी तट विसद पंचव
टपनै कुटी न ह की जे॥१६॥ दोहा॥ के स
व कहे अगस्त के पंचवटी के तीर॥ पर्न
कुटी पावन करी राम चंद्र रन धीर॥१७॥
॥पद्मावती॥ फल फूलन फूले तरवर
हरे कुल न कोकिल कलरव बोले॥ अ
ति मत्त मयूरी पिय रस पूरी वन वन प्र
ति नाचन डोलै॥ सारस सुक पंडित गु
न गन मंडित भावनि मय वचन बखा
नै॥ देखे रघुनायक सिय सहाइक मनो
मदन रति जानै॥१८॥ लच्छि
मन सवैया॥ सब जाति फटी दुष की
दुपटी कपटी न रहै जह एक घटी॥ नि
घटी रुचि मीचु घटी हूं घटी जग
जीव जतीन की छूटी चटी॥ अघ घोा

षकीवेरीकरीविकटीनिकटीप्रग
टीगुनग्यानगटी ॥ चतुंवाएनिनाच
तमुक्तनटीगुनधूरिजटीजटीपंच
वटी ॥ २६ ॥ हाकहिनक ॥ भांतनि
भांतिनसुंदरषेनी ॥ सोभतिदंतन
कीरुचिवनी ॥ सेववटेनपकीजनु
लसे ॥ श्रीफलभूमिभावजहवंसे ॥
२७ ॥ वीरिभयानकसोपहलगे ॥ स्र
केसमूहजहांजगमगे ॥ नेननिकी
वहुरूपनिगसे ॥ श्रीहरिकीजनुमू
तिलसे ॥ २८ ॥ श्रीसीताजूदोधक
सोभतिहैयजोकुलकंन्या ॥ धा
इविराजनदेसगधंन्या ॥ केलिथ
लीजनुश्रीगिरजाकी ॥ सोमधरे
सितकंठप्रभाकी ॥ २९ ॥ श्रीरामन
राजा ॥ अतिनियरंगोदावरीपापसं
घारिनी ॥ तरलेतंरगतुंगावलीचा

हंसचारिनी॥ अमलकमलसोगंध
लीलामनोहारिनी॥ बहुनयनसुरस
केअंगसोभामनोधारिनी॥ २३॥ दो
धक॥ रतिमनो अविवेककोपापी॥
साधनकीगतिपावनपापी॥ कुंजन
कीमतिसीवडभागी॥ श्रीहरिमंदिर
सोअनुरागी॥ २४॥ अमनगति॥ नि
पटपनिब्रनधरनी॥ जगम[illegible]गके सुष
करनी॥ निगनसदागतिसुनिजे॥ आ
गतिमहांगतिगुनजे॥ २५॥ दोहा॥ वि
षमयपरहगोदावरी अमतनकेफल
देइ॥ केसवजीवन[illegible] हाकेदुषअत्र
सेषहरलेइ॥ २६॥ त्रिभंगी॥ जबजव
धरवीनाप्रगटनवीनाबहुरसलीनी
नासुषसीना॥ पियजियहिलीआ
वेदुषनिभजावेविविधवजावेगुन
गीता॥ नजिमनिसंसारीविपन[illegible]वि

पनविहारीदुबसुषकारीषीरिआवे॥
नवनवजगभूषनी।पटलदूषनस
वकोभूषनयहीरावे॥२८॥नाटक॥
कवरीकुसमालिसिषीनिर्टई॥गजकुं
भनिहारनिसोभभई॥मुकनासुक
सारिकानाकरचे॥करिकेहरकिंकि
नसोभसचे॥२५॥दुलरीकलकी
किलकंठवनी॥मगबंजनअंजन
भांतिभनी॥नपहंसननूपुरसोभ
सिरी॥कलहंसनिकंठनिकंटसिरी॥
२६॥मुषवासनिवासिनकीनत
वे॥अनफुल्मलतानहसेलसवे॥
जलहूयलहूइहिभांतिरमे॥वन
जीवजहांतहसंगभमे॥३०॥दोहा
सहजसुवासुसरीरकीवनउपवन
अवगाहि॥दूतीजैसेआईलिये
केसवसपनबाहि॥३१॥मरहठा॥

रा·चं·
६१

इकदिनारघुनाइकसियासहाइक
एतिनाइकआनुहार॥सुभगोदावरित
टविसदंपंचवटीवैठेहैनमुरारि॥देषनही
तुमनुमदनमप्योजननसूपनषानि
हिकाल॥अतिसुंदरवपुकौरकछुयी
रजैथीबोलीवचनरसाल॥३२॥सूप
नषावाच॥किंनरहोनररूपविजद्ध
नजक्षकरुक्षसरीरनसोहो॥चित्त
चकोरकेचंदकिधौमृगलोचनचारु
विमाननिरेहो॥अंगधरेकेअनंगी
होकेसबअंगीअनेकनिकेमनमो
हो॥वीरजटानधरेधनवानलिये
वनमेवनितानुमकेहो॥३३॥श्री
राममनोरमा॥हमहैदसरथनृपति
केसुतएमत्तछिमननामनिसंजु
त॥यहसिसपैदेपठइहिकानन॥मुनि
पालहुमाप्राक्षसकेगन॥३४॥सू

पनषा ॥ नपएवनकीभगनीगनमे
कह ॥ जिनकीठकुराइसतीनहूंलोक
हे ॥ सुनिजैदुषमोचनपंकजलोच
न ॥ अवमोहिकौंएपतिनीमनरोचन
३५ ॥ ओसमतोमए ॥ नवयेकैहोह
सिएम ॥ अवमोहिजांनिसवाम ॥
नूजाइलनछमनदेष ॥ सोरूपजोवन
लष ॥ ३६ ॥ सूपनषादोधका ॥ एमस
हाद्र मोतनदेषो ॥ एवनकी भगनी
जियलेषो ॥ एजकुमारएमोसगमे
रे ॥ होहिसवैसुषसंपतनेरे ॥ ३७ ॥ ल
छमन ॥ वेप्रभुहोजनुजानिसदाइ ॥
दासीभयमहकोनवडाइ ॥ जोभ
जिजैप्रभुनोप्रभुताइ ॥ दासीभयै
उपहांससदाइ ॥ ३८ ॥ मदिनिका ॥ हां
सकेविलासजांन ॥ दीहमानंषडमा
नि ॥ भक्षिवेकोचित्रचाहि ॥ सांमुहे

मही सिय पाहि॥ ३५॥ तोमर॥ नवरंगं मंचे
दूलवीन॥ हसि अनुजसों दुख हीन॥ गुन
दूसजाससहलीन॥ श्रुतिनासिकाबिनकी
न॥ ४०॥ दोहा॥ श्रोनछिछूटतिवदनभी
मभईतिहिकाल॥ मानहुकृस्नाकुटि
लजुतपावककज्वालकराल॥ ४१॥ इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंता
मनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांसूपनखावि
रूपवनेरांराममएकादसप्रकास॥ ११
॥ ११॥ दोहा॥ यह्ह्वादसेप्रकासमेंषर
दूषनवधनास॥ सीताहरनविलाप
पुनिसुग्रीवअनुग्रहवास॥ १॥ तोट
क॥ गईसूपनषाषरदूषनपे॥ सजि
ल्याईतिन्हेंजगभूषनपे॥ सरएकअ
नेकनदूरिकिये॥ रविकेकरज्योंतम
पुंजपिये॥ २॥ दोहा॥ लक्ष्मनसोंर
घुनाथजूकहिऐोवचनसुनाइ॥ सीत

हिलैरघेगुफामेमनज्योसुचितार
॥३॥ लक्षमनसीतासंगहैगुफाद्वार
वलवीर॥ आपुनतेतनचांनसज्जि
जुझेजुद्दरयुवीर॥४॥ मनोरमा॥ वृषके
षाद्दूषनज्योषाद्दूषन॥ नवदूरिकि
येरविकेकुलभूषने॥ गदसत्रवेदोष
ज्योदूरिकियेचवर॥ असरसज्योरयु
नंदनकेसर॥५॥ दोहा॥ भयोजुध्ध
वहुकेगनेवाढेकथाअपार॥ सहसच
तुरदसराक्षसनमारेनलगीनवार
॥६॥ दसकंध अंधपेजवगईषाद्दूष
नेजुआइ॥ सूपनषालछिमनसहि
तवषसुनायोजाइ॥७॥ दंडक॥ मम
कौसुजाथीकोहेमोहिनीहूमोहेअसी
आजलोनसुनीसुनीनेननिनिहा
रिये॥ दद्दुदुतिदामिनीहिमोहेकाम
कामिनीहियेकलोमरूपरेनलोम

ए.चं.
६३

जाविचारियै॥ भोगपरकेमल्लासुहाग
परविमलाऊवानीपरवानीकेसोदास
सुषकारियै॥ सातलोकसातदीपसात
हूसातलनित्रियपनकीगीतासवसी
तापवारियै॥ ८ ॥मनोरमा॥ भगिसूप
नषागईएवनपैनव॥ त्रसराषरदूष
ननासकहेसव॥ सूपनषामुषवो
नसैवसुनि॥ एवनगोजहमारीचहो
मुनि॥ ९ ॥दोधक॥ एवनवानकहीसि
गरीस्यो॥ सूपनषाज्युविरूपकरीस्यो॥
एषसएंम-अनेकसषारे॥ दूषनस्यो
त्रसएासरमारे॥ १० ॥नू-अवहोहि
सहाइकमेरे॥ मेवहुतोगुनमानि
होतेरे॥ होहिस्सीतहित्यावनपे
हे॥ वेममसेकनिहीममीजेहै॥ ११॥
॥मालिनी॥ एवनमाननसुएंमनजा
नौ॥ पूरनचौदहिलोकवषानो॥ जा

कुजहांत्रियमलेसुनदेषी॥ होहीकौ
जलहूंथलदेषी॥१२॥ रावनपंकज
वाटिका॥ तूंअवमोहिसिषावनुहैस
ठ॥ मैं वसजगतकैरोहठहीहठ॥ वे
गिचलैउठदेहिनउतरा॥ देवसकल
जनएकनहीहरा॥१३॥ दोहा॥ जांनिच
लौमारीचुमनुमानदुहूंविधि-त्रासु॥
रावनकेंककनेरकनिजहरकारहीपुर
वासु॥१४॥ श्रीरामसुंदरी॥ राजसुता
हिकमेत्रसुनो-अव॥ चारतुहैंभुवभा
रहैरैसव॥ पावकमेनिजदेहहिराषो
छायासीरमेंगे-अभिलाषो॥१५॥
नराज॥ -आडिपोकुरगएकचारहैहै
हेमहीरकौ॥ जानुकीसमेनचितुमे
हिरामवीरकौ॥ राजपुत्रकासमीपसा
थुवंधुएषकै॥ हाथचापुवांनुलैगए
गिरीसनाथकै॥१६॥ दोहा॥ रघुनाइक
साइकहयोजवहीइकमारीच॥ हाल

हिमनयरहकहिगियोरघुपतिकेसुनी
चु॥९७॥निसपालका॥राजतनयाजु
तववोलिसुनियोकहो॥जाकुचलदेवा
नजाइहमपरद्योहो॥हेममगहाइनहिहै
नचरुजांनियो॥दीनसुएमकिहूभां
तउरआनियो॥९८॥लक्ष्मन॥सा
चआतियोचउरमोचदुषदांनियो॥मा
तुअवदातुमहवानमनमानिये॥एन
चरक्षपवहुभांति-[illegible]-अभिलाष
हो॥दीनसुएमकवहूनमुषभाषही॥
९९॥चंचला॥पक्षराजजक्षराजप्रेत
राजजातुधांनदेवता-अदेवतानदेव
ताजितेजहांन॥पर्वतारिअर्वषर्वसर्व
सर्वदावषांन॥कोरकोरसूरचंद्रएम
चंद्रदासजांनि॥१०॥तोमर॥राजपुत्रि
काकहोसुओरकोकहेसुने॥कांनमू
दिवारवारसोसुगोसधांधुने॥चापजार
रीषषाचिदेवसावदेचले॥नाकिहेति

भसम्मै होहि जीव जेवु एभले ॥ २१ ॥ छिद्रपा
रिछु दूरा जलंक नाथु आरिये ॥ भिछु
जानि जानु कीसुभीष कोवुलारि ॥ अं
तरीक्ष हीहेरीओरा हचंद्र रघको ॥ २२ ॥
॥ टंक ॥ धूमपुरके निकेतमानो धूम
केतुकी सिषा किधूमजोति मध्यरेषा
सुधाधामकी ॥ चित्रकेसी पुत्रिकाकि
नूरवघरूरेमा असंवरछिडाइली नीकां
मिनीकि कामकी ॥ पाषंडकी श्रद्धाकिम
ठसकायेकाटसी लीनीकि सुपचराज
साषासुधधामकी ॥ केसव आद्रिष्टसा
प जीव जोति जेसी तेसी लंक नाथहा
यपरी छायाजायाएमकी ॥ २३ ॥ सी
ताजूहली ला ॥ हाएमहाएम जेगं
नाथधीर ॥ लंकाधिनाथ बसजान
कुमाहिवीर ॥ हापुत्रलक्ष्मनछिडाव
कुवेगमाहि ॥ मातंडवंसकीसबलाज
ताहि ॥ २४ ॥ पंछीजटायुयहवानसुन

ए.चं.
६५

तथाहि ॥ राकौ तुंत बलत एवन दुहजाहि ॥
कीनौ प्रचंड रथपंछ त्रयुज्ञा विहीन कैसौ
विपक्षज वधौ पक्षहीन ॥ २५ ॥ संजुता
दसकंठ सीतहि लै चलौ ॥ अति ग्रथ
गीधहि पेट लौ ॥ चितज्ञान की अधकौ
किसौ ॥ हरि नैन हू अवलोकिसौ ॥ २६ ॥
॥ पदपद की अनुभ घूघरी ॥ निनी लहा
टकसौ जरी ॥ जुवजनरी पैवि चारिकै ॥
भुव डारि दियपगु टारिकै ॥ २७ ॥ दोहा
सीताकपदपद्म के नूपुर एटजि नुजा
नु ॥ मनकू किसौ सुग्रीवघराजश्रीप्र
स्थान ॥ २८ ॥ सोरठा सहित विलोकि
यो रघुवर सन्यौ सद्यु ॥ सुभजा सोभ
सुगंधजुतज्यौं पद्मा विनपद्मु ॥ २९ ॥
जदपि श्री रघुनाथ जू सम सरवगास
रवग्य ॥ ताकै सी लीला करत जिहि
मोहत नर अग्य ॥ ३० ॥ श्रीरामचंद्र
कल्ला ॥ निजु देषौ न ही सुभ सीतहू

म

गीतहिकाहिनकौनकहौअवही ॥ मोहि
नेकेवनमाअगईसमोहिएमैमगुमारेए
जही ॥ कहूगानकक्षनुमसोकहिआरी
किधौतिहित्रासउएउहौ ॥ अवहेकिधौ
पनेकुटीपहआरकिधौवहलक्षमन
हौहिनहौ ॥ ३१ ॥ दोधक ॥ धीएजसौअ
पनोतनुएकौ ॥ पक्षीजटायुपरेअ
वलोकौ ॥ क्षत्रभुजाएमदेषकैपूछौ
पक्षिकहौतिनकौनसोजूझ्यौ ॥ ३२ ॥ ज
टायुवाच ॥ एअवलावनलेगयोसी
तह ॥ हारघुनाथहेसुभगीनह ॥ मैवि
नक्षत्रभुजाएचुकीनौ ॥ द्वैगयोविहू
लपक्षविहीनो ॥ ३३ ॥ हौजगमेसव
नेवडभागी ॥ दहदसाननकाएजूला
जी ॥ जोवकुभौतिनिवेदनगायो ॥ ह
पसुमेअवलोकनपायो ॥ ३४ ॥ श्री
राम ॥ साधुजटायुसदावडभागी ॥ तो

मनुमोवपुसो अनुरागी ॥ छूटोसरी सु
नीयरवानी ॥ रामहिं मनवृजोनिसमानी ॥
३५ ॥ मोटक ॥ दिसिक्षिनकोकरिदादु
चले ॥ सरिताणगिरिदेषनवृक्षभले ॥ वनअ
धकवंधषिनोकनिदे ॥ दुवसादरसोंचल
एतवही ॥ ३६ ॥ जिहिंमेवेकोजिपयुद्धगु
नी ॥ तववानलेदोउअवाहहनी ॥ वह
छोउकेदेहचलोजवही ॥ यहव्योममेंमे
वनकहोतवही ॥ ३७ ॥ पीछेंमघवासु
हिआपदरी ॥ गंधपनिरक्षसदेहभरी ॥
फिरिकेमघवासहजुद्धठयो ॥ उहिंको
धकेसीसमेवजहयो ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
गयोसोसुरगइपेउमेपरेरोधरनअ
रराइ ॥ तवकरुनगहियमेभरीदीनो
वाकुवंडाइ ॥ रुपवाकुदरीहेकोसकी
आवेनेगहिबाउ ॥ एमरुपसीतारहर
नउपाउअवनउपाउ ॥ ४० ॥ सुरसरतेआ

गेगयेमिलिहैननपसुग्रीव। देहैसीता
कोषबरवोठैसुष आतिजीव॥४१॥ मो
टक॥ सीतानाइककेसवसोभिरही॥ अ
वलोकिनहांचकवाचकही। उरमेंसिष
प्रीनसमाइरही। जिनसौरघुनाइकबा
तकही॥४२॥ अवलोकनतेजवहीजव
ही। दुषहोतहियेनवहीनवही। यह वे
हुनचिन्हकछूधरिये। सियपदकुंजनाइ
कृपाकरिये॥४३॥ कनुचिन्हचकोरके
छूकरिये। ससिके अवलोकनदूरि
किये। तिनकीमुषकीदुतिदेषिजि
ये॥४४॥ लक्ष्मनदंडक॥ कहिकेसव
जाचकके आरिचंपककोक असोक
लिये आरिकै। लषिकेतुकीकेतिक
जालगुलावनतक्षनजानितजेदुरि
कै। सुनिसाधुतुम्हैहमपूछनआ
येरहेमनमौनकहाधरिकै। सियको

सियपदकुंजनाइ कृपाकरिकै

रा·चं·
६७

कछुसोधिकहैकहूनाकहूनांमयसो
कहूनाकरिकै॥८५॥श्रीरामनराज॥
हिमारसूरसोलगैसुवानवजसीवहै॥
निसालगैकसांनसीविलेपअंग
कोदहै॥विसेषकालरातिसीकराल
रातिजानियै॥वियोगसीयकौनका
ल्लोकहाहमांनियै॥८६॥पद्धटि
का॥रहिभांतिविलोकसकलठौर॥
गयेसवरीपैदोऊदेवसिरमौर॥लि
यपादोदकतिहिषटपवारि॥पुनअ
र्योटिककीनेसुधारि॥८७॥हरिहैत
मंचतिननकोविसाल॥सुभकासी
मैपुनिमरनकाल॥तेईआयेमेरे
धामआजसुफलकाननपजप

स

माज॥८८॥फलभोजनकोतिहिय
रेआंनि॥भेषजगपपुरुषआनिप्री
तमांनि॥तिहिरामचंद्रलक्ष्मनस

रूप ॥ मन धौरे चित्त जगजो नि रूप ॥ ४९ ॥
॥ दोहा ॥ सबरी पातन पंथ न हहराबि
गरी हरलोक ॥ बननि बिलोकत हर
गये पंपातीर असोक ॥ ५० ॥ तोटक ॥
अति सुंदर अतिसीतलल से ॥ जहरू
प अनेकनि सो भावसे ॥ बहु पंकज प
छि विराजत हैं ॥ रघुनाथ विलोकि
तलाजत हैं ॥ ५१ ॥ सबरी रितु सोभति
सुभ जहां ॥ लहैं श्री बमपेन प्रवेस त
हां ॥ नवनीरज नीरत हां सरसे ॥ सिय
के सुभलोचन से दरसे ॥ ५२ ॥ विजय ॥
सुंदरसेत सरोरुह में करहाटक कीदु
ति हाटककी है ॥ ता पर भौर भलो म
न रोचन लोकविलोचन की रुचि
रोहै ॥ देखि दई उपमा जल देवनि
दीरघ देवन के मनमोहै ॥ केसव के
सव राइ मनो कमलासन के सिर

ऊपरसोहै॥५३॥लक्ष्मनचंद्रकला
मिलिचकिनिचंदनवानवैहेअनिमोहि
तिन्याइनिहीमतिको॥मगमिन्नुविलोक
तचितुजोलियैचंदनिसावरपद्धतिको॥
प्रतिकूलसुकाछिकयोंहीहठेजियजा
नेनहीअपनीगतिको॥दुषदेननराग
तुम्हेनवनेकमलाकरहेकमलापति
को॥५४॥दोहा॥ऋष्यमूकपर्वतगये
कपवश्रीरघुनाथ॥देषवानरपांच
विभुमानोदाक्षिनहाथ॥५५॥कुसुं
विचित्रा॥नवकपिराजारघुपतिदेषे
मनननानारहिनसमलेषे॥द्विजवपुध
रितहंहनिमतआये॥वहुविधिदेआ
सिषमनभाये॥५६॥हनूमानवाच॥
मवविधिहरावनमहकोंहो॥ननमन
सोमनमथमोहो॥सिरसजराबाकल
वपुधारी॥हीरहमानोविपनविहारी॥

५७ ॥ परम वियोगी सब रस भीने ॥ त
न मन एकै जुगत निकीने ॥ को तुम
हो कां लगि वन आए ॥ किहि कुल
हो कौन तुम जाए ॥ ५८ ॥ वच्छी ॥
पुत्र श्री दसरथ्य के वन राज सासन आ
इऐयो ॥ सिय सुंदरी संग ही हती विछुरी
सुं सोधु न पाइऐयो ॥ राम लक्ष्मन नाम
सुं पुत सूरवंस वषानियो ॥ रावरे वन कौ
न हो किहि भांत हम पहिचानियो ॥ ५९ ॥
॥ हनूमान ॥ दोहा ॥ या गिर पर सुग्री
व नृपता संग मंत्री चारि ॥ बानर लई
छिडाय प्रिय दीनौ बालि निकारि ॥ ६० ॥
॥ दोधक ॥ ताकहु जो अपनौ कर जा
नौ ॥ मारहु बालि विनै महमानौ ॥ ए
जु देहु जो ताकी त्रिया कौ ॥ तौ हम
देहिं बताइ सिया कौ ॥ ६१ ॥ लक्ष्मन
आरति कौ प्रभु आरति रोरै ॥ दीन अ

र॰च॰
६६

नाथनिकोप्रतिपारे॥ थावरजंगम
जीवनिकोरी॥ सनमुषहोनक्कुनार
पसारी॥ ६२॥ वानरदेहनिमंनुसि
धारे॥ सूरजकोसुतुपाइनपारे
रामकहोउठिवांनरराइ॥ रजसिरी
सषिसोत्रियपारी॥ ६३॥ दोहा॥ उ
ठिराजासुग्रीवनवतनमनअतिसुष
पाइ॥ सीताजूकेपटसहितनूपुरदी
नेआइ॥ ६४॥ नारक॥ रघुनाथज
वपरिभूषनदेषे॥ कहिकेसवप्रांन
समाननिलेषे॥ अवलोकिनल
छमनकेकरदीने॥ आनदसोसिर
मांनिकैलीने॥ ६५॥ श्रीरामदंडक
पंजरकिषंजरीटनेननिकोकिधो
मीनमानसकोकैसोदासजलुहै
किजालहै॥ अंगनिकोअंगराग
गेडवाकिगलसुहीकिधोकटिजे

ये ही कोउ कौंकि हारु है ॥ बंधन हमा
रे कंम केलि कौं कि नाहि वे कौं नाजनै
कि विजन कि चवर विचारु है ॥ मन को
जमनि का कि कं जु मुष मूदिवे कों सी
ताजू कोउ न्नीयस वसुषमा रुहै ॥ ६६
॥ स्वागता ॥ वानरें दूनवयो हसि बोलो
भीनभेद जिय कोसव बोलो ॥ आग
वारनव साष करीजू ॥ एमचं द्रहरिवा
हधरीजू ॥ ६७ ॥ सूजे पुत्र नवजोवन
जानैं ॥ वालि जो रवहु भांति वषां
नैं ॥ नारि छीन निहि भांति लइजू
सो अशेष विनती विनईजू ॥ ६८
॥ चौपही ॥ नही वाल नयना भरि
ताना ॥ हमल क्रु वे जे ओना ॥ क
छु करि ना आनि छिन मे गए ॥ र
घुसैवर जुद्ध आनि ठए ॥ ६९ ॥ द
मोहनो वालि वलवीर ॥ ना सुवे

रुकाजलनिधीर॥ भग्योएकगढवरमे
गयो॥ हमेद्वाररा बिभीनरफिरगयो॥७०॥
मयो जानिमेसिलनेद्वार॥ राजवैठन
हिकीसम्हार॥ छुटयेमासमार फिर
आयो॥ हमेदबीसकेनवधायो॥७१॥
॥दोहा॥ भागोमेदसहूंदिसांवचौकहूं
नजाइ॥ तव आयो इहिढाउरिषज्ञा
नोआपउपाइ॥७२॥ स्वांगता॥ एक
वरसएकहनीतो॥ सानतालवलवन
गुनोनो॥ रामचंद्रतववानचलायो॥ ता
लभेदफिरिकेकरआयो॥७३॥ बिजा
या॥ वावनकोपदलोकनिमापिज्यो
वानकेवपुमाअसिधायो॥ केसव
सएताजलसिंधुनिपूरानिसरहेको
पदपायो॥ कामकवाननुचासवछ
दिकें कामपेआवतज्योजगगायो॥
रामकोसारिकसातह्नतालनिभेदि

हि

केसंमहिकेकरऐसोयो॥७४॥सुग्रीवता
क॥ यह अद्भुत कर्म न ऐरे ये हो ही॥सु
रसिद्ध प्रसिद्ध नै मैं तुम को ही॥निकसी
मन नै सिगरी दुचनाही॥तुम सो प्रभु
पाये सदा सुषदाई॥७५॥लक्ष्मन
सोरठा॥जिनको नाम विसाल॥अषि
ल लोक भेदन पतिन॥तिनको केसव
दास॥सप्त ताल भेदन कहा॥७६॥
श्रीरामतारक॥अति संगत वानर की
लघुताई॥अपराध विना वध को न
वडाई॥अव है कछु मो मन ऐसि ही
इछा॥हतिवालि हि देहु तुम्हें नृप सि
छा॥७७॥इति श्रीमत्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्र
कायांसुग्रीवअनुग्रहवर्ननं नाम द्वाद
स प्रकासः॥१२॥दोहा॥प्रातेहे प्रक
संमे वालि वधो कपिराज॥वरषावर

ए.चं.
७१

ननसरदपुनउदधितलंघनकाज ॥ १ ॥
लंकविलोकनसिषकोरावनवचनवि
सेष ॥ मुदरीअरहनिमंतकोदासनवं
धनलेष ॥ २ ॥ चौपई ॥ सुग्रीवगएस
गएमलिपैतव ॥ गर्जकरीपुरद्वारगए
जव ॥ वालिचलोसुनिक्रोधकैजोम
ह ॥ वानकहोत्रियपैरहीरहियमह ॥ ३ पताए

क

वाला ॥ लीनेसहाइआएहेजुद्धहि ॥ कौ
तुसहेरघुनाथकेकुधाहि ॥ मेनकछूअ
पएधकैसुनि ॥ जानहिगवलजुध्ध
कियेपुनि ॥ ४ ॥ दोधका ॥ वालचलोहठि
केरनजअन ॥ जुध्धकियोदुहूसोदास
अन ॥ रामहिवालनसूझिपरोमन ॥ भ
गसुग्रीवगएफिरवावन ॥ ६ ॥ दोहा ॥
रामसुफेरिवुलाईयौनिकदन आवेत्रा
स ॥ तुममरवावनमैलियोजियमेभ
येमदास ॥ ७ ॥ कैधौ हूकैधौ हूलेगयेअर

७२

जुद्ध फिर जाइ॥ बाल ह्यौ मुठका हियै
न वहि लरयौ रपाइ॥ ८॥ सुंदरी॥ रविपु
त्र बालि सौ होत जुद्ध॥ रघुनाथ भयौ म
न मांअ क्रुद्ध॥ सरयेक ह्यौ उर मित्र
काम॥ त्रव भूम गिरौ कहि राम राम॥ ९॥
कछु चेत भयौ बल निधांन॥ रघुनाथ
किलो कियहाथ बांन॥ चीर जटा तन स्या
म गात॥ वनमाल हियै मनि विमला
त॥ १०॥ वाल॥ पद्धडिका॥ जग आदि
मध्य अवसांन एक॥ जग मोहत है
धौ विपु अनेक॥ तुम सदा सुद्ध सब
को समांन॥ किहि हनह तौ करुनानि
धांन॥ ११॥ श्रीराम॥ सुनि वासव सु
त बुधि बल निधांन॥ मै सरनागत नहि
न हे प्रांन॥ यह साठौ लै कर मां वता
र॥ तुम ह्वै हौ न व संसार पार॥ १२॥ रघु
राज रंक तै राजु कीन॥ जुग राज विरद

१ रा.चं.
७२

अंगद हि दीन ॥ नव किष्किंधा तारा समे
त सुग्रीव गए अपने निकेत ॥ २३ ॥ दो
हा ॥ कियो नपति सुग्रीव हति बालि ब
ली रनधीर ॥ गए प्रबर्षन अद्रि सो
लछमन श्री रघुबीर ॥ २४ ॥ त्रिभंगी ॥
देष्यो सुभ गिरिवर सकल सोभधर फू
लनि बर बहु फूलन फेरे ॥ संग सरभ रिक्ष
जन केसरि के गन मनहु धरनि सुग्रीव
घेरे ॥ संग सिवा विराजै गजमुख गाजै
परभृत बोलै चित्त हरै ॥ सिर सुभ चंद्र
क धर परमे दिगंबर मानहु हर अहि
राज धरै ॥ २५ ॥ तोमर ॥ सिसु सो लगे
सग धाइ ॥ बनमाल ज्यों सुरराइ ॥ अ
हिराज सो हिय काल ॥ बहु सीस सोम
नि माल ॥ २६ ॥ स्वागता ॥ चंद मंद दुति
बासर देषो ॥ भूमि हीन भुवपाल विसे
षो ॥ मित्र देषि पहला जनु हारे ॥ राजसा

जविनसीनहिहेसो ॥१८॥ दोहा ॥
पतिनीविनपतिदीन अतिपतिविन
पतिनीमंद ॥ चंद विनाज्यौं जामिनी
जामिनविनज्यौं चंद ॥१९॥ सो गन ॥
देषिएं मवरषारितु आई ॥ ऐमऐम
वकुधा दुषदाई ॥ आसपासतनमकी
छुवछाई ॥ एतिहै सकछुजो निनज्या
ई ॥१९॥ मंदमधुनिघनगाजे ॥ सूएता
ज्ञनु आवमवाजे ॥ ठोहै एचपला
चमके ज्यौं ॥ इंद्रलोकत्रियनाच
तिहै सो ॥२०॥ मानक ॥ सोहै घन
स्यामलघारघने ॥ मोहैतिनमेवग
पातमने ॥ संषावलिपीवकुधांज्ञ
लसो ॥ मानौतिनकौउगिलेवल
सो ॥२१॥ सोहै अतिसकसएसन
मे ॥ नानादुतिदीमतिहै घनमे ॥ हा
रावलिसीदिवहाएमनो ॥ वरषाग

सो

र० चं०
७३

मवांधियदेवमनो ॥ २२ ॥ नारक ॥ घन
घोरमनोदसहूंदिसधाये ॥ मघवाजनुस
रजेपेचढिआये ॥ अपराधविनासवके
ननताये ॥ तिनपीडनपीडितहोउठिधाये
॥ २३ ॥ अतिगाजनवाजनतुंदिभीमाने ॥
निरघातनसैवेपरिघानवषाने ॥ धनु
हैयहगैरमदाइननाही ॥ सरजाल
वैहैजलधारवृथाही ॥ २४ ॥ भटचातृ
कदादुरमोरनिवोले ॥ चपलाचमके
नफिरैषगषोले ॥ दुनिवंननिकोवि
परा अतिकीनी ॥ धरनीकहचंदवधू
धरिदीनी ॥ २५ ॥ तरुनीयहअत्रि
षीसुरकैसी ॥ उरमैहमचंद्रप्रभासम

हतौ

दैसी ॥ वरषानसुनौकिलकारी ॥ स
वजांननहैमहिमाअहिमानी ॥ वृ
अभिसारिनिसीसमुझोपरनारी ॥
सतमारगमेटनकोअधिकारी ॥ म

तिलोभमहांअतिछोटछुईहै॥ दूजए
जसुमित्रप्रदोषमईहै॥ २७ ॥ दूदूक॥ मो
हेसुरचापचारुप्रमुदितपयोधरभू
षनजरऊजोतितडितताराईहै॥ दू
रकोसुषमुषसुषमासमीकैनैनअ
मलकमलदलतिनिकाईहै॥ केसोदा
सप्रवलकेनकागमनहरमुकतासु
हंसकसवदसुषदाईहै॥ अंमरवलि
तमतिमोहै॥ नीलकंठजूकीकालिका
किचापचारुहरषहियेआईहै॥ २८॥ दो
हा॥ वरतेकेसवसकलविधिविषम
गाठनेमअहि॥ कुपुरिषसेवाजैपो
भहीसंतनतनिफेलहि॥ २९॥ चंद्रक
ला॥ कलहंसकलाविधिबंजनकं
जकछूदिनकेसवदेषिजिये॥ गति
अंननलोचनपाइनिकीअनुरूपक
सिमनमांनिलिये॥ दुहिकालकएल

ते

तिसोधिसवेद्रहिकैवरषाप्रिसदूरिकिये
अवधौविनप्रानप्रियारहिहैकहिकैं
नहिनूअवलेवहिये ॥ ३० दोहा ॥ बीतेव
रषाकालज्यौं आईसरदसुजानि ॥ ग
येअध्यारीहोतिज्यौं चारुचांदनीरानि
॥ ३१ ॥ मोटनक ॥ दंतावलिकुंदसमानगनै ॥ चंद्राननकुंतललचौरमनै ॥ भौंहै
धनषंजननैनगनो ॥ राजीवनिज्यौं
पदपानवनो ॥ ३२ ॥ हारावलिनीरजहीय
रमै ॥ हैलीनपयोधरअवरमै ॥ पाटीर
जुन्हाईअंगधरै ॥ हंसीगतिकेसवचित्त
हरै ॥ ३३ ॥ श्रीनारदकीदरसैमतिसी ॥ लो
पैतमताअपकीरतिसी ॥ मानोपतिदेवि
नकीमतकै ॥ सनमारगकीसमुझैगति
कौ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ लक्ष्मिमनदासीवृध्या
सीआईसरदसुजानि ॥ मनहुजगावनकौं
हमैबीतैवरषारानि ॥ ३५ ॥ कुंडलिया ॥ ता

तेनपसुग्रीउयेजेजे अवहीनात॥ कहि
येवचनसकोपसोकुसलनचाहेगा
त॥ कुसलनचाहेगानजाइ अववालहि
दूषी॥ कहुनसीनासाधुकांमवसएंम
नेलषा॥ रामनेदेषेचित्रलहे॥ सुषसंप
नजाने॥ मित्रकेगगहिवांहकानकीज
नुहेनीने॥ ३६॥ लछिमनकिषिधाग
षवचनकहेकरिक्रोधु॥ ताएनवस
मुआइयोकीनेववकुनप्रवोधु॥ ३७॥

॥दोहा॥

॥ सुग्रीम॥ दोधक॥ वालिलियेहनिमं
ननेवजा॥ त्योवासजिवानरराजअवे
ज॥ वारलेगेनकछुविरमाही॥ एकन
काउहेयामाहीं॥ ३८॥ त्रभंगी॥ सु
ग्रीवसघातीमुषदुनएनीकेसवसा
युधसूलेए॥ आकासविलासीप्रभा
प्रकासीनवहीवानरआइगये॥ दिसि
दिसि अवगाहनसीनहचाहनजूथप

जूथसवैपठये॥ नलनीलरिक्षपति अंग
दकेसंग दक्षिन दिसकौं विदा भये॥३९॥ बु
दोहा॥ बुधि बल विक्रम बास जुत साधु स
मप्रिय रघुनाथ॥ बल आनैं हनुमंत कौ मु
दरी दीनी हाथ॥४०॥ हंसछंद॥ चंडवरन
छंद धरन मुडगगन धावही॥ दक्षिन दि
सि दक्षिन दै लक्षिन दै पावही॥ वीर वर
न धीर धरन सिंधुतरसुभावही॥ नांम
परम धाम धरम रौं का मग्गा वही॥४१॥
अंगद अनुकूल॥ सियान पाई आप
धिविनासी॥ हा क्रमसवै सागर तट वासी॥
जौ घरे जे जे सकुच अनंना॥ मो हित छां
डे जनक निंदना॥४०॥ हनूमान॥ अं
गद रक्षा रघुपति कीनी॥ सोधि न सी
ता जलथल लीनी॥ आरसु छांडौ क
तउ आनौ॥ हौ कुकनतघी जौ सिख
मांनौ॥४३॥ अंगद इंडका॥ जीएनज

त

प

टायुगीधुधंनऐकुजिहरोहिएतेनवि
रथकीनोसहीनिजप्रांनहांनि॥हने
हनिमंतवलिवनतुमपंचजनदीनेह
तेनूपुरकछुकनरह्पजांनि॥आएति
पुकारतश्रीरामनांमवाएवारलीनोन
छिंडाइतुमसीताअतिभीतमांनि॥गा
रुदुजराजप्रियकाजनपुकारलोगेभो
गवेनरकघोरवोरकेअभयदांनि॥४
४॥दोहा॥सुनिसंपातसपक्षहैरांम
चरितसुषपाइ॥सीतालंकामांअ
हेषगपतिदईवता३॥४५॥दंडक॥
हरिकेसोवांहनकेविधिकेसोहम
हंसुलीकसीलिषतनभयंपाहनके
अंककी॥तजकोनिधांनएममुद्रि
काविमांनकेधौलछिमनकोक्ष
टोवानएवनतिसंककी॥गिरगजंग
रेतेउडानीसुवरनेआलिसीतापरपं

कजसदाकलंककंरकको ॥ हवाहीऐसी
क्षयिकेसोदासञ्श्रासमानमेकमानेके
सोगोलाहनूमानचलेलंककको ॥ ४६
॥ दोहा ॥ बीचगयेसुरसामिलीश्रोरुश्रं
गिनीनाए ॥ लीलिलियेहनिमंननतिहि
कोढउदरकोफाए ॥ ४७ ॥ मैनाकनाक
पतिसत्रकेउइितज्योंनिवलनवंत ॥ श्रं
तरिक्षहीलक्षिपदञ्श्रक्षक्षियोहनु
निमंत ॥ ४८ ॥ नारक ॥ कछुएतगयेक
रिदंसदसासी ॥ पुरमाझचलेवनवा
ज्ञविलासी ॥ जवहीहनिमंतचलेतजु
संका ॥ त्रियह्वैमगुणकाहीनवलंका ॥
४६ ॥ लंका ॥ कहिमोहितिलंघचले
तुमकोहो ॥ श्रतिसूक्षमरूपधरेंम
नमोहो ॥ पठयेकिहिकारनकोकन
चलेहो ॥ सुरहोकिधोंकोउसुरसम
लेहो ॥ ५० ॥ हनूमान ॥ हमवानरहैं हे

घुनाथपरीए॥ तिनकीजहनीहिवि
लोकनआए॥ लंका॥ हनिमोहिमसृ
मतिभीतजेये॥ हनूमान॥ नरुनीहि
हेनेकवनेसुधपेये॥ ५१॥ लंका॥ तुम
मारेहियपुरपेठनेयेहो॥ हठकोठिओ
घाहीयेकजेहो॥ हनिमंतहठीवहथा
परमारी॥ नजिहठहमेहेनवनेवानारी
॥ ५२॥ धनदपुरीहोएवनलीनी॥ वहुधि
धिपायनिकीसभोनी॥ चतुएननचि
नचिंननकीनो॥ वरुकरुनाकेमोक
हदीनो॥ ५३॥ जवदसकंठसियाहर
लेहे॥ हरिहनिमंतविलोकनजेहे
जवबहनाहिहेनेनजिसंका॥ नवप्र
भुहोइविभीषनलंका॥ ५४॥ चल
नलगोनवहीयहकीजे॥ मनकस
रीरहयावकदीजे॥ यहकहिजानभ
रवहनारी॥ सवनगरीहेनिमंननिहो

री॥जवहीएवनसोवनपायो॥मनिम
यपालिककीछविछायो॥तवतरुनी
वहुभांतिनिगावे॥विचविचआवजु
बीनवजावे॥५६॥मनकुचिंताएमांन
नहुसोहे॥चहुंदिसिप्रजनवधूनिधिमो
हे॥जहजहजाइतहीदुषदनो॥सिय
विनदेषिसिगरेघरसूनो॥५७॥भुजंगप्र
यात॥कहूंकिन्नरीकिंन्नरीलैवजावे॥
सुरीआसुरीपांसुरीगीतगावे॥कहूंज
छनीपछनीकोंपढावे॥नगीकंन्लिका
पंन्नगीकोनचावे॥५८॥पियेएकहा
लाहुहेएकमाला॥नचेचित्रसारीव
नीएकवाला॥कहूंकोककलाकाककी
काकोकरू॥पढावेसुवालैसुकीसार
काको॥५९॥फिरेंदेषिकेएजसाला
सभाको॥रहीपूरिकेवारिकाकीप्रभा
को॥फिरवोरचौहूंचिनैएद्वगीता॥वि

लोकी भले सिंसिपामूलसीता॥६०॥
धरेएकवेनी मिलीमेलसारी॥मना
लीमनोयंकसाभाधिकारी॥मह्हांए
मएंमेरदीनवांनी॥चकुंरोएहेएष
सीदुष्पदानी॥६१॥ग्रसीवुद्धिसौचित्र
चिंतातमानो॥किधौजीभंदद्दावलीमे
वषानो॥किधोघीकेराहनारीनिली
नो॥कला चंदकी चारुपीयूषभीनी॥कि
धोजीवकीजोतमायासौभीनो॥कुविद्या
निकमध्यविद्याप्रवीनी॥मनोसंबरा
स्त्रीनिमेकांमवांमा॥हनूमंतयेसील
बीएंमएंमा॥६२॥तहांदेवदाषीदस
ग्रीवआये॥सुनोदेविसीतामहादु
ष्पपाये॥सवेअंगुलेअंगरीमेदुराए
ये॥अधोद्रिष्टिकेअसुधाराअन्हा
ये॥६४॥रावन॥सुनोदेवमोत्सपो क
छूद्रष्टकीजे॥इतासाचुतोएमकाजे

नि

नकीजे ॥ वसेदंड कानन्यंदेषोनकोऊ
जुदेषेमहां वावेरोहोहिसोऊ ॥६५॥ कान
घ्नौकुदानाकुकंन्याहिचोरे ॥ हिनूनग्न
मुंडीनकोजोसदाहे ॥ अनाथ्येसुनेमे
अनाथ्यानसारो ॥ वसेचित्तदंडीजटीमु
डधारी ॥६६॥ तुम्हेदेविदूषोहितूनाहिमां
ने ॥ उदासीननोसोसवैनाहिजाने ॥ महा
निर्गुनीनांमनाकोनलीजे ॥ सदादास
मोपैक्रपाक्योंनकीजे ॥६७॥ अदेवीनि
देवीनिकोहाकुएनी ॥ कोसेववानीम
घोनीमडानी ॥ लिषेकिंलएकिंन्चरी
गीतगावे ॥ सुकेसीनचेउर्वसीमानपा
वै ॥६८॥ शचीसीताजूमातनी ॥ तिनवीच
देवीनीसियगंभीरवांनी ॥ दसमुषके
तूंकोनकीराजधांनी ॥ दसास्यसुतदाषी
रुद्रब्रंम्हानभासे ॥ निसिचरवपुएतूं
क्योंनस्योमूलनासे ॥६९॥ अनित्त्व

धनेरषोनेकुनाकीनजाकी ॥ बलबगे
धाएकोसहै निष्तताकी ॥ बिडकनघो
भक्षिकेवायुजीवे ॥ सिवसिरससिश्री
कैदुष्टकैसेसुछीवे ॥ ७० ॥ डीठगुरिस
ठहांनेभागतोलोअभागे ॥ ममवचन
बिसंपीसर्पजौलौनलागे ॥ बिकलसकु
लनाथ आसुहीनासुदेषोसुनेऐ ॥ नि
परमतकतोकोराषमोरेनमेऐ ॥ ७१ ॥
॥ दोहा ॥ अवधिदईद्वैमासकीकेहो
राषिसिनबाल ॥ जौंसमुझेसमझा
इ जौजुगतेछुएनितनेकाल ॥ ७२ ॥
॥ छंदा ॥ दृषिदेषिकैअसोकराजपु
त्रिकांकेहा ॥ देहिमोहिबेगअगि आनि
अंगहूरेहा ॥ बेएपाइपवनपुत्रडारि
मुद्रिकादई ॥ आसपासदेषिकेउठा
इहाथकैलई ॥ ७३ ॥ तोमर ॥ कछुल
गीसियपीहाथ ॥ यह अभिनिकेसोना

ए॰च॰
७९

थ॥ यह कहैं लषिन वनारि॥ मनि जारित
मुदरी आरि॥ ७४॥ जव वांचि देषो नाउ॥
मनु पैपैंसें भम भाउ॥ आवा लैनै रघु
नाथ॥ यह धरी अपनै हाथ॥ ७५॥ विहु
रि सु कौन उपाउ॥ किहि आंनि मोहि दि
ठाउ॥ सुधि लहै कौन उपाउ॥ अवि का
हि पूछन जाउ॥ ७६॥ चहुंधा चितै सव
त्रास॥ अवलोकियो आकास॥ नर सा
षवे मो नीठि॥ त्रयपरै वांनर डीठि॥ ७
७॥ सीताजू॥ नव कही कौनू आस॥ तु
र अमुरमो मन भाहि॥ कै जक्ष पक्ष
विरूप॥ दसकंठ वांनर रूप॥ ७८॥ क
हि आपनौ नूं भेद॥ अति चित्त उप
जतु षेद॥ कहि वगि वांनर आपनै नतो
हि देहौ श्राप॥ ७९॥ वा॥ नाराचिका॥ करि
जोरि कै हौ हौ पवन पूत॥ जिय जांनि जि
ति न रघुनाथ दूत॥ रघुनाथ कौ नद

सरघ्यनंद॥ दसरथ्थकौनतनअजप
चंद॥ २०॥ किहिकारनपठयेरिहिनिके
त॥ निजुल्लेनेदेनसंदेसहेत॥ गुनरूप
सीलसोभासुभाउ॥ कछुरघुपतिकोल
छनवताउ॥ २१॥ हनूमांन॥ अनिज
दिपसुमित्रानंदभक्ति॥ अतिसेवक
अतिसुरसक्ति॥ अतिजदपिअनुज
तोयोसमान॥ अतितदपिभरथभा
वतितिहारीन॥ २२॥ ज्यौंनारायनउरश्री
वसंति॥ त्यौंरघुपतिउरकेछुहुतिल
छन॥ जगजितनेहैसवभूमिभूप॥
सुरअसुरनपजनतरामरूप॥ २३॥
॥ सीताजूनिसिपालका॥ मोहिपर
तीतिहहिभांतिउपजेनही॥ प्रीति
कहिधौंसुनरवांनरकैयोभई॥ वा
नरवनेपरतीतिहारियोदई॥ अ
व अनवाउलाउमुदरीनई॥ २४॥

॥दोहा॥ अश्रु वरषि हियरां हरषि क
हु सीता सुषदैन सुभाइ॥ देषि देषि प्रि
य मुद्रिका वरनेनै हैं वहु भाइ॥ ८५॥ पदि
टिका॥ यह सूर किरन तम दुष्य हारि॥ सस
कन्या कि धौं उर सीतकारि॥ कलंकी रति
सी सुभ सहित नाम॥ किधौं राजसि
रीम हत जो राम॥ के नारंग न उर समल
संत॥ सुभ अंकन ऊपर श्रीवसंत॥ वर
विद्या सी अनंद दानि॥ जुत अक्षरा पर
मनसि वामानि॥ जनु माया अक्षर स
हित देष॥ कै पत्री निश्चय दानि ले
ष॥ प्रिय प्रती हारिनी सी निहार॥ श्री
राम जय उच्चार कारि॥ प्रिय मांनौ
पठई सषि सुजान॥ जग भूषन कौ भू
षन निधांन॥ निजु [illegible] आई हम को
सी षेदैन॥ यह किधौ हमारो मरम
लैन॥ ८६॥ ॥दोहा॥ सुषदा सिषदा

अर्थ्य दीरसदा जस दीनार ॥ एसचंद्र
की मुद्रिका किधौ परम गुरुनार ॥ ९० ॥
वहुवर्नो सजि हसि प्रिप्रानन मगु नह
ए प्रमान ॥ जगमांरग दरसावनी
सूरज किरन समान ॥ ९१ ॥ दोधक
कहु कुसल मुद्रिके मै एम गान ॥ सु
नि लछिमन सहित समान जान ॥ य
हुत्र देहि न बुद्धिवंत ॥ किहि कारन
कहि हनमंत संत ॥ ९२ ॥ हनूमान
दोहा ॥ तुम पूछत कहि मुद्रिका मौ
न हेत इहि नाम ॥ कंकन की पदवी
दई या कह तुम बिन एम ॥ ९३ ॥
॥ दंडक ॥ दीरघ दरीनि बसै केसोदा
स केहरी ज्यौं केहरि को देषि वनक
री ज्यौं कपत है ॥ वासर की संपति
उलूक ज्यौं न चितवत चकवा ज्यौं
चंद चितै चौगुनौ चपत है ॥ केकी

सुनिम्यालीजैसो विज्ञानजानघन
स्यांमघननकी घोरजीवजावासेज
रतेहे॥ भैया जैसोभवतवनजोगीजैसें
जगतरैनिसांकनजैसोंनामसुषनेऐ
शेररतेहै॥ ८४ ॥सुंदरी॥ राजसुताइ
कवातसुनोपुनि॥ एंमचद्रमन
माअकहोगुनि॥ रानिदीहजमुराज
जनीजनु॥ जानुनानिननुज्ञाननु
हेमन॥ ८५ ॥दोहा॥ दुषुदेषेसुष
होइगोदुष्यनसुष्यविहीन॥ जैसात
पसीतपसानिकरहेनपएमपदली
न॥ ८६ ॥वरषावैभवदेषिकेरवी
सरदसकांम॥ जेसेरनैमेकालभ
टभैरिभैरिजनुवांम॥ ८७ ॥दुष्पदे
षिकरदेषिहोतुवसुषआनंदकंद
तपनतापतपि है सनिसजेसेसीत
लचंद॥ ८८ ॥अपनीदसाकहावकहोदी

पटसासी देहि॥ जानिज्ञानिनिसवा
सहिंकेसवसहितसनेह॥ दो॥ सुगति
सुक सनुनेनसुनिसुमुखसुंदतिसुसे
न॥ दासावैगोवगहीतुमकीसापि
जेनेन॥ १०५॥ गीतका॥ कछु जनानि
द्रदुप्रनीतनीनेरामचंद्रहि आवही॥
सुभसीसकीमनिदईयहकहिसु
जसतुवगुनगावही॥ सवकालहू
जो अमर अति अहुसमाजप
जसुपाइहो॥ सुत आजतेरघुना
थके तुमपरमभक्त कहाइहो॥ १
०१॥ चकुरी॥ कजोपेपिपगतो
रउपवनकोब्रिक्षउपारियो॥ त
ववधियोतहजंबुमालीदूतजा
इपुकारियो॥ उठिदोरियोमनक्रो
ध अतिकसिधकपिजवजानि
यो॥ वहु आइयोतिहिटोरतव

हीसंकनहिउरआनियो॥१०२॥अ
निजोरसोहनिमंतदेषिअनंतबांन
नमारियो॥मनमानियोनहिहेतु॥अ
मतबकपिसकलसेनसघारियो॥पु
निजंबुमालीसोभिरलरीजुगल
वाहुउषाकै॥मरपेटकेअभिला
षसोपुमेचरीनीडारिकै॥१०३॥पी
येतिराबनकीसभांतिहिदेषिकै
पहिचांनियो॥तहपंचसुतमंत्रीनि
केउठिसोसुआइसुमानियो॥तन
त्रीनकसआसवांनधनतिदिकाल
लेतिगएतहा॥तेदूतपूतसमेतसो
दाजंबुमालियपेतहा॥१०४॥वषे
निवानसमानघनतनभेदियोहनि
मंतको॥तबधारिपोकपिनादक
रकैरोककोमयमंतको॥पठनाले
लेसिगेरहेनेउरसालरावनके

भयो॥ तिहिकाल-अक्षकुमारवो
लिप्रहस्तकों-आइसुदेसो॥७०५॥न
राजछंद॥ जुप्रहस्तहस्तले हथ्या
रि-आपने॥ कुमारि-अक्षतिक्षवां
नछांडियौ घनेघनें॥ भयोकपीस
क्रुधसुध-अक्षशरीरयोसघारि॥मु
ष्टमारियोप्रहस्तसीसमंतवेप्रचा
रि॥७०६॥दोहा॥ मारे-अक्षसुनें
जहीरावंन-अतिपछिताइ॥इं
द्रजीतसोंयहकही वानरजियन
नजाइ॥७०७॥तोटक॥सज
केइंद्रजीतगयेजवही॥ हनुमंत
सोजुध्धजुरेतवही॥ बलिवंतग
नोतवहीहियो॥ मनमें गुनएे
कउपाउकियो॥७०८॥तोमर॥ तव
इंद्रजीतविलोक॥ विधिपांसि
दीनीएक॥ कपिइंद्रलतेजहिजां

रा.चं.
८२

नि॥ बहसीसल्लीनीमानि॥१०९॥
गीतका॥ कजोरिपुगयरतीरिउपव
नकोरिकिंकरमारियो॥ जंबुमाली
मंत्रसुतअरुपंचमंत्रसघारियो॥
रनमारिअक्षकुमारीबहुविधि
इंद्रजीतसोजुद्धके॥ पुनिब्रंम्हअ
स्त्रप्रमांनमानिसुवसभामनसु
द्धके॥११०॥ इतिश्रीमत्सकललोक
लोचनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्र
चंद्रकायांहनुमनवंधनवर्ननोनाम
त्रयोदसप्रकासः॥१३॥ दोहा॥ प्र
हस्तैतरसैप्रकासमेंहैं हेलंकादाह॥
सागरतीरमिलानकोकरिहैरघुकु
लनाह॥१॥ विजय॥ रकपिकोन
नूअक्षकोघातककदूलववलीरघुनं
दनजूको॥ कोरघुनंदनरात्रसएख
रदूषनदूषनभूषनभूको॥ साग

रकैसेंतेरे जैसे गोपद काजु कहासि
यचोर हि देषै॥ कैसे वधायो जु सुंदर
नेरी छुशी दूग सौ वनपानक लेषै॥ २॥
॥चामर॥ कोरि कोरि फेरि फेरि ता
जजैनमारिये॥ कारि कारि फारि
फारि मांसु बांरि डारिये॥ षाल षे
चि षेचि हांड भूंजि भूंजि षाउरे॥ पी
रि टांगि मुंड हंड तैल तेल राइ जाउरे॥ ३॥
॥विभीषन॥ दूत मारि जे न राज रे
स छोडदीज इ॥ मंत्री मित्र पूछि के
सु और दंड दीज इ॥ एकं कुमारि के
वडे कलंक लीजई॥ वूंद सू षिगो व
हाम हा समुद्र छीज इ॥ ४॥ न लि ने
ल वेगि छोरि जोरि जोरि बीस सी॥ ले
अपार एऊ नदं नसू नसोक सी॥ पूं
छु भवनपूत कीस वार वारि दे नहीं॥
अंग को घरा इके छुराइ जात भो

नही॥५॥चर्चरी॥धांमधांमनिअग्नि
कीबहुज्वालमालविराजही॥पव
नकीझकझोरतेअमरीअरेषनभ
बही॥बाजबारनसारकोसुकेमाजो
रनभाजही॥कुद्रजों विषदाहि अ
वतिछोउजानननलाजही॥६॥भुजंग
प्रयात॥जरीअग्निज्वाला अटासे
नदेषो॥सरल्का लकेमेघसंध्या
समेषो॥लगीज्वालमालावलीनी
लएजे॥मनोस्वर्नकीकिंकिनीनाग
साजे॥७॥नसेपीतछ्वावलीज्वाल
मानो॥हूंकेबाटनीलंकवछोजमानो
जौरेजूहनारीचढीषिन्नसारी॥मनोचे
नकामेसतीसमधारी॥८॥कहूंरैन
चारीगहेंजोनिगोठे॥मनोशीसरेषा
गिनीमेकामडोटे॥कहूंकामिनीज्वाल
मालानिभोरे॥नजेनीलसारीअलंका

रोरे॥ चै॥ कहूंऔरएनेवैधमछं
ही॥ ससीसूरमांनोलसेमेघमाही॥
जैसेसहसालामिलींगंधमाला॥
मिलेञ्चारिसानोलगीदवज्वाला
१०॥ चलीभागचौंहूंदिसाराजधांनी
मिलीज्वालमालाफिरैदुष्यदांनी
मनोइसबानाउलीलालललोलै॥
सवैदैसजायानिकेचित्रडोलै॥
११॥ सवैया॥ लंकलगाइदईहन
मंतविमांनवचेअनितब्रमुषीहूं॥ पा
निफटैउचैटवकूधामनिरानीरटेपा
नीपानीदुषीहूं॥ कंचनकोपिघलो
पुरपूरपयोनिधिमेपसरेनसुषीहूं॥
गंगजारमुषीगनिकेसोगिरामि
लीमांनोअपारमुषीहूं॥ १२॥ दो
हा॥ हनमंतलगाईलंकसववचे
विभीषनधांम॥ जेोंआरनोदपवे

रा. चं.
८५

रैसैपंकजपूरवजोंम॥ १३॥ संजुता॥
हनुमंतलंकलगाइकै॥ पुनिपूंछसिं
धुवुआइकै॥ सुमदेषिसीतहपापरे
मनिपाइ आनदजीभरे॥ १४॥ संदे
सयहसीताकहे॥ पुछ्रजसुनतछिन
दहो॥ इक अंषगहिहितोकियो॥ न
चजाइकै आसनलियो॥ १५॥ दोहा॥
संदेसपाइसुषपाइ जथनचहिचले
हनुमंत॥ पुष्पकासिदेवनिकरीसाग
रतरनअंनंत॥ १६॥ संजुता॥ इहपार
अंगदभेटियो॥ सवकेसवेदुषमेटि
यो॥ जैसीववरवीताभसवे॥ सिगरीक
हीतेसीतवे॥ १७॥ अंगदतोमर॥ सी
तानलायेवीर॥ मनमाछउपजत
पीर॥ आवेसोकोनउपाइ॥ पटपुरि
बछीवकाइ॥ १८॥ जवरामधरिहैचा
पु॥ रनरावनेसैनाप॥ वरिवेसुघनस

रधार॥लंकावहनिनहिवार॥१९॥व
लिअंगदादिकवीर॥तवआइयेव
लवीर॥सुभवागनेसुग्रीव॥फल
दृषक तपोजीव॥२०॥तवषाइयेफल
फूल॥रहियेसुकेवलमूल॥तवदे
षिदधिमुषआइ॥वहमारियेकपि
धाइ॥२१॥अंतेसुवालकुमार॥ध
रिमारियोवकुवार॥भगिलेगयेनि
जजीउ॥जहवैठियेसुग्रीउ॥२२॥तो
टक॥उहिवानसैवनपसेतिनई॥व
कुभांतनअंगदकीछिठइ॥सुनिकै
हसिरामकहीनवही॥सियसाधुवु
लाइसुनोअबहो॥२३॥दोहा॥लै
आयेसीतापषवरतोतैमनअतिफू
ल॥उनकोवेगवुलाइयोनरसिंधीर
योचितभूल॥२४॥संजुता॥रघुना
थपेजवहीगये॥उठिअंकलाउनको

भए॥ अवमेकहाकानीकरी॥ सिरपाइ
कीधरनीधरी॥ २५॥ दोहा॥ चिंतामन
सीमनदई रघुपतिकरहनिमंत॥ सी
ताजूकोमनुएगयोजोअनुएगअनंत
॥ २६॥ दोधक॥ श्रीरघुनाथजहीम
नदेषी॥ जीमहभागरसासमलेषी॥
फूलउठोमनुज्योंनिधपाई॥ मांनहु
अंधहिंडीठसुहाई॥ २७॥ तामरस
मनिहोहिनहीमनुआरसिसाकौ॥
उरमेंप्रगटोतुमप्रेमदियाको॥ सबभा
गिगयोजुहतोतमछायो॥ अबमेंअ
पनेमनकोमतुपायो॥ दरसैहमकौंव
रहंदरसाअे॥ उलागतिआनिवयो
इलगाये॥ कछुउत्रादेतिनहीचुप
साधी॥ जियजानतिहेहमकोअप
राधी॥ २८॥ हनूमान॥ कछुसीपदमा
कहिमोहनआवे॥ चहकाजटवा

तसुनेदुषपावे॥ सासोप्रतिवासरवा
सलागे॥ तनघाउनहींमनप्राननन
षागे॥३०॥प्रतिअंगकोसगहीदिनना
से॥ निससोमिलवाउतदीहउसासे
निसिनेकहीनीदनआवतजानो॥र
विकीछविज्योअधरातवषानो॥३१
॥दंडक॥ भागिनीज्योभवतिरहतिव
नवीथिकानिहंसनीज्योमदुलम
नालिकावहतिहे।पीउपीउरदति
रहतिचितचातज्योंचंदचितचक
हीज्योचुपह्वैरहतिहे॥ हरिनीज्यो
हेरतिनकेसरीकेकाननहूंकेकासु
निव्यालीज्योविलानहूंकेहतहे॥
सुनहूनपतिरामविरहतुम्हारेअ
सीसरतिविसीताजूकीमूरतिलग
तिहे॥३२॥सीताजू॥दोहा॥ ॥श्री
नसिंघप्रहलादकीवेदनगावतगा

य॥ गये मासु दिन आसु ही अंटीह है
नाथ॥ ३३॥ आगम कनक कुरंग कि बात
कही सुषपाइ॥ कोप अनि लिज रिजा
उ जिन सो क समुद्र समाइ॥ ३४॥ श्रीए
मदंडक॥ सा चौ एक नाम हरली नेम
वटु षहीं आनं नाम परिहीं ठाए हो॥
वानाहोहु तुम मेरवानरस मवली
मुष नाही सुखली निज गाए हो॥ सा
षा मृग नाही बुधि वल निके सा षा
मृग कि धो वेद साषा मृग के सब को भा
ए हो॥ साधु हु निमंत वलि वंत जम वं
ततु म गाए एकं कामको अनेग काआ
ए हो॥ ३५॥ हनूमान॥ तोमर॥ गई मु
द्रि का ले पार॥ मन मोहि ल्पारी वार
ज ठव्रक्ष तोरे दीन॥ मे कहा विक्रम की
न॥ ३६॥ अति हते वाल कु अक्ष॥ ले
गये बांधि विपक्ष॥ मे कह कोवलक

अतिमनकजारीलंक॥ ३७॥ तिथिविजयदसमीपाइ॥ उठिचलेश्रीरघुराइ॥ हरिजूथजूथपसंग॥ विनपक्षकेतिपतंग॥ ३८॥ समझैनसूरप्रकास॥ आकासवलितविलास॥ पुनिरिक्षलक्षिनसंगजनुजलधगगनतरंग॥ ३९॥ सुग्रीव॥ दंडक॥ केसौदासराजचंद्रसुनौराजारामचंद्ररावरीजवहिसेनाउचकिचलतिहैपूरतिहैधूरिभूरिधसीहि आसपासदिसिदिसिवरषाजैवलनिवहतिहै॥ पन्नगपतंगतरुगिरिगिरिराजराजमगराजनकेमदनदलतिहै॥ जहांनहांउपरपतालपयआइजातुपुरइनकेसोपांनुपूरुमीहलतिहै॥ ४०॥ लक्षिमन॥ भारिकेउतारवेकौअवतरेरामचंद्रकिधौकेसौदासभूरिभारथप्रव

हल॥ दृढतैहैतखगिरैगनगिखर
सुखेसखसरवरसिंधकेसकलजल॥
उकिचलतहाटिदचकनिदचकनम
चकेसचकतभूतलकेथलथल॥
लचकलचकिजातसेसकेअसेसफ
नभागगईभोगवतीअतलवि
तलतल॥ ८१॥ गीतका॥ रघुनाथजू
हनिमंतऊपरसोभिजैतिहिकाल
जू॥ उदयसोभनअंगमानहुसरासुभ
विसालजू॥ सुग्रीवअंगदसंगलक्ष
मनाद्धिजेवहुभातजू॥ जनुमेरमंदर
अंगअद्भुतचंदराजतरातिजू॥ ८२॥
॥दोहा॥ चलसागरलछमनसहि
तकपिसागरनधीर॥ जससागर
रघुनाथजूमेलसागरतीर॥ ८३॥
विजय॥ भूतिविभूतिपियूषहु
कोविषईसमसरीरकैपापविमोहे॥

हेकिधोंकेसवकासिवकोषसदे वदे
वनिकोमनुमोहि॥ संतहि॥ किव
सेहरिसिंतनसोभाअनंत केहैकवि
कोहै॥ चंदननीरतरंगतरंगितनाग
गरकोऊकिसागरसोहै॥ ८८॥ गीत
का॥ जलज्वालकालकरालमाल
तिमंगलादिकसोवसे॥ उरलोभक्षो
भविमोहकोहसकामज्योषल
कालसे॥ वहसपदाजुतजानि अ
अतिपातकोसमलेषिये॥ कोउ
माननोअहपाहुनोनहिनीरपाव
नदेषिये॥ ८९॥ इतिश्रीमत्सकललो
कलोचनचकोरचिंतामनश्रीरामचं
द्रचंद्रकायामसमुद्रदरसनवर्णनंना
मचतुर्दशप्रकास॥ १४॥ रावन॥ भु
पालभूतलपालहौसवमंत्रमूल
तिजानिये॥ वहमंत्रवेदपुरानउ न्त

ममधमाधमजांनिये॥ करिजौजुका
जुसुआदिउत्तममधमाधमजानि
ये॥ उत्तमधम्आदिअनुत्तमैतिगएति
काजवषांनिये॥१॥रावनस्वांगत॥
आजुसोहिकरनेसुकहोहु॥ आपुमा
अजानिरोमुगहोहु॥राजधर्मकाहि
जेछुविछाए॥रामचंद्रनहिजौलगि
आए॥ प्रहस्त॥वांमदेवनमकोबर
दीनो॥ लोकलोकसिगरवसकीनो॥
इंद्रजीतसुतकौजगमाहि॥ रामद
वनरवानरकोहि॥३॥निकुंभ॥ म
तुपासभुजजोरनितोरे॥कालदंड
तमसोकरलोरे॥कुंभकरनलघु
सोदरजोकि॥ ओरकहामनआवत
ताके॥४॥कुंभकरनचर्नबंदी॥ आ
पुनसवजाननकहोनमाननकी
जेजोकछुमनभावै॥सीतानमआ

नीमीचुनजांनीअवकोमंत्रवतावे॥
ज़िहिवलजगजीतोसवसुअजीतीता
सौकह्यवसाही॥अतिभूलिगएत
वसोचुकरतअवजवसिरऊपरआ
ही॥५॥मंदोदरीविजय॥रामकीवां
मजुल्यारेचुराइकैलंकमेंमीचुकी
वेलिवईज़ु॥क्योरनजीतहुगेतिन
सोजिनकीधनरेषुगहीनतरीज़ु॥वी
सविसेवलिवंतहुतवहुत्तीतियकै
सवरूपरहीज॥तोरिसरासनसंकर
कोपियसियस्वयंवरक्योनलहीज़ु
६॥वालिवलीनवचोपरषोरहिंक्यो
वचिहोनिजआपनीषोरहि॥केस
वछीरसमुद्रमथोकहिकैसोनवांध
हैसागरथोरहि॥श्रीरघुनाथगनो
असमर्थनदेषिविनारथहाथिय
घोरहि॥तोरसरासनसंकरकोजि

हिसोभकहातुवलंकेतारहि॥७॥मेघना
द॥दोहा॥मोहिमुआइमुदहुप्रभत्र
भुवनपालप्रवीन॥रामसहितसवजगु
कसोनरवांनकरहीं॥न॥-॥विभीषन॥
माटक॥कोहेअतिकायजुदेषिमवेक
कुंभनिकुंभवृथाजुवके॥कोहेइंद्रजीत
जुवातकेहकोकुंभकरनहेष्यारगहे॥२
देषरघुनाथनधीरधोजेसेतरल्लव
वातकेर॥जोलोहरिसिंधतेरीतेरे
तोलोसियलेकिनपाइपेरा॥१०॥जो
लोनलनीलनसिंधतेरतोलोहन
मंतनद्वसिपेर॥जोलोनहिअंगद
लंकहही॥तोलोप्रभमांनहुवातके
ही॥१॥जोलोनहिलक्ष्मनवांनध
रे॥तोलोसुग्रीवनक्रोधभरे॥जोलो
रघुनाथनसीमहे॥तोलोप्रभलेकि
निपाइपेरा॥१२॥रावनकलहेस॥अ

रिक्षाजलाजत्तजिकैउठधायौधकुतो
हिमोंउरवावनआयो॥ तजिएमनाम
पहवोलुउचाम्यौ॥ सिरमांअलातप
गलागतमाम्यौ॥१३॥ तवहाइवाहिउ
ठिदेहिसम्हारो॥ लियअंगसमामेत्रि
षसवचारो॥ तजिअंधवंधदसकंध
उडांनो॥ रामचंद्रजगतीपतिजांनो॥१४
दोहा॥ मंत्रनिसहितविभीषनैसोभा
वठीअकासजनुअलिआवतभांन
पतिरघुपतिपयिनिपास॥१५॥ ताम
रसु॥०॥ निकटविभीषनआवतजा
नै॥ कपिपतिसोतवहीगदानैं रघु
पतिसोउनजाइसुनाए॥ दसमुषसा
दरसेवहिआए॥१६॥ राम॥ वलवुधि
वंतसवेतुमनीके॥ मतसुनिलीजहु
मंत्रनिहंके॥ तवजुविचारपरेसोई
कीजे॥ सहसासत्रुनआंवनदीजो॥१७

रा॰
९२

अंगद॥ एवनकौसहहमसांचिहूसोदर॥ आपुवलीवलिवंतलियेआ॥ तबसवसहहेमेहतिनेसच॥ काजुकहातिनसोहमसोअव॥ १९॥ जामवंत वंधविरोधुहमेइनसोअति॥ क्योमिलिहेतिनसोहमसोमति॥ एवनकोनतजौतवहीइनि॥ सीयहरीजवहीउहिनिर्गुनि॥ १॥ नलवाच्य॥ चारपठइनकोमतुलीजे॥ औसिहीकैसेविदाकरदीजे॥ एषिजेजोअतिजानिजेउतम॥ नाहिमाषिपेछाउसवेभम॥ २०॥ नील सांचिहूजोयहहेहेसानोगनि॥ एषियएजिवलोचनमोमतु॥ भीतुनएषिएनोअतिपानकु॥ होहिजोमानपितासुतघातकु॥ २१॥ हनूमान॥ हालीला॥ जानोनविभीषनएषसरामराज॥ भ॥

प्रहलादनारदविसारदवुधसाज॥सुग्री
वनीलनलअंगदजामवंत॥राजाधि
राजवलिसमांनसंत॥२२॥दोहा॥कह
ननपाईवातसवहनूमांन।वलिवांन
कहेविभीषनवीचहींसवहिसुनार
प्रमांन॥२३ सवैया॥दीनदयालकहा
वतहेसवहेअतिदीनदसांगहेगाढे॥
रावनकेअघवोघमेंराषमवूडतहेवा
हगहिकाढे॥जोगजकोप्रहलादकी
कीरतसोहीविभीषीनकेजसुवाढे॥
आरतवंतपुकारसुनोकिनआरतिहे
जुपुकारतठाढे॥२४॥केसवआपसदा
सहेदुषपेदासनिदेषसकेनदुषारे॥
ताकोभएतिहिभांततहीतुमजेहीज
हीजिहिभांतिसम्हारे॥मोहिवार|वि
चारकहाकवहूंनहिकाहूकेदोषवि
चारे॥वूडतहोमहिमोहसमुद्रमे

॥

प॰
९३

एषतुकाहेनराषनहोरे॥२५॥हरिलो
ला॥श्रीएमचंद्रअतिआगतिवंत
जंन॥लीनैवुलाइसरनागतिदुष्य
दंन॥लंकेसआहुचिरजिषहलं
कधांम एजाकेहाउजगलोलगि
एमवांम॥२६॥तोटक॥जवहीर
घुनाइकवांनुलिसो॥सवसेषवि
सेषतसिंघुहिसो॥तवहीदुजरूप
सुआइसो॥नलसोतुच्छेपरस्
त्रुदसो॥२७॥दोहा॥जहतहांवां
नरसिंधमैगिरिगनडारतआन
सवरहेभरिपुरमहिरावनकेदु
षदान॥२८॥तोटक॥उछलेजल
उच्चअकासचले॥जलजोरदिसा
विदिसांनिदले॥जनुसिंधअका
सनदीअकि॥वहुभांतमनावति
पापरिके॥२९॥सवभोमनविमान

९३

तिभीतिगए॥ जलजोभए गगगम
ए॥ सुखसागरमानहुजहभेप॥ सिग
रेपरभूषनलटिलए॥२०॥ अतितुक्ष
लिछिछत्रकूटछुपे॥ पराएवनकोज
लजोरभपै॥ तवलंकहनेवलला
इदई॥ नलमानहुआरवुयाइलई॥
२१॥ लगिसेतुजहांतसोभगहै॥ सरि
तानिकेफरीप्रवाहवहै॥ पतिदेवन
दीरतुदेषिभली॥ पितुकेघरकोजनु
लसिचली॥ २२॥ सवसागरनागरसे
तुरचौ॥ वरनैमहिमाजतसकसचौ
तिलकावलिसीसुभसीमलसै॥ म
निमालकिधौउरमेविलसै॥२३॥ तार
क॥ उरतेसिवमूरतिश्रीपतिलीनी॥ सु
भसेतकेमूलअधिस्ठजकीनी॥ इनि
केदरसैंपरसैंपगुजोई॥ भवसागरके
परपारसुहोई॥ २४॥ दोहा॥ सेतम

लसिवसोभिजैपूरनपरमप्रकास
सागाजगतजिहांजकेकारिपाकेस
वदास ॥३५॥ तोटक ॥ सुकसारनरा
वनदूतपठायो ॥ कपिराजसमाएकु
सदेससुनायो ॥ अपनेघरजैजहुहो
तुमभाई ॥ जमहूंपरलंकलईनहि
जाई ॥ ३६ ॥ सुग्रीव ॥ भजिजैहोक
हांनकहूथलुदेषो ॥ जलहूथल
हूंषुनांइकलेषो ॥ तुमवालसमां
नसहोदरमेरे ॥ हतिहोकुलसोत
नप्रानतिते ॥ ३७ ॥ सवरांमचंमत
रसिंधुहिश्राई ॥ वहुधासुकसार
नैछुवताई ॥ छविरिक्षनकोधरस्र
माछाई ॥ फिरलंकमनोवरषारितु
श्राई ॥ ३८ ॥ कवित्तदंडक ॥ कुं
तललकितनीलभ्रकुटीधनुष
नैनकुमुदकटाक्षवांनसचलस

दारीहै॥ सुग्रीमसहिततारअंगदा
दिभूषननिमधपदेसकेसरीसगज
गतिभारीहै॥ विग्रहानकूलसवल
क्षिलक्षिरिस्सिवलनूरिक्षिराजमुषी
मुषकेसौदासगाईहै॥ रामचंद्रज
कीचमूराजश्री विभीषनकीराव
नकीमी चदरकंचुकैश्राईहै॥ २
१॥ निसिपालिका॥ रामनसुभसा
मलतनमंदिरपेसोभिये॥ मानहु
दसअंगजुवकालिंदगिरिविमा
हिये॥ राघवसरलागवगतिछु
मुकट्योहये॥ हंससवलअंसस
हितमानहुउडिकेगये॥ ४०॥ लछि
नषलुतजिंनतयलुभजिमवनू
मेगयौ॥ लक्षिनप्रभुतक्षिनगिरि
दक्षिनपरसोभयौ॥ लंकनिरषि
अंवकहरषिमरमसकलजीस्त

ह्यो॥जाइसुमतिरावनपैअंगदसो सौकह्यो॥४९॥ग्रंमसत्रपक॥रामचंद्र जूकहतमध्वनलंकदेखिदेषि॥रि सवानराजघोरवोरचाहिंविसेषि मुंजकंजगंधलुब्धभौरभीरसी विसाल॥केसौदासआसपास सोभिजैमनोमराल॥४८॥तामको टिलोहकोटस्वर्नकोटआसपास देवकीपुरीघिरीकिपर्वतारिकेवि लास॥वीचवीचहैकपीसवीसवी चरिक्षिजाल॥लंककन्याकागोरि किनीलपीतकंठमाल॥४९॥इ तिश्रीमत्सकललोकलोचनच कोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांलंकादरसनोनाम पंचदसप्रकासः॥१५॥दोहा॥ यहषोडसेप्रकासमैवरनुके

यहपंद्रहैंप्रकासमेरावनकरैविचार
मिलिविभीषनतैससुतवाणिरधुपतिहैंपार

सवदास॥ रावन अंगद सैा विधि सो भा
वचन विलास॥ अंगद कूद गए जहां आ
सन गति लंकेस॥ मानहु मघ कुरहाट पर
सोभत स्याम लवेस॥ २॥ प्रतिहार ने राज॥
पठै विरंचि मौन वेद जीव सोर छंडि रे॥ कु
वेर वेर कै कही न जक्ष भीर मंडि रे॥ दिने
स जाइ दूर वैठ नारदादि संग ही॥ न वा
लि चंद मंद वुधि इंद्र की सभा नहीं॥ ३॥
तोमर॥ अंगद औ सुन वानी॥ चित्त म
हां रिस आनी॥ रलिके लोग अनेस ज्ञा
इ सभा महं वेस॥ ४॥ प्रहस्त चच्चरी॥ कौ
न हो पठए सु कौन हि ह्यां तुम्हें कह का
म है॥ जाति वानर लंक नाइक दूत अं
गद नाम है॥ कौन हो वह वांधि कै हम
देह पूंछि सवै दही॥ लंक जारि सघारि
अक्ष गए सु वात वृथा कही॥ ५॥ महो
दर॥ कौन भांति रहे तहां तुम राज प्र

षकजानिये॥ लंकजाइगयोजुवांनरकौ
ननामुवषांनिये॥ मेघनादजुवांधेकैव
हुमारियोबहुधातवे॥ लोकुलाजटैऐर
हेअतिजांनिजेनकहाअवे॥ ६॥ एवन
कौनकेसुतबालकेकहिकौनवालिनजा
निये॥ कांषचापितुलेजुसागरसातन्हा
तवषांनियें॥ हैकहांवहवीरअंगददे
वलोकवतारियो॥ क्योगयोरघुनाथ
वांनविमांनवैठसिधारियो॥ ७॥ लंक
नाइककोविभीषनदेवदूषनकोदहे॥
मोहिजीवतहोइक्योजगताहिजीवत
कोकहे॥ मोहिकोरनमारिहैदुरवुहि
तेरीजांनिये॥ कोनवातकहाइयेठडी
बीरवेगवषांनिये॥ ८॥ अंगदविजय॥ श्री
रघुनाथकोवानरूजाप्रोहोएकुनके
सवकाहेहसोज॥ सागरकोमडयारचि
कारत्रकूटकोदेहिचिन्हारिछोज॥ सि

प्रनिहारसंघारकैराक्षससोकुम्भसोकु
वनीहिदपौज॥ अक्षकुमारहिमारिकै
लंकहिजारिकैनीकहींजातुभयोज॥
९॥ गंगोदिका॥ रामरांजानिकैराज आ
एइहांधामतेरेमहांभागजागेअवे॥ दे
षिमंदोदरीकुंभकनीदिटैमित्रमंत्री
जितेपूछिदेषोसवे॥ राषजेजातिकै
भांतिकैवंसकैसाधिजेलोककैलो
परलोककै॥ आरिकैपांपरोदेसलैकै
सुलेआसुहीरीससौताहिलैवाककै
१०॥ पावन॥ लोकलोकसमेसोचिवं
म्हांरचेआपनीआपनोसीवसोसा
रहे॥ चारिवाहैधरैविस्तरक्ष्माकैरेवा
तसांचीयहैवेदवानीकहै॥ ताहिभं
भंगहीदेवदेवससोसाचिवंम्हांदैदै
हृद्दजसंघरे॥ ताहिहोछोडकेपाइकै
कैपरैआजसंसारतैपाइमेरेपरे॥ ११

रावन ॥ मंदोदरी ॥ रामकेकोकामुकहारि
पुजीतिहिकोनुकैवारिपुजीसोमहा ॥
वालिवलीछलसोभगुनंदनगर्भ
सुहादुजदीनमहा ॥ दीनसुक्योछित
छत्रहेतुविनग्याननिहेहुपराजाकि ॥
हेहुपकोनुवहैविसिम्योजिनषेल
तहातुम्हैवांधिलियो ॥ १७ ॥ अंगद ॥ वि
जयु ॥ सिंधुतरीउनिकोवदरागुमपै
धनुरषगहीननरो ॥ वांध्योहीवांधत
सोनवध्योउनिवारधवाधिकैवार
करी ॥ अजहूंरघुनाथप्रतापकीवात
तुम्हैदसकंठनजानिपरी ॥ तेलनि
तूलनिपूंछजरी ॥ नसवलंकजराइजरी ॥
१८ ॥ मेघनाद ॥ छोडिदसोहमहीवद
रावहपूंछिकीअग्निसोलंकजरी ॥
भीरमिअक्षुमम्योचपिवालकुवा
दहीजाइप्रसस्तकरी ॥ तालवधेअ

हसिंधुवधोसहचेटकविक्रमकोंन
किपो॥ वांनरकोनरकोवलकारनमे
सुरनाइकुवाधिलिपो॥ ९४॥ अंगद
चेटकसोधनुभंगकसोपमरावरको
वलुजोरनहो॥ वांनसमेतरहेपचि
केतुमजासहेपनतसोथलुहो॥ वा
नसुकोनवलीवलिकोसुतवंवल
वांवनवांधिलिये॥ वेरीसुतोतिन
कीचितुचेरिनिनाचनचाइकेछां
उदिये॥ ९५॥ रावन॥ विजय॥ नीलसु
षेनहनुंमानकेनलयोरसवेकपि
पुंजतिहारे॥ आठहेआटदिसांव
लिदेअपनोपदलेपितुजोत्नगि
मारे॥ तोससपूतहिजाइकेवालि
अपूतनकीपदवीपगधारे॥ अंग
दसंगलेमेरोसवेदलआजहीं।
क्योनहनेवपआरे॥ ९६॥ दोहा॥

जोसुत अपनेबापकोवैरनलेइप्र
कास॥ ताकोजीवनहीमरोकहैसक
लतजित्रास॥ १७॥ अंगद॥ इनकों
विलग्यनमानियैकहिकेसवपलग्रा
धु॥ पावकपांनीपवनप्रभुज्योंअसाध
सोसाध॥ १८॥ रावन॥ उरसिअंगद
लाजकछुगहो॥ जनकघातवातकहा
कहो॥ सहितलछिमनरामहिंसंघरो
सकलवांनरराजतुम्हेकरो॥ १९॥ अंग
दनिसिपालिका॥ सत्रअसमिंवह
मचित्तपहिचांनिही॥ हतबुधन्नतक
वहनठरयांनही॥ आपमषदेषिअ
भिलाषमषभाषही॥ रांषुभुजसी
सतवऔरकहरांषही॥ २०॥ रावनडं
दवज्र॥ मेरीवडीभूलिकहाकहोरे
तेरोकहादतसवैसषोरे॥ वेतोस
वेतोहिचाहतमारो॥ मारोकहानो

हितौदेवमारौ॥२१॥अंगद॥नाराचु
औरघनाथजंधरैगे॥असेषमाथेकं
टभूमेपरैगे॥सिषासिवास्वांनगहेति
हारी॥फिरैवोरचौहंसुअंगमिषबिहा
री॥२२॥रावनभुजंगप्रपात॥महां
मृत्युदासीसदापाइधोवै॥पतीहार
ह्वकेंजपास्रासोवै॥छपानाथल्लीनेर
हेछत्रुजाकौं॥करैगोकहादीनसुग्रीव
लाको॥२३॥सकामेघमाला सिषापा
ककारी॥करैकोतवाल्लीमहांदंउधा
री॥पठैमंत्रब्रंम्हासदाहारजाकैक
होपकहादीनसुग्रीवताके॥२४॥अं
गदविजय॥पटचलोपलनापल्लि
काचटिपाल्लिकहुंचटिमोहमठोर॥
चौकचलोचित्रसारीचलोगजवा
जचलोगदगर्भचलौरे॥भोमविमा
नचलोद्वीरहेजिहिकेसवसोकव

हूंनपसोरे॥ चेततुनाहीरह्योचहिचि
त्तसुचाहतुमूढचिताहीचसोरे॥२५॥
॥रावनभुजंगप्रिया॥ निकारोज भैयालि
योराजुताको॥ दियोकाढिकेजोकह्याचा
सुताको॥ लिपेवानरालीकहोवाततोसो
सुकैसेजुरैरामसंग्राममोसो॥२७॥ अंगद
विजय॥ ह्याथीनसाथीनघोरेनचेरेन
गाउनठाउनठाउविलैहैं॥ तातुनमातुन
पुत्रनमित्रनवित्तुनअंगवेसंगरैहै॥ के
वलरामकोनामविसातुओरनिकामा
नकामहिऐहै॥ चेतुरेचेतअजोचित
अंधसअंतकबोककेलउजेहै॥२८॥
॥रावनभुजंगमप्रियात्॥ उरगाइविप्रे
अनाथेजुभाजेपरद्रव्यछोडेपरस्त्रीनि
लाजे॥ परद्रोहजापेनहोहीरतीकोसु
कैसेजुरैभेषकीनेजतीको॥२९॥ दोहा
गेदकरोमेषेलहीहरिगिरिकेसवदा

र

स॥ सीसचढाए आमनेकमलसमान
प्रकास॥३०॥ अंगदसवैया॥ जैसेतुम
कहतउठायोयेकुगिरवरअैसेकोटिक
पिनकेवालकुउठावहीं॥ काटसुकहतसी
सकाटतघनेरैघाघभगरकेषेलकहाभ
टपदपावहीं॥ जीत्योजुरैसरनआपरि
षिकिहसमुझइहमडजनातेसमआ
वहीं॥ गहौरामपाइसुषपाइकरैतपीत
पुसीताजूकोदेहुदेहुदंदभीवजावहीं॥
३१॥ चंद्रवर्तनाम॥ तपीजपीविप्रनि
छिप्रहीहरौ॥ देवअदोषीसवैदेवसंघ
रौ॥ सियानदेहौयहेनेमुजीधरौ॥ आ
मानुषीभूमिआवानरीकरौ॥ ३२॥ अंग
दसवैया॥ पाहनतेपतिनीकरीपावन
टूकाकौधनुदेहरकौरे॥ छत्रविहीन
करीछिनमेछितगर्भहत्योतिनकेवल
कौरे॥ पर्वतपुंजपरेनकेपानसमांनन

हैअजहूंधरकौर॥होइनराइनपेसरु
पोगुनअरइहांनखानकौर॥३३॥रा
वन॥चर्चरी॥देहिअंगदराजतोकहमा
रिवांनराजकौ॥वांधिदेइविभीषनेअ
रफेरसेतसमाजकौ॥पूछिजारहिअ
छिपूकीपाइल्लाजरहिरुइकै॥सिप्रा
कौतवदेहुरांमहिजांरपारसमुद्रकै॥३४
अंगद॥लंकलाइगयेवलीहनिमंतसं
तनिगाइयो॥सिंधुवांधतुसोधुकैनल
छीरछीटवहाइयो॥ताहितोहिसमेत
अंधउषारिहौउलटीकरौ॥आजुराजु
कहांविभीषनवैठहैतिहितेउरौ॥३५॥
॥चौपही॥वालिपुत्रतवरोप्योपाउ
रावनसैकल्यौआनिउठांउ॥सकलस
भामेअसौकोर॥सोपदपाइउठावैमो
र॥३६॥पहिसुनिकैजोधासवकहे वां
नरपांउकहाहमगहे॥केनिकहैतेरो

यहपाइ॥ सिषिरिनिसहितधोरहिउठा
इ॥३७॥ छपय॥ प्रथममहोदरकुंभवद्द
रिनारंतकआए॥ प्रहस्तमहीपतिजुर।
औरजोधनिवुलवाए॥ मेघनादअति
कायपपाशअंगदकोगहिसो॥ उसोन
केहूंभांतिगभुजीमेनहिरहियो॥ दस
कंठआदिदैथकगएचरनलग्योपाता
लकोंकहिकेसवगतिरघुनाथकीअ
सुरपंचविनकाजको॥३८॥ दोहा॥॥
सकलसभाहठकेरहीएवनअधिक
लजाइ॥ कहिकेसवहरिभगतकोअ
सुरउठावैपाइ॥३९॥ अंगदरावनको
मुकुटुलेकरउडयोसुजांन॥ मनोच।
ल्योजमलोककोदससिरकोप्रस्थां
न॥४०॥ इतिश्रीमत्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचं
द्रकायांदनसंवादवर्ननंनामषोडस

मोप्रकास॥१६॥दोहा॥ यहसत्रेहैप्रका
समैलंकाकौअवरोधु॥ मंत्रचमूंवनर्न
समरलछिमनकौपरवोधु॥१॥अंगद
लैवामकटकौपररांमकेपाइ॥रामवि
भीषनकेसिरहभूषितकियौसुभाइ॥२॥
पधिटिका॥ दिसिदक्षिनअंगदपूर्वनी
लपुनिहनूमंतपक्षिमसुसील॥दिस
उत्तरलछिमनसहितरांम॥सुग्रीवम
ध्यकीनौविरांम॥३॥सगजथपजूथन
वलविलास॥पुरफिरतविभीषनआ
सपास॥निसिवासरसवकौलेतसोधु
इहिभांतिभयौलंकाविरोधु॥४॥तवरा
वनिसुनिलंकानिरोधु॥उरउपजौतन
मनपरमक्रोधु॥राषेप्रहस्तहठिपूर्व
पोर॥दक्षिनहिमंदोदरगसेदौर॥पग
येइंद्रजीतपछिमदुवार॥रहेरावन
उत्तरवलउदार॥किसोविरूपाछयि

तमधदेस॥ फिरैनारतकचहुधांप्रवेस॥ ६
प्रमता छंद॥ दंडक॥ होनलागोहाल्ला
डोलसेनलागीसज्जिपनआवतहैरांम
चंद्रमानौघटाउंनई॥ धराकीसकल
धूरिहीहैअमरपुरिसूरिहूनदेषिपरे
अषछाहज्यौछई॥ रावनकीराजधानी
होनलागीधूंधानीजानीनहीअभि
मानीमतिधौसुकौभई॥ सेतुसेतुसिं
धसवकारकारसोभिजनुपीरीपीरीलं
कासवभूरीभूरिह्वेगई॥ ७॥ प्रमता छंद
अतिहार हारप्रतिजुद्धभेहे॥ बहुरिछु
कगूरनिलागरहे॥ तवरतनलंककहसो
भभई॥ जनुअग्निज्वालमहधूंमदई
॥ ८॥ दोहा॥ मरकतमनिकेसोभिजस
वेकगूरचारु॥ आइगयोजनुधानकौ।
पानिकौपरवारु॥ ९॥ लषिरावनआ
रसुदसौमंत्रीमित्रवलाइ॥ इंद्रजीन

१०२

कोआदिदेजुद्धकरौसवजाइ॥१०॥लंक
चमूजवहीकरीहाएहारप्रतधाइ॥दुंद
जुद्धदुह्नदलभयोपीछेदेतनपाइ॥११॥
चच्चरी॥रनरामसौमनक्रोधकरनवजु
रेपंचमहारथी॥कोगनेछिनजुद्धिमेज
मलोककेजिभएपथी॥लछिमनहने
रनकोगनेजूअघनेदुह्नसेनके॥एविक्र
स्तकालकरालआएभस्ममुकटदिसे
रेनके॥१२॥तिहिजोतितेतमनाभिगो
सवकोप्रगटसवदेषिसो॥नवधारिकेक
पिजूथनाथनिवीसवोहनलेषियो॥
पुनिइंद्रजीतअजीतरनेनिकस्योप्र
गटरघुसाजिकै॥तिहिदेषिआवतवी
रअंगदसामुनोभस्योगाजिकै॥१३
मेघनादिअसेषवांननिवीरअंगद
मारिसो॥करक्रोधुसोगिरएकुलेर
थुदूतसुनमघारिसो॥धायोपसादे

वानलेअंगदतवैचनकटहयौ॥ अम
धाछोभभयौजहीतवभागिसोलंक
हिगयौ॥ २४ ॥ दोहा ॥ कीनोजगपनि
कुंभलाहोमोरुधिरअपार॥ कुंडमध्य
तेरथकसोसूतसहितहथियार॥ २५
॥ कुसमविचित्र ॥ तवनिकस्योए व
नसुतसूरो॥ सवजगजीत्योहरवलपू
रो॥ तपवलमायानमुठपजायौ॥ कपि
पतिकेमनसंभ्रमछायौ॥ २६ ॥ दोधक
काहुंनदेषिपरेवहजोधा॥ जद्यपिहे
सिगरेवुधिवोधा॥ सोइकसोअहिना
इकसाधे॥ लछिमनस्योरघुनाइकुवा
धे॥ २७ ॥ एमहिवांधिगयौजवलंका॥ ए
वनिकीसिगरीमिटीसंका॥ देषवधे
तवसोदरदोऊ॥ जूथपजूथअसेसव
कोऊ॥ २८ ॥ स्वागता ॥ इंद्रजीततिहि
लेउरलायौ॥ आजुकाजसवतेकरि

ए·
१०३

आयो ॥ कै विमांन अति रूठ ति धाए
जांनुकी हिरष्ठ नाथ दिषाए ॥ १९ ॥ सी
ताजू ॥ दोधक ॥ राजपुत्र जुत नागिनि दे
षे ॥ भूंमि जुगत हरि चिंदन लेषे ॥ पंन्नगारि
प्रभु पंन्नग माई ॥ काल चाल कछु जा
नन जाई ॥ २० ॥ दोहा ॥ काल सर्प के क
वल ते छोडत जिनि को नाम ॥ वधे ति
न वांम्ह न वच न दस मासा सर्पनि रांम
२१ ॥ दोधक ॥ श्री रांमचंद्र पे नारद आ
ए ॥ दे आसिष वहु धाम न भाए ॥ भांति
भांति वहु अस्तुत कीनी ॥ गरुड वुलाए
सिक्षा दीनी ॥ २२ ॥ चौपही ॥ पंन्नगा
रि तव ही तह आए ॥ व्याल जाल तत्व मा
र भगाए ॥ लंक मध्य तव हीं गई सीता ॥
सुभ देह अवलोकि सुगीता ॥ २३ ॥ ग
रुडध्वज ॥ श्री रांम नारायन लोक क
र्त्ता ॥ वंह्मा दि रुद्रादि के दुष्प हर्त्ता ॥ सी

तासुमिग्योदहुप्रभुसिक्षा॥ नांन्हीवडी
ईसजोहोहि दिक्षा॥२४॥ छंम॥ ०॥ कि
यहोहि काजेसुसबैकीनो॥ आएइहां
मोकहसुषःदीनो॥ पगलागिवेकुंद्व प्र
भाप्रकासी॥ स्वर्गलोकगोनहुनविस्व
धासी॥२५॥ विभीषन॥ धुम्राछ्छ आयो
महादंडधारी॥ ताकौंहनूमंतभए हैप्रहा
री॥ जितअकंपादिकवलिष्टभारे॥ ते
संग्राममेअंगदवीरमारे॥ २६॥ इंद्रवज्र
अकंपधुम्राछहिजयजूझे॥ महोदर
हिएवनमंत्रवूझे॥ सदाहमारेतुममं
त्रवादी॥ हेकहाहैअतिहीविषादी
हो
२७॥ मंदो॥ कहेहजुकोऊहितवंतवा
नी॥ जानौताकहमहादुष्पदांनी॥ ग
नौनदावेवहुधाकुदावे॥ तातेसुधीवा
तमौनभावे॥ २८॥ कह्यौसुएचार्जसो
होकहोजू॥ संदातुम्हारेहितसंग्रहो

जू॥ नृपालभूमेविधिचाजिानो॥ सवेसु
नोमहांराजजोहोंवषानो॥ २६॥ भुजंगम
प्रिपात॥ पहेपकलोकेसदासुधिमानो
वलीवेनज्यो ञ्रापुहीईसजानो॥ करे
साधनासिक ञ्रनेसे॥ ३०॥ दोहा॥ चहू
राजकेमेकहे ११ परलोकहीको॥ हरि
श्चंदजेसेगएदेमहीको॥ ३१॥ दुहूंलोक
कोएकसाधेसपाने॥ विदेहीनिज्योंव
दवानीवषाने॥ नरुलोकदोईहठीए
कअ्सै॥ त्रसंकेहसेज्योभलेऊञ्रनेसे
३१॥ दोहा॥ चहूराजकेमेकहेतुमसो
राजचरित्र॥ स्वेसुकीजेचित्तमेचि
त्तनमित्रञ्रमित्र॥ ३२॥ चारभांतिमं
त्रीकहे चारिभांतिकेमंत्र॥ मोहिसु
नाएसकजेसो॥ धिसोधिसवतंत्र॥ ३
३॥ छपै॥ एकराजकेकाजहतेनि
जकाराजकाजे॥ जैसेसुरष्यनिकारि

सकलमंत्रीसुषसाजे ॥ एकराजकेकाजश्रा
पनेकाजविगारत ॥ जैसैलोचनहींनसहि
तकविवलिहिनिवारत ॥ इकप्रभकोंश्रप
नोभलोकरतदासयथदूतज्यों ॥ इकश्रप
नोप्रभकौवुरौकरतरावरेपूतज्यौं ॥ ३४ ॥
दोहा ॥ मंत्रीजुचारिप्रकारकेमंत्रिनिके
जुप्रवान ॥ विषुसेदारिमवीजसेगुरसेनी
मसमांन ॥ ३५ ॥ चंद्रवर्त्तमान ॥ राजनीत
मततत्तसमुझिये ॥ देसकालगुनजुद्ध
श्रसुसिये ॥ मंत्रिमित्रश्ररिकौगुनग्रहि
ये ॥ लोकलोकश्रपलोकनलहिये ॥ ३६
रावन ॥ चारिभातिनृपतानुमकहियो
चारिमंत्रमतेमेमनगहियो ॥ रांममारि
सुएएकुनवचिहै ॥ इंद्रलोकवसवा
सहिरचिहै ॥ ३७ ॥ प्रमताछरा ॥ उठिकै
प्रहस्तसजिसेनचलेवहुभातिजाइ
कपिपुंजदले ॥ तवदोरिनीलउरमु

ष्टिहनै॥ आसुहीयभुवमूडिसनै ३८॥
वसमस्वनित॥ महावलीजूअतप्रहस्त
को॥ मीरिचलेरावनितहीहस्तको॥ अने
गभेरीवहुदुंदभीवाजे॥ गयंदक्रोधाजहां
तहांगाजे॥ ३९॥ सनीरजीमूतनिप्रकास
सोभही॥ विलोकिजाकोसुरसिंघछोभ
ही॥ प्रचंडनैरित्यसमेतदेषियौ॥ सप्रे॰
तमानौमहिलेषियो॥ ४०॥ विभीषन
वसंततिलका॥ कोदंडमंडितमहारथ
वंतजोहै॥ सिंघध्वजीसमांनपंडितव्रं
दमोहै॥ महांवलीप्रवलकालकराल
केता॥ सोमेघनादसुरनाइकजइजेता
॥ ४१॥ जोआघवेषरथव्याघनिकेतधा
री॥ संक्रलोचनकुवेरहिविपतिका
री॥ लीनेत्रसूलसुरसूलसमूलमा
नौ॥ श्रीराघवेदअतिकायजानौ॥ ४
२॥ जोकांचनीयरथसंगममूरमाली

जाकीउदारउषनमुषसक्किसाली॥स्वधा
मधांमहाकीएतिकैनजानी॥सोईमहा
दावकोदरवंधमांनी॥४३॥जाकेरथ्याग्र
परसर्पधुजाविराजे॥श्रीसूर्जमंडलवि
मंडलजोतिसाजे॥अषंडलीयउग्रजेसा
तनत्रानधारी॥देवानकसोकसोसुरलो
कविपतिकारी॥४४॥जोहसकेनभुजदं
उविषडुधारी॥संग्रामसिंधुवहुधाअव
गाहकारी॥लीनीछिडाइजिहिदेवअ
देववामा॥सोईषरात्मजवलीमकरा
क्षनामा॥४५॥भुजंगप्रयात॥लगेसिं
दूनेवाजराजीविराजै॥तिन्हेदेषिकेप
वनकेवेगलाजै॥भलीस्वनेकीकिंकि
नीचारुसाजे॥मिलोदामिनीसोमनो
मेहगाजे॥४६॥पताकावनोसुभसा
दूलसोहै॥सुरंद्रादिचंद्रादिकौचित्त
मोहै॥लसैछत्रमालाहसेसोमभाकैं

रमानाथजानैदसग्रीवताकौं॥४७॥पुरहू
रछाडेसवैआपधाए॥मनौहादसादि
त्यकोराहुआए॥गिरयामलैलेहरग्रां
ममारे॥मनौपन्ननीपन्नदंतीविहारे॥
४८॥विजय॥देषिविभीषनकौरनराव
नसत्तिगहीकररोषाईहै॥छोडनहीह
नमंतसुवीचहीपूंछलपेटिकेडारिद
ईहै॥दूसरैवज्रकीसक्तअमोघचला
वतहीहाहाइभईहै॥रोषोभलेसर
नागतलछमन॥फूलिकेफूलसीवा
डिलईहै॥४९॥अमविनी॥०॥जोर
हीलक्ष्मनेलेनलाग्योजहीं॥मुर्छा
तीहनूमंतमारौतहीं॥आसुहीप्रांन
कोनासुसोह्वैगयौ॥दंडहूतीनमेचेतु
ताकोभयो॥५०॥मरहटा॥आएउग्रप्रा
ननलैधनुवाननकपिदलदियोभगा
इ॥चठिहनूमंतपरएंमचंद्रजूरएक्वौ

गवनजाइ॥ धरिएकुवांनतवक्षत्रसुरत
एथुकोटमुकटवनाइ॥ लागपोद्रजोसर
छूटगसौवललंकगयोश्रकुलाइ॥५१॥
॥दोधक॥ जदपिहैश्रतिनिर्गुनताई॥ मा
नसनूपधोरघुराई॥ लक्षमनरांमजहां
श्रवलोके॥ नेननितेनरहैजलरोके॥५२
वारुकलछमनमोहिविलोको॥ मोकहु
प्रांनचलेनजिरोको॥ होंसुमिरोंगुन के
तिकतेरे॥ सोदासरसहाइकमेरे॥५३॥
लोचनवाहुतुहीवलमेरो॥ तूंवलवि
क्रमवारकहेरो॥ तोविनुहोंछिनप्रांन न
राषो॥ सियतजोंमुषझूठनभाषो॥५
४॥ मोहिरहीइतनीमनसंका॥ देननपा
ईविभीषनेलंका॥ वोलिउठेप्रभुको
प्रनुपारो॥ नाहिनेहोतुहेमोमषकारो
५५॥ विभीषनसुंदरी॥ होविनतेरघुना
थकोश्रव॥ देवतजोपरवेदनकोस

व॥ श्रौंषदलैनिसिमैफिरश्रावै॥ केसव
सोसवसाथुजिवावै॥ ५६॥ सोदासूरकौ
देषतहीमुष॥ रावनकौसिगरोपुःजवैसु
षु॥ वोलुसुनैहहनिमंतकियोपनु॥ कूंदि
गएजहवोषदिकौंवनु॥ ५७॥ भूलिगोना
मुनवोषदजानौ॥ पर्वतलैनमतोमन
ठानौ॥ श्रीराम॥ सवैया॥ लक्ष्मनसौंह
मसौनिजुसंगसियापुनसंगहिछोडन
रैहै॥ वांनररीक्षजितेसवकैसवतेसवकं
दएघाहिविलैहै॥ वंधकौछाडिमिलौ
हमकौतिहिकीगतिकोनुकहासवकै
है॥ केवलएकमहादुषमोहिसोकोन
केभौनविभीषनजैहै॥ ५८॥ श्रीराम
छप्पय॥ करश्रादित्यश्रदिष्टनसजम
करैश्रष्टवसु॥ रुद्रनिवोरिसमुंद्रकरै
गंधर्पसर्वपसु॥ वलितकुवेरश्रवेरव
लिहिगहिदेहुइंद्रश्रवैविद्याधरनि

अविद्यकरौंविनसिद्धसिद्दसव॥निजुद्दो
हिदासिद्दितिकीअदितिअनलअनि
लिमिलिजाइजल॥सुनिसूएजसूजेउ
अतहींकरोअसुरसंघारवल॥५८॥भु
जंगमप्रयात॥हनेविघ्नचारिवलीवीर
वामे॥गयोसीघ्रग्रामीजहांएकजामे
चल्योलेसवैपर्वत्वेकेप्रनामे॥नजानै
विसल्योषधीकोननामे॥६०॥लैसअ्रो
षधीवृंदभूव्योमचारी॥कहेदेवियोद
वंदेवाधिकारी॥पुरीभौंमकेसीलिये
सीसराजे॥महामंगलाथी।हनूमंतगा
जे॥६१॥लगेसत्तिएमानुजेरामसाथी॥
जेउठ्ठेगएज्योमनोंहेमहाथी॥तिन्हें
ज्वाद्दिवेकोमनोप्रेमपाली॥चल्योज्वा
लमालाहिलेऋत्पमाली॥६२॥किधो
प्रातहीकालुजीमेविचारमे॥चल्योअ्रं
सुलेअंसुमालीसघान्सो॥किधोजा

ए॰
१०८

तिज्वालामुषीजोरलीनै॥ महांमत्युजामे
मिटैहोमकीने॥ ६३॥ विनापत्रहैजत्रपा
लासफूले॥ एमेकोकिलालीभमेभौर
भूले॥ सदानंदरामेमहानंदकोले॥ हनू
मंतत्र्प्राएवसंतैमनोले॥ ६४॥ मोटन॥
ठठेभयेलछिमनमूरछियेः॥ हनीसुभेसा
भसरीरलिये॥ कोदंडधरेसहवानररे
लंकेसुनजीवतुजाइघरे॥ ६५॥ श्रीराम
तहीउरलाइलिये॥ चूम्मोमुषत्र्प्रासि
षकोटिदिए॥ कोलाहलजूथकियो॥ लं
काहहलीदसकंधहियो॥ ६६॥ इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंता
मनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांलक्ष्मनसं
मोहनवर्सनंनांमसप्तदसप्रकास १७
दोहा॥ अस्तादसेप्रकासमेकेसववुद्धि
कराल॥ कुंभकर्नकोवरनिवोइंद्रजी
तकोकाल॥ १॥ दोधक॥ रावनलछिम

नकोसुनिनीके॥ छंदगयेसबसाधनजी
के॥ रेसुतमित्रविलंबनलावहु॥ कुंभ
करनहिजाहिजगावहु॥३॥ लक्षनराक्ष
ससाधनकीनै॥ दुंदभीदीहिबजाइनवी
नै॥ मत्रअमत्रवेइअसवार॥ कुंजरपुंज
जगावतहार॥ ३॥ आइगईसुरनांगिस
भागी॥ गावनवींनबजावनलागी॥ जा
गिउठौतबहीसुरदोषी॥ छुद्रछुधावहु
भछनपोषी॥४॥ नराज॥ अमत्रमत्रदं
तिपतिएककोरवेकरे॥ भुजापसाअ
सपासमेघघोषसंघरे॥ विमानआस
मांनकेजहांतहांभगाइयो॥ अमांन
मांनसोदिमांनकुंभकनेआइसो॥५॥
॥रावन॥ समुद्रसेतबांधिकेमनुषदो
इआइसो॥ लियेकुचालिवानरालिलं
कअंकलाइयो॥ मिल्योविभीषनेने
नेकुमोहितोहिहीउरे॥ प्रहस्तआदि

दैस्रनेकमंत्रमित्रसंघरे॥६॥ करैसुकाज
आजुवेगिचित्तमेजुआवही॥ असुष्पहो
इजीवजीवसुक्खसुष्पपावही॥ समेतरा
मलक्ष्मनेसुवांनराजभाक्षिसौ॥ सको
समंत्रमित्रपत्रधांमग्रांमरक्षियो॥७॥
कुंभकरनमनोरमा॥ सुनिजैकुलभूष
नदेवविदूषनवहुआजविराजनिकेत
भूषन॥ भुअभूषनचारिपदारथसाधत
तिनकोंकवहूंनहिवांधिकवाधत॥८॥
पंकजवाटिका॥ धर्मकरतअतिअर्थ
वढावत॥ संततहितरतकांमलगावत
संततउपजतहीनिसवासर॥ साधतत
नमनमुक्तिमहीधर॥९॥ दोहा॥ राजा
अरुजुगराजजप्रोहितमंत्रीमित्र॥ कां
मीकुटिलनसेइयेकृपनअनातघ्नीमिं
त्र॥१०॥ कवित्तु॥ कांमीवांमीमूढको
ठीक्रोधीकुलद्रोषीषलुकांतरकृतत्त

घ्नी मित्रद्रोही दुजद्रोहि ये ॥ कुपरिषु किं
पुरिषु काहलीकलही कूर कुटिल कु
मंत्री कुलहीन नहि ठो हिये ॥ पापी लो
भी अूठा अंध बावरो वधिर गंगवो नाअ
विवेकी हठी छली निरमोहि ए ॥ समस
र्व भक्षी देववादी जुकुवादी जड्ड अपसी
औसो भूमभूपति न सोहिए ॥ ११ ॥ निस
पालका ॥ वांनर जांन सुरजान सुभगा
थहे ॥ मनुष जनि जांन रघुनांथ जग
नाथहे ॥ जानुकि हि देहु करनेहु कुल
देहु सो ॥ आजु रन साजि पुनि गाजु ह
सि महसो ॥ १२ ॥ रावन ॥ दोहा ॥ कुंभक
रन करि जुध्ध को सो इरहो घर जाइ ॥ मि
लो कि जाइ विभीषनै गहो सत्र के पा
इ ॥ १३ ॥ मंदोदरी ॥ इंद्रजीत अति
काय सुनि नारंतक सुष पाइ ॥ भेय
नि सो प्रभु अकत है तु मन कहत समु

आइ॥९४॥चंचला॥देवकुंभकर्नकेस
मानजानिजैनज्ञान॥ब्रह्मविष्नुरुद्ररिं
द्रचंद्रकोहरैविमांन॥एजकाजकोकहै
जुमानिज्ञेसुप्रेमपालि॥कोचल्यौनको
चलैनकालकीकुचालिचालि॥९५वि
स्नुभाजिभाजिजातछोडिदेवताअसेष
जामदग्निदेषदेषिकिहिनकियौनारि
वेष॥दीसएांमतेवचौवचैनवांनरेसबालि
कोचल्यौनकोचलैनकालकीकुचालि
चालि॥९६॥विजय॥एंमहिचारनदी
नीसियाजिनिकेदुषसौंतपलीलि
येहे॥रामहिमांरनदीनेसहोदनुरांम
हिआवनजांनदियेहे॥देदुधरौतुम
हीलगिआजुलौरांमहिकेपियज्वा
एजियेहे॥दूरिकीदुजरतादुजदीन
हरैईहरैआतातारीकियेहे॥९७दो
हा॥संषकरहुविग्रहकरौसीताको

तुमदेहु॥ गनौनपिसदेहीनिमैंपतिव्र
ताकोदेहु॥ १८॥ रावनमंदरा॥ होसतु
छांडिमैमिलौम्रगलोचनक्यौंछमि
होअपराधनए॥ नारिहरीसुतवांधेति
हारेमैकालिहींमोदरसंगहए॥ वांवन
मांगिवपेडधरादक्षिनावलिचौदहलो
कदए॥ रंचककैवेनहतोहविंचकवाधि
पतालनऊपठए॥ १९॥ दोहा॥ देवरकु
भकरंनसोंहरिअरिसोसुतपाइ॥ राव
नसोंप्रभकौनुकेनकैमंदोदरियडरा
इ॥ २०॥ चांमर॥ कुंभकनरावनैप्रदछि
नासुदैचल्योहाइहाइहोरहीअकास
आसुहीहल्यौ॥ मध्यछुद्रघटिकाकि
रीटअंगसोभनो॥ लक्षपक्षसोंकुलिं
दइंद्रपेचठोमनो॥ २१॥ नराज॥ उऊंदि
सांदिसांकपीसकोरिकोरिस्वासहीं
चपेटपेटवाहुजंघजानुसौंतहातहीं॥

रा०
१११

ल्लिये अहो अंचिचै अचिवीरवाहुजानही
भषेति अंतरिक्षरिक्षलछलछिवात
हीं ॥ २२ ॥ कुंभकरनभुजंगप्रयात ॥ न
ह्वैत्तारिकोह्वैसुवाह्वैनमांनैानहैांसंभु
कोदंडसांचोवषांनो ॥ नहांताल्लमा
लीषन्वेजाहमारो ॥ नहोदूषनैंसिंघस
धोनिहारो ॥ २३ ॥ सुरीआसुरीसुंदरीभा
गवन्वे ॥ महांकालकोकाल्लहोकुंभकर्
न्वे ॥ सुनैारामसंग्रामकोतोहिवाल्लो
वढेोगभुलंकाहिआयेसुषाल्लो ॥ २४ ॥
उठेोपेसरीकेसरीजोरछायो ॥ वलीवा
लिकोपूतल्लेनीलधायो ॥ हनूमंतसु
ग्रीवसोभेसभागे ॥ डसेडांससेमंतमा
तंगलागे ॥ २५ ॥ टसग्रीउकेवंधसुग्रीव
पाए ॥ चल्योलंककेमेलेभल्लेअंकलाए
हनूमंतल्लताहन्योदेहभूल्लो ॥ छुओ
कर्ननासाहिल्लेइंद्रमूल्लो ॥ २६ ॥ समहा

१११

सोमन्त्रकेधारिएकतालै॥फिऱ्योराम
हींसामुंहोभोगदालै॥इन्नंमंतजूपूंछ
मोलाइलीनो॥नजांनोकवैसिंधमेडा
रदीनो॥२७॥जहींकालुकीकीकेतुमी
तालुलीनों॥कियोरांमहीहस्तपादा
ढ़िहीनों॥चल्योलोटत्वेपोटत्वेयोकु
चाली॥ठज्योमुंडलेवांनुज्योमुंडमाली
२८॥जहींस्वर्गकीदुंदभीदीहवाजे॥कं
रिपुष्पकीव्रष्टिदेवेसराजे॥दसग्रीव
सोकग्रसोलोकहारी॥भयोलंककेम
ध्यत्रातंकभारी॥२९॥दोहा॥तवही
गएनिकुंभलाहोमहेतइंद्रजीत॥त
वेकहीरघुनाथसोमंतोविभीषनमी
त॥३०॥विभीषनचद्धरी॥जोरिअंजु
लकोविभीषनरांमसोविनतीकरी॥
इंद्रजीतनिकुंभलागएहोमकीरि
सजोधरी॥सिद्धहोइसुसिद्धजोलग

हीसतौलगिमारीये॥सिधिहोमुभसिद्धि
हेयहसर्वदाहमहारिये॥२९॥दोहा॥सो
हीयाहिहितेवलीवांनरिक्षिजुकोइ॥वा
रहवरषछुधात्रषानिद्राजीतीहोइ॥३०॥
चवपेरी॥रांमचंद्रविदाकरीनवेगिलछि
मनवीरकी॥सोविभीषनजांमवंतहि
संगअंगदधीरकी॥नीलुलैनलकेसरी
हनमंतअंतकज्योचले॥३१॥जांमवंत
हिमारिहैसरतीनअंगदक्षेदियौ॥चा
रिमारिविभीषनेहनिमंतपंचमभेदि
यौ॥एकएकअनेकवांनरजाइलछि
मनसोजुरे॥अंधअंधकजुहज्योब
वंसोभिरेभवहीहरे॥३२॥गीतिका॥इं
द्रजीतअजीतलछमनअस्त्रसस्त्र
नसंघरै॥सएकएकअनेकमारत
वुंदज्योमंदरटरैनवकोपिराषवस
चकोसिरवांननक्षनउधरे॥दश

॥ दूसरा भाग ... ॥

केंदसंध्याकारतु तौसिरजाइ अंजलमेपरौ ३५ ॥ सौलिछमनइंद्रजीतहिस्वक्षसंषवजाइसौ ॥ कहिसाधुसाधुसमेतइंद्रहिदेवतासवआइसौ ॥ कछमागजेवरवीरसत्वरभक्तिश्रीरघुनाथकी ॥ पहिराइमालविसालअर्चपकेगएसवसाथकी ॥ ३६ ॥ कलहंस ॥ हतिइंद्रजीतकहलछिमनआए ॥ हसिरामचंद्रवहुधांउरलाए मुनिपुत्रमित्रसुतसोदरमेरे ॥ कहिकौनुकौनुगनवरनौतेरे ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ छुदपियासानीदतुमजौनसाधतेवीर ॥ इंद्रजीतकोमारतोसुनिलछिमनरनधीर ॥ ३८ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिकायाकुंभकर्णइंद्रजीतवधवर्ननंनामअष्टादसप्रकास ॥ १८ ॥ दोहा ॥ उनईसमेप्रकासमेरावनदुष्यनिधांन

जूझेगेमकराक्षसपुनिहूहे दूतविधांन॥१॥
रावनजैहैगूठथलरावरलुटैविसाल मं
दोदरीकेठारवौ अरु रावनकौकाल॥२॥
मोटनक॥ देषोमुषअंजुलमैजवहीं॥
हाहाकरिभूमिगिरौतवही॥ आएसुत
सोदरमिंत्रतवे॥ मंदोदरीस्योत्रियआरी
सवै॥३॥ कोलाहलमंदिरमाझभयो॥मा
नौउडिकेप्रभुप्रानगयो॥रोवैदसकंठ
विलापुकरै॥ कोऊनकहूंधरधीरधरै॥४॥
॥रावन॥दंडक॥ आजुआदित्यजलप
वनपावकप्रवलचंदआनंदमयत्रास
जगकौहरौ॥गांनकिंन्नरकरहुनृत्य
गंधर्वकुलजक्षविधलक्षउरजक्षक
र्दमकरौ॥ब्रम्हरुद्रादिसवदेवत्रैलोक
केराजकोसाजुअभिषेकइंद्रहिक
रौ॥आजुसियरामदैलंककुलदूषन
हिजगपकौंजाइसरवगपविप्रनिवरौ॥

॥५॥मंदोदरी॥प्रभुसोकत्तजौतनधीरध
रोजू॥सकसत्रवधोसुविचारकरोजू कुल
मैंअवजीवनजोरहिहैजू॥सकसोकस
मुद्रहिसोवसिहैजू॥६॥मंदोदरी॥अन
कूल॥सोदराजूओसुतहितकारी॥कोग
हिहैलंकाअधिकारी॥सीतहिदैकेरि
पुहिसिधारो॥मोहतुहैवलविक्रमभा
रो॥७॥रावनतारक॥तुमअवसीतहिदे
ऊनदेहविनसुतवंधकरौनहिदेहू॥यह
तनुतजिजोलाजहिरैहो॥वनवसिजाइ
सवेदुषसैहे॥८॥मकराक्षभुजंगप्रयात
कहांकुंभकर्नकहांइंद्रजीतै॥करोसोइ
वोवोकरोजुहभीत॥सुजोलौंजियोहोस
दादासुतेरो॥सिपैदेसकैकोसुनोमंत्र
मेरो॥९॥महाराजलंकासदाराजुकीजै
करौजुद्रमरीविदावेगिदीजै॥हैतोरा म
स्योवंधसुग्रीउमारो॥अजुधाहिलौरा

रा॰
११८
६

धांनीसिधारे॥१०॥विभीषनवसंततिलक॥कोदंडरघुनाथहाथसम्हारिलीजे।भागेसवैसमरजूथपटेकिकीजे॥वेटावलिष्टषरकोमकराक्षआयो॥संघारिकालजनुकालकरालुधायो॥११सुग्रीवअंगदवलीहनमंतरोको॥रोकोनरहोजहीरघुवीरविलोको॥मारेविभीषनगदाउरजोरठेली॥कालीसमानभुजलछिमनकंठमेली॥१२णाठेगहोप्रवलअंगनिअंगभारे॥कोटनकटेवहुभांतिनिकारहारे॥ब्रह्मादियोवरअस्त्रसस्त्रनलागे॥लैहीचल्योसरसिंघहिजोरजागे॥१३महाअंधकारीदिविभूतलुलीलिलिनो॥ग्रास्तातुराहजुतमानहुचंद्रकीनो॥हाहादसव्दजहीसवलोकपकारि॥वाढअसेषअंगराक्षसविदारे॥१४॥देवादिदेवमुनिसिधसवपु

ली

११८

ष्यवर्षे॥ श्रीरामचंद्रपगलागतहर्षे॥ दो
हा॥ जूअतहीमकराक्षकोरावनअतिदु
षपाइ॥ मत्वश्रीरघुनाथपेदियोवसी
ह्रपठाइ॥ ७५॥ तोटक॥ दूतहिदेषतहींजग
नाइक॥ नाकहवूझिउंठसुषदाइक॥ राव
नकेकुसलीसुतसोदर॥ काजकोंनकेर
अपनेघर॥ ७६॥ दूतविजय॥ पूजउठेज
वहीसिवकोतवहीवुधसुक्रव्रहस्पति
आए॥ केविनतीमिसकुसिवकेतिनदे
व अदेवसवैविसाराए॥ होंमकीरीतन
हीमिषहीकछुमंत्रदियोव्रुतिलागि
सिषाए॥ होइतकोपरठयोउनिकोउत
लेप्रभुमंदिरमोंअसिधाए॥ ७७॥ मंदेस
य॥ सूपनषाजुविरूपकरीहमनातेदि
योतुमकोदुषभारी॥ वाधिवंधनकी
नोहतोअवमोसुतवंधनकीनोनि
हारी॥ होहिजुहोनीसुहेहीरहैनमि

टेजियकेरिविचारविचारो॥देभगुनंद
नकोफरसारघुनंदनलेसिरकोपगु
धारो॥१८॥दोहा॥प्रतिउत्तरद्दतहिदि
योग्रहकहिश्रीरघुनाथ॥कहिजोरव
नहोहिजवमंदोदरकेसाथ॥१९॥राव
नगुसंज्ञुत॥कहिधौविलंवुकहाभये
रघुनाथपेजवहीगयो॥किहिवेषतेअ
वलोकियो॥कहितोहिउत्तरकहदियो
२०॥तदंडक॥भूतलकेइंद्रभूमपैपोठे
हुतेरामचंद्रसांनिककनकमृगछा
लहिविछायेजू॥कुंभहरनकुंभकरन
नासाहरगोदसीसचरनअकंपअक्ष
अरिउरलाश्रेज॥देवांतकनारंतकअं
तकज्योमुसक्यातविभीषनवैनत
दिकांनुमषवायेजू॥मेघनादमकरा
क्षमहोदरप्रांनहारवांनत्योविलोक
तपरमसुषपाअ्रेजू॥२१॥उत्तरंचमं

दिए भूमिटरी भुवद्देवनको भ्रगनंदन भू
पनपे वरलेनके ॥ वावन स्वर्ग दियो सवट्टि
द्ध हिवांलि वली हिपताल पठाके ॥ संधि
कीवातनको प्रतिउत्तर आपन हू कहिजे
हितकेके ॥ दीनीहै लंक विभीषनको अ
वदेहि कहातुमको हमदेके ॥ २२ ॥ मंदोद
री ॥ तवसवकहि कहिहारे ॥ रामके दूत आ
ए ॥ अवसमअप रीपुत्र भैया जु आए ॥ द
समुषसुषजीजे रांमसो हो लरोसो ॥ हरि
हरिहिपहारे देविद्रगोल रीजेसो ॥ २३ ॥ राव
न छनुकरपट सोजो हो पावतो कुठार ॥ र
घुपतिवपुराको धावतो सिंधपार ॥ हति
सुरपतिविस्तमाया विलासी ॥ सुनिसु
मुषितोकोल्पावतोलक्षिदासी ॥ २४ ॥ चां
मर ॥ प्रोढरूठकोसमूठगूढग्रेहमेगयो ॥
सुक्रमंत्रसाधिसाधिहोमकोजहीभ
यो ॥ वाइपूतवालपूतजांमवंतधाइ

रा॰
११६

पो॥ लंकमैनिसंकअंकलंकनाथपाइयौ
२५॥ मन्त्रिदंनपंत्रवाजराजछोरिकैदये॥
भांतिभांतिपक्षिराजभाजिभाजिकैग
गये॥ आसनैविछावनैवितांनितांनि
फारियौ॥ जत्रतत्रछत्रचौरचारुचूरि
रियौ॥ २६॥ भुजंगप्रयात॥ भगीदेषिकै
संकलंकेसवाला॥ दुरीदौरमंदोदरीचि
त्रसाला॥ तहांदौरिगौवालिकौपूतु।
फूल्यो॥ सबैचित्रकीपुत्रिकादेषिभू
ल्यौ॥ २७॥ गहेदौरिताकौतजैनादिसा
कौ॥ तजैतादिसाकौभजैवांमताकौ भ
लीकैनिहारीसबैचैंत्रसारी॥ लहैसुंदरी
क्योदरीकौविहारी॥ २८॥ नवेद्रष्टिकौ
अष्टकौचित्रधंन्या॥ हसीएकताकौ
महादेवकंन्या॥ तहांहांसहीदेवकें
न्यादुषारी॥ तिन्हीसंककैलंकरानी
वनाइ॥ २९॥ सुन्यानीगहैकेसलंके

चि

सरांनी॥ तमश्रीमनोसुरसोभानिसानी
गहेवांहश्रेचेचहूंवारताको॥ मनोहंस
लीनेम्रनालीलताको॥ ३० छुटीकंठमा
लासुरेहारटूटे॥ षसेफूलफूलेलसेके
सछूटे॥ फटीकंचुकीकिंकिनीचारुछू
टी॥ पुरीभोमकेसीमनोरुद्रलूटी॥ ३१ वि
नाकंचुकीस्वच्छवक्षोजराजे॥ मनोसाचि
हूश्रीफूलेसोभसाजे॥ मनोसाचिहूश्री
फूलेसोभसाजे॥ मनोस्वर्नकेकुंभलो
वन्यसूरे॥ वसीकर्नकेमंत्रसंपूर्नपूरे॥
३२ मनोरिष्टदेवासदाइष्टहीके॥ कि
धोगुक्षहेकामसंजीवनीके॥ मनोचि
त्तचौगांनकोमूलसोहे॥ हियेहेमकेहा
लगोलानिमोहे॥ ३३ सुनीलंकरांनी
निकीदीनवांनी॥ तहीछांडदीनीमहा
मोनमांनी॥ उठोलैगदाकोजदालंक
वासी॥ गयेभाजिकेसर्वसाषाविला।

सी॥३४॥मंदोदरी॥दोहा॥सीतहिदीनै
दुषत्रिथांसाचोदेषौआजु॥करैजुजेसी
सोलहेकहारंककहराजु॥३५॥रावन
विजय॥कोवपुराजुमिलौहेविभीषन
हेकुलदूषनजीवेगोकौलौ॥कुंभकरन
मेरोमघवारिषतोरकह्यनउरौजम
सोलौ॥श्रीरघुनाथकेगातनिसुंदर
जानेनतूंकुसरातहेतोलौ॥सालुसबे
दूगपालनकेकररावनकेकरवारहेजो
लौ॥३६॥चामर॥रावनेचलेसुनैसुधा
मधामतेसबै॥सूरसाजिसाजसाजु
गाजिगाजकेतबै॥दीहदुंदभीअपा
रभांतिभांतिबाजहीं॥जहभूंममधम
कुंधमत्तदंतिगाजहीं॥३७॥चच्चरी॥ई
दूश्रीरघुनाथकोरथुहीनभूतलदे
षिकै॥बेगस्वारथसोकह्योरथुसाजि
लेसबिसेषिकै॥नूनअक्षयबांनस्त्र

क्षयभेदिलैतनत्रानकौ॥ आईयोरनभूमि
मैकरअप्रमेयपनामकौ॥३९॥कोटिभांति
नियवननैमनतैमहालघुतालसै॥वैरि
केधुजअग्रओहनमंतअंतकज्योंहसै॥रां
मचंद्रप्रदक्षनाकरिदछहै जवहीचरे॥
पुष्पव्रष्टिवजाइदुंदभिदेवतावइधावरे॥
रामकोरथुमध्यदेषनकोपुरावनकैवटो॥
बीसवाहनिकोसरावलिव्योमभूतल
सौवटो॥सैलहैसिकतागएसवव्रष्टिके
वलसंभरे॥रिक्षवानरकैदितक्षनलक्षि
धांछतनाकरे॥४०॥सुंदरी॥वांननिसा
थउडेवडुवांनरजाइपरेमलयाचल
कीधर॥सूरजमंडलमैइकरावत॥एक
अकासनदीमुषधावत॥४१॥एकगए
जमलोकसहेदुष॥एककहैभवभूत
निसोरूष॥एकनिसांगरमाझपरेमरि
एकगयेवडवानलमेजरि॥४२॥मोटक

श्रीलक्ष्मनकोपकरैजवहीं॥छोडेोसरपा
वककोतवही॥जोरोसरपंजरछारकरों॥नैरि
तनिकोश्रतिचित्तउरो॥दौरिहनिमंतवली
वलिसो॥लैअंगदसंगसवैदलसो॥मानो
गिरिराजतजेउरको॥षैचहुवोरपरंदको
॥५४॥ हीराछंद॥ अंगदलेअंगनिसवअं
गनिमुरछाइके॥रिक्षपतिहिअक्षरिप
हिलक्षिगतिरिझाइकै॥वांनरगनवांन
नसमकेसवजवहींमुरयो॥एवनदुषदा
वनजगपावनसमुहोजुर्‌यो॥५५॥ ब्रह्म
रूपक॥ इंद्रजीतिजीतच्यांनिरोकियोसु
वांनतांनें॥छोडदीनवीरवांनकंठकेप्रमा
नअंगनसो॥प्रतापकाटचांपचर्ममर्मवि
छेदि॥जातुभोरसातलेअसेषकंठमा
लभेदि॥५६॥ दंडक॥ सूरजमुसलनी
लपटिसपरिघनल॥जांमवंतअसिहह
नूंतोमरप्रहारेहै॥फरसासुषेनकुंतके

स्रो

मणिगवपसलविभीषनगजागतभिंड
पालतोरहे॥ मौगराढुविंदतारकदराकु
मुदनेजाअंगदसिलागवाक्षविटपवि
दारेहे॥ अंकुसमुरभिचक्रदधिमुष
मेषसन्निवान तीनरावनश्रीरामचंद्र
मारेहे॥४७॥दोहा॥ दुहूभुजश्रीरघु
नाथसोविरचेजुद्धविलास॥ हाथअठा
रहजूथपनिमारतकेसवदास॥४८॥गं
गोदक॥जुद्धजोरीजहाजेसेंकरताहि
तेहींदिसारोकिराषतहो॥ आपनेअ
वलेक्षत्रकाटेसवताहिक्योंहूंकहुघा
उलागेनही॥ दोरिसोंमित्रलेवानुको
टूडजेघोबंडषंडीधुज्जाधीरछत्रावली
मेलअंगावलीछोडिमानौउड़ीएक
हीवारकेहंसवंसावली॥४९॥त्रभंगी॥ल
छिमनअतिनक्षनबुधिविजक्षनराव
नसोरिसछांडिदई॥ वहुवाननिछेडे

जो सिर षंडै सो फिर मंडै सो भंजही ॥ जद्द
पि नपंडित गुनगन मंडित षिव पुषं
डित भूलि रह्यौ ॥ तजि मन वच काइ कु
सूरसहाइ करघुनाइक सो वचन कह्यौ
५० ॥ ठाठोरन गाजत तन मन भ्राजत नै
कु न लाजत सब लाइक ॥ सुनश्री रघुनं
दनि मुनिजन वंदन दुष्टनिकंदन सुष
दाइक ॥ यह टेरै न टारौ मेरै नमा्यौ होहा
हि हारौ घरि साइक ॥ रावन न हि मारतै
देवपुकारत हे श्रुत आरत जगनाइक
५१ ॥ छप्पय ॥ जिहि सरम धुम द मारि
महा मरदन कीनौ ॥ सोता कर्कस उनकै सं
घहति संषजु लीनौ ॥ निह कंटक सुरकं
टक कंपो के टंभव पुषंज्यो ॥ षरदूषन त्रु
सरास षंड त्त टषंड विहंडो ॥ कुंभकरन
जिहि संघरह्ह न लुनभ्रनंगपाते टरह्ह ॥ ति
हि वांरा एपांनदश कंठ के दस्पो कंठ कुं

छितकरइ ॥५२॥ दोहा ॥ रघुपतिपठयौ
आसुहीं असुहरबुद्धिनिधांन ॥ दस
सिरदसहूंदिसनिकौवालिदैआयौवां
न ॥५३॥ मदनमनोहर ॥ भुवभारउता
रहिसंजुतराषसकौगनजाइरसातल
सौअनुराग्यौ ॥ जगमैजयसद्दसमेतहू
केसवराजविभीषनकेसिरजाग्यो ॥ म
यदांनवनंदिनिकेसुषसौमिलकेसि
यकेहियकौदुषभाग्यौ ॥ सुभदुंदभिसी
लगजासरएमकौरावनकेउरसाथहीं
लाग्यौ ॥५४॥ मंदोदरीविजय ॥ जीत
लियेदृगपालसचीकेउसासनदेव
नदीसवसकी ॥ वासहूंनिसिदेवन
कीनरदेवनिकीरहैसंपतिहूकी ॥ तीन
हूंलोकनिकीतरुनीनिकीवारीव
धीहुतीदंडहूंकी ॥ सेवतस्वांनश्र
गालसुरावनसोवतसेजपम्योभव

भूकी ॥ ५५ ॥ श्रीरामतोटक ॥ अवजाहु
विभीषनरावनलैकै ॥ तुमबंधकुटंवकि
यासवकेकै ॥ जनुसेवकसंपतिकोजु
सम्हारो ॥ मयनंदिनिकेउरकोडुषटा
रो ॥ ५६ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्र
कायांरावनवधवर्ननंनामउनईसम
प्रकास ॥ १९ ॥ दोहा ॥ वीसमाअसीता
मिलनइंद्रादिकसवआइ ॥ भाहृाजके
आश्रमहिजेहेश्रीरघुराइ ॥ १ ॥ श्रीरा
मतोटक ॥ जयजाइकहोहनमंतहमा
रो ॥ सुषदेवहुदीरघदुष्षविदारो ॥ सव
भूषनभूषितकैसुभगीता ॥ हमकोतु
मवेगदिषावहुसीता ॥ २ ॥ हनमंतग
येजवहीजहसीता ॥ तवजाइकहीज
यकीसवगीता ॥ पगलागिकेहोजन
कीपगधारो ॥ मगुचाहतहैरघुनाथ

तिहारो ॥ ३ ॥ सिगरे तन भूषन भूषित कीने ॥ धरि कै कुसमावलि अंग नवीने ॥ दुजदेव निवेद पठी मुष गीता ॥ तव पाव कअंक चली चढि सीता ॥ ४ ॥ हनूमान भुजंगप्रियात सवल्लास वे अंग अंगा रसो है ॥ विलोकै रमादेव देवी विमोहै पिता अंक जो कंन्पका सुभ गीता ॥ तसे अग्नि के अंक तेो सुहसीता ॥ ५ ॥ महा देव के नेत्र की पुत्र कासी ॥ किस ग्राम की भूमि मे चंडिका सी ॥ किधो रत्नसिंघासनस्थां सची है ॥ किधो राग नी राग पूरि चीहे ॥ ६ ॥ गिरा पूरि मै है पया देवता सी ॥ किधो कुंजुकी मंजु सोभा प्रकासी ॥ किधो पद्म ही मै सफा कंद सो है ॥ किधो पद्मिनी मधयध्या विमोहै ॥ ७ ॥ किसिंदूर सैलाग मैसिंह कंन्पा ॥ किधो पद्मिनी सा रसंजुक्त धंन्पा ॥ सरोज

सनोहैमनौचारुवांनी॥ जपापुष्पकी
पीठवैठीभमांनी॥ ५॥ मनौश्रौषदीवृंद
मैरोहिनीसी॥ किदिग्दाहमैदेषिसुजो
गनीसी॥ धरापुत्रज्यौसवनेमालाप्रका
सै॥ मनिजोतिसीतक्षकाभोगभा
सै॥ ६॥ सुंदवज्र॥ आसावरीमानिकुं
भसोभैअसोकलतावनदेवतासी॥
पालासमालाकुसमालिमधेवसं
तलक्ष्मीसुभलछनासी॥ आलरूप
दसुभचित्रपुत्रीमनौविराजेश्रानि
चारुवेषा॥ संपूर्णसिंदूरप्रभाप्रभा
सैगनेसभालस्थलीचंद्ररेषा॥ १०॥
॥विजय॥ हेमनदर्पनमैप्रतिबिंबक
प्रीतहिपैअनुरागअभीता॥ पुंजप्र
तापमैकीरतिसीतपतेजनिमैकि
धौसिद्धविनीता॥ ज्यौरघुनाप्रति
हारिपैभक्तिलसैठरकेसवकेसुभ

गीता॥ तौ अवलोकि पै आनद कं
दुह्न ता सन अक सव ासन सीता॥ ११॥
दोहा॥ इंद्र वरुन मुनि सिहु जमु धर्म
सहित धनपाल॥ ब्रम्ह रुद्र लै देस
थहि आइ गए निहि काल॥ १२॥ अ
निवाच वसंततिलका॥ श्री एमचं
द्र सहसंतन सुहसीता॥ ब्रंम्हादि दे
वसवगावनसुह गीता॥ द्वैजै कृपा
लग्रहि जे जन के आत्मजाया॥ जो
गी सइ सनुम पह जोग माया॥ १३॥
श्री एमचंद्र हसि अंकल गाइ लीनी॥
सिंसासा सुषी सुभ पावक आनि दी
नी॥ देव निदुंदभी वजाइ सुभ गीत॥
गाए॥ त्रैलोक लोचन चकोर निचि
त भाए॥ १४॥ ब्रम्हांदोधक॥ एम सदा
तुम अंतर जामी॥ लोकचतुर्दस के
अभिरामी॥ निर्गुन एक तुम्ह जगजा

नै एकसदांगुनवंतवषांनै॥१५॥जो
तजेगेजगमध्यतिहारी॥जाइकहीन
मुनीननिहारी॥कोऊकहेपरिमानु
नताकोरूपुनआदिनअंतुनजाको
१६॥ताके॥तुमहींगुनरूपगुनीतु
मठोए॥तुमएकतेरूपअनेगवनाय
इकुहेरएजोगुनरूपतिहारोए॥तिहि
अष्टचीवहुतामेविहारोए॥१७॥गुन
सत्वधातुमरक्षनजाको॥अवविस
मकहेहरिगोजगुताको॥तुमहीरज
गरूहमरूपसघारोए॥अवकहेजगमध
तमोगुनभारो॥१८॥तुमहीजुगुहेन
गुहेतुमहीमे॥तुमहीविरचीमएजा
दइनीमे॥मएजादहिछांडतजांनत
जालो॥तवहीअवतारधरोतुमता
कौ॥१९॥तुमहींधरिकक्षपवषधरो
जू॥पुनिमीनव्हेवेदनकोउधरोजू॥

तुमहीजगपवराहभयेज्॥धराछीन
लईहिरनाक्षहयेज्॥२०॥तुमहीना
सिंघसरूपसिधारोप्रहलादकोदी
रघदुष्पविदारो॥तुमहींवलवांव
नवेषछलेज्॥भृगुनंदनह्वैछितक्ष
त्रहयेज्॥२१॥तुमहीसहरावनदुष्ट
सघारो॥धानीमहवूडतधर्मउवारो॥
तुमहीपुनिकलहिरूपधरोगे॥ह
तिदुष्टनिकोभुवभारहरोगे॥२२॥पु
निवोधसरूपगयाहिधरोगे॥तुमक
लिकिह्वैमलेछसमूहहरोगे॥इ
हिभांतअनेकसरूपतिहारे॥अप
नीमरजादकेकाजसम्हारे॥२३॥
महादेवपंकजवाटिका॥श्रीरघुवर
तुमहोजगनाइक॥देषहुदसरथ
कोसुषदाइक॥सोदासहितपि
तापदपावन॥वंदनकियनवहो

मनभांवन ॥२४॥ दसरथनिसिपानि
का ॥ एंमसुतधर्मजतसीयमन मा
निये ॥ वंधजनुमातगनप्रानसमजा
निये ॥ एंमकहलक्षमनविसेषप्रभ
लेषिये ॥ ईसप्रईसजगदीससमदे
षिए ॥२५॥ श्रीरामचंचला ॥ जूझिज
झिकेगएजिवांनराजरिक्षराज ॥ कुंभ
कर्नलोकहनेरक्षिमोजिराजराज
नूपोरषसोअसेषजीउदलोराप्रुश्रा
जु ॥ आइपाइलागियोतिन्हेसमेति
देवराजु ॥२६॥ दोहा ॥ वांनरएक्षस
क्षसवपत्रकलित्रसमेत ॥ पुष्पकच
ढिरघुनाथजूचलेअवधिकेहेत ॥२७
चांमर ॥ सेतुसीतहिसोभनादरसार
पंचवटीगंप ॥ पाइलागआगस्तकेअरु
अत्रिपेत्तिविदाभए ॥ चित्रकूटविलो
कितवहीप्रागआंनिविलोकियो

भरद्वाजवसेजहांजिनतेनपांवनहै
विसो॥२८॥श्रीरामप्रयासदरसन
नारकु॥चिल्लकेदुतसूक्षमसोभति
वान॥तनुहैजनुसेवतहैसुरवान॥प्र
तिविंवितिदीपतिहैजलमांही॥जनु
ज्वालमुषीजलजालअन्हाई॥२९
जलकीदुतपीतिसितासितसोहै॥व
हुपातकघातककेइककोहै॥मेहस्त्रे
नामिलेघसिकुंकुमनीको॥नपभा
रण्यषंडिदिसौजनटीको॥३०॥दंडक
चतुर्वदनपंचवदनवदनषटसहस
वदनहसिहिसिगातिगाईहै॥सात
लोकसातदीपसातहासातलनि
गंगाजूकीसोभासवहीकोसुषदा
ईहै॥जमुनाकोजलुरहोफैलकै
प्रवाहपरकेसौदासवीचवीच
गिराकीगुराईहै॥सोभनसरीरपर

कुंकमुविलेपनिकीस्यामनदुकुलझीनयलकतआरीहै ॥३०॥ सुधीमचंद्रकला ॥ भवसागरकीजनुसेतउजागरसुंदरतासिगरीवसकी ॥ तिहुदेवनकीदुतिसीदासेगनिसाधत्रिदेवनिकोरसकी ॥ कहिकेसवदेवत्रईमतिसीपरतापत्रईतलकोमसकी ॥ एवुवंदेत्रकालत्रलोकत्रिवनिहिकेतुत्रिविक्रमकेजकी ॥ ३१ ॥ भभीषनदंडक ॥ भूतलकीवेनीसीत्रवेनीसुभसोभजतुएकेकहेसुरपुरमारगविभातुहे ॥ एकेकहेपूरनहेआदिनअनंतकोउताकोयहकेसोदासतीनरूपगातुहे ॥ सवदुपहरसवसुषकरमोजानकीनेयहअदभुतसिगारअवदातुहे ॥ दासपरासहीतेधिाचरजीवनको

कोटिकोटजन्मकोकुगंधमिटिजातु
है ॥ ३३ ॥ भुजंगप्रयात ॥ भरद्वाजकीवा
टिकारंमदेषी ॥ महादेवकेसीवनीनि
त्रलेषी ॥ सवैवृक्षमंदार हूंतेभलेहैं
चहूंकालकेफूलफूलेफलेहैं ॥ कहू
हंमनीहंससोचित्तचोरे ॥ चुनेवोस
केवृंदमुक्तानमोरे ॥ सुकालीक हे
मालिकालीविराजे ॥ पढेमंत्रवेदावली
भेदभाजे ॥ कहूवृक्षमूलस्थलीता
पपीवै ॥ महामन्त्रमातंगसीबान छी
वै ॥ कहू विप्रपूजाकहूंवेद अर्चा ॥ क
हजोगसिक्षाकहूवेद चर्चाकहूं सा
धुपुरानकीगाथगावे ॥ कहूजग्यकी
सुभसालावनावे ॥ कहूं अग्निहोत्र
दिकेकर्मधारे ॥ कहूवेठकेब्रह्मविद्या
विचारे ॥ ३४ ॥ सुकारीतहांदेषिए
वक्ररागी चलेपिप्पलेतिक्ष्य ध्यास

भागी॥ जैठल्यौफूलैसबकेंहैजबनीकेजु
रामानुरागीसेवेरामहीकेजहांवारि
देवृंदवाजेंनिसानै॥मयूरीमहाननका
रिविराजे॥तहांविप्रवेंठभाट्हौजमाहै
मनोएककीवक्रलोकेससोहै॥३९॥ल
क्षमन॥दंडक॥केसोदासमृगजबछ
रूचोंषेवाघनीनिचाटतिसुरभिवा
घवालकवदनहै॥सिंघनिकोसटांपे
चेकलभकरीनिकरहेंघनकोअ्रान
नेंपंदकोरहै॥फनीकेफनपानलो
चतमुदतमोरकोधुनविरोधजहांम
दुनमदनहै॥वानरफिरतडोरेडोरेअं
धतपसीनिरिषिकोनिवासकिधोस
वकोसदनहै॥४०॥भुजंगप्रयात॥
तहांकामरैवल्कलेवाससोहै॥जि
न्हेंअल्पधीकल्पसाक्षीविमोहै॥घो
संषलादुषःदाहितुरंतै॥मनोसंभज

संगलीनैश्चनंते॥ ८१ ॥ लक्षमन
मालनी ॥ कुसमितजराजेहरष
वरषासमेसो॥ विरलजटानिसा
षीस्वर्नदीकूलकैसो॥ जगमग
दरसायेसूरकोश्रंसश्रैसो॥ सुर
नरकहतश्रीरामकोनामजे
सो॥ ८२ ॥ भुजंगप्रयात ॥ ग्रहेकस
पासैप्रियासीवषानो॥ कपेश्र
पकेच्चासतेगातमानो॥ मनोचं
द्रमाचंद्रकासोभसाजे॥ जगसै
मिलेयोभरहाजराजे॥ ८३ ॥ दो०
भस्मत्रपुंडकसोभसुभवानत
बुहुउदार॥ मनहुत्रेसोतासोन
डलिवंदनलागीवीर॥ ८४ ॥ भुज
गप्रयात ॥ मनोश्रंकरालीरन
सेसत्पकीसी॥ किधोवेदविद्या
प्रभाकीभमीसी॥ वसेगंगकी

सोभजयौ जानुकी॥ विराजेसदाजो तदंतावलीकी॥ ४५ ॥ गीतका॥ भ कुटीविराजतसोभमानहुमंत्र श्रद्भुतसामके॥ जिनकेविलोक नहीविलात श्रसेषकर्मकुकाम केमुषवासश्रासप्रकासकेसव भौरभीरनिसाजही॥ जनुसामके सुभस्वसश्रसराहसपक्ष विराज ही॥ ४६॥ श्रतिकंवुकंठत्ररेषरा जतराजुसीउनमानिये॥ श्रवी नीतिइंद्रियनिग्रहींतिनकेनिवं धनमानिये॥ श्रवीतउजिलसो भजेउरदेषियेवानतसवै॥ सुर श्रापगातपसिंधमेजनुसेतसी दासेश्रवे॥ ४७॥ दोहा॥ फटि कसिलासुभसोभजेउररिषरा जउदार॥ श्रमलकमलछति

वानमयमनोगिरिकेहार॥४८॥सुंद
री॥जरपिहरसनृपास्रोमनु॥दंड
हीसोञ्वलंवतुहैतनु॥धूंमसिषा
निकेब्याजमनोगजन॥देवपुरीकहै
पंथरचेमुनि॥४९॥नृपधरैवउवान
लकोजनुपोषतहैयप्रपाननिहैं
तनु॥मोहमहांतमकेरविमानहै
क्रोधभुजंगमंत्रवषानहै॥५०॥सस
सषाञसषाकलिकोजनु॥पर्वत
ओषदसिद्धनिकोमनु॥पापकला
पनिकेदिनदूषन॥दोषिपनांमकि
येजगभूषन॥५१॥पधिटक॥सी
तासमेतसषावता॥दंडवतकरिरि
षकोञपार॥अंगदादिअरुहनुमं
त॥सुग्रीवविभीषनजामवंत॥५२
रिषराजकरीपूजाञपार॥पुनिस
कलप्रश्नपूछीउदार॥सत्रुघ्नंभ

रा० १२९

र्यकुसलीनिकेत॥सबमित्र मातनसमेत॥५३॥भरद्वाज॥क हकुसलकहोतुम आदिदेव स र्वज्ञांननहोसंसारभेव॥विधिवि स्नसंभुरविससिउदार॥सबपा वकादिकादि अंसावतार॥५४॥ ब्रंम्हादिसकलपरिमानअंन तुमहोप्रभुहेरघुपतिअनंत॥ अवसकलदांनदैपूजिविप्र पुनिकरहुविजयवैकुंठछिप्र ५५॥इतिश्रीमतसकललोकलो चनचकोरचिंतामनिश्रीरांमचं द्रचंद्रिकापांभरद्वाजसमागमव र्णनंनामविसतिमोप्रकास॥२० दोहा॥इकईसेमेदांनकहि त्रिमममहिमबषांनि॥भरथ्यादि ककोमिलनअरुवांनरगनकी

कृति॥१॥सोमराजी॥कहादांन
दीजे॥सुकेभांतिकीजे जहांहोइ
जैसो॥कहोविप्रतैसो॥२॥भरद्वा
ज॥दोहा॥सातुकराजसतांमसी
दांनतीनिंविधिजानु॥उत्तिमम
द्धिमअधमपुनिकेसवदासवषा
न॥३॥वच्चरी॥पूजजैदुजआप
नेकरनारसंजुतजांनिये॥देवदे
वहिपाइकैपुरवेदमंत्रवषानि
ये॥हाथलेकुसगोतउच्चरिस्वने
जुतनगमांनिये॥दांनदेकछुआ
रदीजेदांनसातुकमांनिये॥४॥
दोधक॥देइनहींअपनेकरदांने
औरकेहाथजुमंगलजांनेदांन
हिदेतजुआरसआवे॥सोवहरा
जसदांनकहावे॥५॥गोपाल॥वि
प्रनदीजनहींनविधांन॥जांनोति

ए०
१२९

नकोतामसदांन॥ विप्रनिजानंनजु
जुगज्जुगनृप॥ देषहुसवहीविस्त
मनृप॥ ६ ॥ श्लोक॥ साचारेवानि
राचारेसाधुर्वासाधुरेवच॥ अवि
द्योवासविद्योवाब्राह्मणोनासकी
तनु॥ ७॥ नारकु॥ दुजधामदीज
तुधाइ॥ वहुभांतपूजिसुराइ॥ क
छुनाहिनेपरमानु॥ कहिजेसउ
तमदांनु॥ ८॥ इजकौजेदेतवुल
इ॥ कहिजेसुमधममराइ॥ गुनज्ञा
चनामिसदांनु॥ अतिहीनताक
हजांनु॥ ९॥ श्लोक॥ अभिगंम्यो
त्तमंदांनमहूतंचैवमध्यमं॥ अधमं
जाच्यमांनस्पूसेवादानंतुनिर्फलं
१०॥ दोहा॥ प्रतिदिनदीजतुनेमसौ
तासहनिसवषान॥ कालहिपाइ
जुदेतहैसोनैनिम्मकुदांन॥ ११॥

१३०

॥श्लोक॥ ज्ञातकं साधुकर्मानं ब्राह्मनं जो व्यतिक्रमेत॥ तस्य पुन्यचयो। प्याशुक्षयं जाति न संसय॥१२॥ त्रोटक॥ पहिले निजवार्त्ते निदेइञ्ज्ञ वे पुनि पावहि नागरलोग सबै॥ पुनि देइ सबै निजदेसनिकों उवसे धनु देइ विदेसनिकों॥१३॥ दोधक॥ दांन सकांम अकाम कहे है॥ पूरिस वेजग मध्य रहे है॥ इक्ष लही फल हेतु सकामे॥ रामनिमित्त बषानिय कामे॥१४॥ दांनति दक्षिन वांम वषांनो॥ धर्मनिमित्त विदक्षिन जांनो॥ धर्मविनु हूति वाम गनोजु॥ दांन कुदान सबै सु सुनोजु॥१५॥ देहु सु दांन सु उत्तम लेषो॥ हो हि कुदांन तिन्है जिन लेषो॥ छोउ सबै दिन दांनति टीजै दांन हि ते सबके मत

लीजै ॥१६॥ दोहा ॥ के सब दांन अनं
त हैं बनै न सब ही देत ॥ पृहै जो नभ
व भूप सब भूमि दांन कहं देत ॥१७॥
श्लो ॥ यत्किंचित्कुरुते पापमंतो
न तज्ञांनतोपि वा अपि गोचर्म
मात्रेण भूमि दांनेन न शुध्यति ॥१८॥
अस्माऐन हूता भर्जेनैऐ पहत्ति
हारिता ॥ हारितो हारएं पतंत्र हहन्मु
स्लेसप्तमं कुलं ॥१९॥ श्री रामदोह
कै न हि दीजै दांन भुव है रिषिरा
ज अनेक ॥ भारद्वाज ॥ देहुस स्मा
ठानि रांम दै आएस हित विवे
क ॥२०॥ श्री रामचंद्रकला ॥ कहो
भारद्वाज सतानि कौ है भयौ ए
कहा ते सबै मधि सोहै ॥ हूतेस
वै विप्र प्रभाउ भीने ॥ तजे जिन्ह के
पे अति पूज्य कीने ॥२१॥ भारद्वाज

गिरिसनाएइनपैसुनोज्यो ॥ गिरि
समोसोकहीहैकैहोज्यो ॥ सुनोमि
तापतिसाधुचर्चा ॥ करीसुयानैतु
मवृत्तअर्चा ॥ २२ ॥ श्रीनारइमे
टक ॥ मोतेजलनाभिसरोजवठो ॥
ऊंचोअतिअग्रअकासचठो ॥ ता
मेंचतुराननिरूपलयो ॥ ब्रह्माइमि
नामप्रगटभयो ॥ २३ ॥ ताकेमनते
सुतिचारभये ॥ सोहेअतिपावक
वेदमये ॥ वोहूंजनकेमनतेउपजे
भुवदेवसनासजिमोहिभजे ॥ २४
दीनोवचनुजूतिनकोचितक्के तुमत्र
समदाहोपुरहितक्के ॥ भरद्वाज
दोहा ॥ तातेरिषिराजसवेतुमछो
ड ॥ भुअदेवसनत्सनिकेपगमाड
दीनातिनकोतुमहीवचनेरोक्केहे
जगचारितपोवलपूरो ॥ २५ ॥ इंद्रव

न॥ सनासपूजाअ्र षघ्रोघहारी॥ अ
षंडअखंडत्रैलोकधारी॥ अमेषअ
धावधिभूमिचारी॥ समूलनोसैन
पहोषकारी॥ २६॥ श्रीरामनोरक॥
हनमंतवलीनमजाङ्गजहाँ॥ मनि
वेषवसंतभरथ्थतहाँ॥ रिषिकेहम
भोजनआजुकेरे॥ पुनिमातभरथ्थ
हिअेकधरे॥ २७॥ चर्तुष्पदी॥ हन
मंतविलोकेभरथसमोकेअंगस
कलमलधारी॥ वकलापहिरेतन
सीसजटागनमनफलफूलअहा
री॥ वहुमंत्रीगनमेराजकाजमेस
वहीसोहितुतारेरघुनाथपादुक
नितनमनयभगनसेवतअंजुल
जोरे॥ २८॥ हनूमान॥ सकसोक
निछंडेभूषनमंडेकीजेविविधि
वधाये॥ सुरकाजसवारेरावनमा

रघुनंदनघरआए॥सुग्रीउजसो
धनसहितविभीषनसुनडुभरथ
सुभगीता॥जयकीरतिजोसगग्र
मलसकलञ्चसोहतलछिमन
सीता॥२८ पद्धटिका॥सुनपरम
भावतीरथवान॥भयेसुषसमुद्रमे
मगनगात॥पहसत्तिकिधौकछु
स्वम्रईस॥अवकह्यौकहामोसो
कपीस॥२७॥जैसैचकोरलीलनअ
गार॥पुनिभूलिजातसिगरीसम्हा
र॥जीउठतउअतजेपोउदधिनंद
सौभरथभएसुनिरामचंद्र॥२९॥
जोसाइरहसवसाहीन॥अति
ह्वैअचेतजदपिप्रवीन॥उअतउ
ठतहसकरनभोग॥सोरामचंद्रसु
निअवधिलोग॥३२॥मालनी॥
जहतहगाजेडुंदभीदीहवाजे॥

वहुवरनपताकासिंधनस्यांविराजे
भरथसकलसेनामधयोवेषकी।
नै॥सुरपतिजनुआयोमेघमालनं
निलीने॥३३॥सकलनगरवासीभि
नसेनानिसाजे॥भरथपताकासु
उमुंड्डानराजे॥जलथलप्रतिसोभे
सुभसोभानिछाई॥रघुपतिमुनि
मानोअवधिआएआई॥३४॥चां
मर॥जत्रतत्रदासईसव्योमसो
विलोकहीं॥वांनराजरिक्षराजद्र
ष्टिम्रष्टरोकही॥सोचकोरमेषवो
घमधचंद्रलेषही॥भांनकेसमां
नजांनसोविमांनदेषही॥३५॥
मदनमनोहर॥आवतविलोकि
रघुवीरलघुवीरतजिव्योमगति
भूतलविमांनतवआइयौएम
पदपत्मकहवंधजुगदोरितवषट

पदसमानउनमानजगगाइयो॥ चूं
मिमुषसिंधिमिरअंकरषुनाथघा
अस्तुजुतलोचननिदेषिउरलाइ
यो॥ देवमुनिव्रंध्धपरसिद्धसवसि
धिजनहर्षितनपुष्पवरषानिवा
षाइयो॥३६॥ दोहा॥ मिलेभरथ
अरुसत्रुघनसुग्रीवहअकुलाइ॥ व
हुरिविभीषनकौंमिलेअंगदकौंसु
षपाइ॥३७॥ भरथचरनलछिमनप
रेलछमनकेसत्रुघंन॥ सीतापदा
लागतदयोआसिषसुभसत्रुघन
३८॥ अभीर॥ जामवंतनलनील
मिलेभरथसुभसील॥ गजगवाक्ष
सुगयंद॥ कपिकुलसवसुषकंद ३९
सिषिवसिष्ठकहदेषि॥ जनमसुफ
लकरलेषि॥ रामपरेउठपाइ॥ लक्ष
मनसहितसभाइ॥४०॥ दोहा॥ लै

रा॰
१३२

सुग्रीवविभीषनेकरिकरविनयअनं
त॥पारनिपरेवासिसकैकपिकुल
वलवुधिवंत॥४१॥श्रीरामपद्धि
टका॥मुनिजैवसिष्ठकुलआदिदेव
इतिकपिनाइकेसकलभेव॥हमव
ठततेविपदासमुद्र॥इनराषिलिये
संग्रामतद्र॥२॥सवआसमुद्रकीभूसु
धाइ॥नवदइीजनकतनयावुलाइ
निज्जुभयेभरथजौदुषःहर्न॥अ
तिसमरअमरहतिकुंभकर्न॥४३॥
इनिहैनेविभीषनसकलसूल
मनमानतुहौसत्रघंनतूल॥दस
कंधहनतसवदेवसाषि॥इहिएक
लियेहनिमंतराषि॥४४॥ताजिचि
यसुतसोदरवंधरीस॥मिलेहमहि
मनवचरिषीस॥दइीमोचुरिद्रजी
नकीवताइ॥अनुमंत्रजपतरावन

१३५

दिषाइ॥४५॥तोटक॥इनिअंगदसत्र
अनेकहने॥हमहेतहिनीदनदुष्पघ
ने॥वहरावनकोसिषदेइषदे॥नव
आएभलोसिरभूषनले॥४६॥दस
कंधकीजाइकै॥गृठयाली॥तिनकेत
नसोचहुवारदली॥महिमेमयकी
तनयाकरषी॥मतिमाअिअंकपन
कोहरषी॥४७॥दोहा॥मारैमेअ१ए
धिविनइनकोपितुगनगांम॥इनम
नसांवाचांकर्मनांकियेहमारेकां
म॥४८॥गीतका॥इनजांमवंतअने
कराक्षसलक्षलक्षनहींहने॥म
गराजसोवनराजमेगजराजमा
रतनागने॥वलभावनावलवांन
कोटिकरावनांदिकहारही॥वदिसो
मदीहदिमांनदेवदिमानआंननि
हारही॥४९॥दोहा॥करेनकरिहेक

रतन्नवकोउअ्रेसेकर्म॥जैसेवाध्यो
नलउपलसागरसेतसधर्म॥५०॥गी
तिका॥हनमंतयेजिनमित्रनारवि
पुत्रसोहमसोंकरी॥जलजालका
लकरालमालउपालपरधाराध
री॥निरसंकलंकनिहारिरावनधा
मधामनधाइयो॥इकवाटकानर
मूलसीतहिदेषिकेसुषपाइयो॥
५१॥तनुटोरआरप्रहारिकिंकरमं
त्रपुत्रसघारिके॥रनमारिअक्षकु
मारवडविधगभसोपुरजारिके॥
पुनिसोंपिसीतहिमुद्रकामनि
सीयकीजवपाइयो॥वलिवंतना
कअनंतसागरवेसहीतवआइ
यो॥५२॥दसकंठदेषिविभीषने
रनव्रंम्हसक्तिचलाइयो॥कारिपी
हसोंमरनोगनेतनवआपुउरहल

गाइयो॥ इक जांमजा मिनिमेगयो हनिदुष्टपर्वतन्ञांनिके॥ तिहिका ललछमनको जिवायोञोषधी पहिचानिकै॥५३॥ दोहा॥ ञपने प्रमकोञापनोकौ हमारोकाज॥ रिषिराजकह्यो हमंतसोभक्तनकोसि रताज॥५४॥ चामर॥ धीरवीरसाहि सोवलीजुविक्रमीछमी॥ साधुस र्वदासुधीतपीजसीजिसंजमी॥ भो गभागजोगजागवेगवंतहेजिते॥ वा इपुत्ररामकाजवारिडारियोइते॥५ ५॥ दोहा॥ सीतापाईरिपुहनोदेषे तुमञरुएह॥ रामाइनजयसिंध्ध कोकपिसिरठीकादेहु॥५६॥ रहि विधकपिकुललोगननिकोकहतहे तश्रीराम॥ देषोञाश्रमुभरथको केसवनंदीग्राम॥५७॥ सुंदरी छप्प

रा०
१३६

कैतेउतरेरघुनाइक॥जक्षपुरीपठयोसु
षदाइक॥सोदरकौअवलोकितपाथो
ल॥भूलिरहौकपिराक्षसकोदल॥कंच
नकौअतिसुधिसिंगासन॥रामरचौ
तिहिऊपरआसन॥कोपरहीरनकौ
अतिकोमल॥तामहकुंकुमचंदनकौ
क
पट॥दोहा॥चरनमलश्रीरामके
भरथपषारेआपु॥जातेगंगादिकनि
कौनासतुसबसंतापु॥६०॥पंकज
वाटिका॥सूरजचरनविभीषनके
अति॥आपुनभरथपषारेमहामति
दुंदुभिधुनकरिक्रवहुभेवनि॥पुष्प
हरषिवरषेदिविदेवुनि॥६१॥दोहा
॥पीछेतेसत्रुघ्नपेलछिमनध्यावेपा
इ॥चरनसुमंत्रपषारियोअंगदादि
केजाइ॥६२॥तोमर॥सिरतेजटाउ
उतार॥अगअंगरागनिधार॥तनमु

रिभूषनवस्त्रकोटिसौकसेनवअस्त्र
दोहा॥मिरतेपांवनपादुकालेकरभर
थविचित्र॥ चरनकमलतरगहिध
रिहसिपहिरीजगमित्र॥ ६४॥ इति
श्रीमनसकललोकलोचनचकोरचिं
तामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांभरथ
समागमोनामवर्ननंएकविंसति
प्रकास॥ २१॥ दोहा॥ बाईसयेप्रका
समेंअवधिपुरीकीरीति॥ मिलवोस
वमातानिकोकहिकेसवकरप्रीति
१॥ सुंदरी॥ अवधपुरीकहरामचले
जव॥ ठौरहिठौरविराजतहैसव॥ भ
रथभयेप्रभस्वारथिसोभन॥ चौरध
रैसुग्रीवविभीषन॥ २॥ तांगिनी॥ ली
नीछुरीदुहुंबीर॥ सत्रुघनलछिमन
धीर॥ ठौरजहांभीर॥ आनंदसहि
तमति॥ ३॥ दोधक॥ भूनलहींदिवि

तहां

औरविरजे॥री ह्वकूदिसिंदुर जे मा

वृवठावे॥४॥हीननिमेषसवैश्रव
लोकेहोइपरीइकुषांडइलोके
भूतलकीरजदेवनिसावत॥फू
लनिकीवरषावरषावत॥५॥तार
क॥मिगरदलऔधपुरीजवदेषी
॥अमरावतिअतिसुंदरलेषी॥वहु
वारविराजतदीरघषाई॥सुभट
वतरंगिनिसीफिरिआई॥६॥म
निलालकंगूरनिकीरुचिराजै॥अ
तिदीरघकंचनकोटविराजै॥पुर
सुंदरमहलनसेछविछायो॥परिवेषु
मनोरविकोफिरिआयो॥७॥दोहा
वहुवर्नपताकासो॥भ्रजैऊचीके
सवदास॥दिविदेविनिकेसो॥भि
जैमानोविजनविलास॥८॥अति
ऊचेमंदिरनपरिचिठीसुंदरीसाध
सुरनारिनकौंकरतिहैमानोअ

तिथअगाधु॥८ विजय॥ चढीप्रति
मंदरसोभवठीनरूनीअवलोकन
कोरघुनंदनु॥मानौगृहदीपतिदे
हधरैसुकिधौग्रहदेवियमोहति
हैमनु॥किधौकुलदेविदिसेकेहि
केसवकेपरदेविनिकोहुलस्यौम
नु॥जहीसुतहीइहिभांतिलसैदि
विदेवनिकोमदुघालतिहैजन
९०॥तोटक॥नरनारिभलीसुरना
रिसवै॥सुनकांहुपरेपहिचांनि
अवै॥मिलिफूलतिकीवरषेवरषा
अरुगावतिहैजयकेकरषा॥९१॥
पद्मावती॥रघुनंदनआएसु
निसवधाएपुरजनजेसेतैसे॥
दासनरसभलतनमनफूलेव
ढ़वतेजाहिनजेसे॥पियकेस
गनारीसवसुषकारीचिनवहि

रा०
१३८

रांमहिद्दुगजोरी॥जहतहचहुंवोर
निमिलीचकोरनिजमोचाहत्तचं
द्रचकोरी॥१२॥तोटक॥इहिभांत
रांमलषिहारहार॥अतिपूजतलो
गसवैअपार॥इहिभांतगएनपनां
गगेह॥जुतिसुंदरसोदरसोसनेह
१३॥दोहा॥मिलेजाइजननीन
कोजेवहीश्रीरघुराइ॥कस्तारस
अद्भुतभयोमोपैकह्योनजाइ॥१
४॥सोरठा॥पुरजनलोगअपार
यहरीसवमानतभये॥हमहीमि
लेअगार॥आएप्रथमहमारही
१५॥दोहा॥सीतासीतानथजु
लछमनसहितउदार॥सवनिमि
लेसवकेकिएभोजनएकहीवार॥१
६॥मदनमनोहर॥संगसीताल
छमनश्रीरघुनंदनमाननिकेसुष

१३६

पाइपोसवदुषहरे॥ अघुनअन्ह
वाएभागनिआएजीवनिपापअं
कभेरअसकंधरे॥ अववदननि
होरेसवेसवारदेहिसवेसवहिंनि
धनो॥ अलेहिधनो॥ ननमननस
म्हारेयहविचारभागवडेयहहै
अपनोसुकिधोहपनो॥ ७॥ सा
गता॥ धामधामप्रतिहोतिबधा
ई॥ लोकलोकतिनधुनिकीधु
नधाई॥ देषिदेषिरूपअहुति
लेषो॥ जाहिजहांतहेरामहिदे
षो॥ ९॥ दोरिदोरिपुरवासिआवे
वारवारप्रतधामनिधावे॥ देषदेष
तिनकोदेनारी॥ भांतभांतिविहि
सेसवनारी॥ १८॥ श्रीराम॥ दोहा॥
द्विनिसुग्रीवभीषनेअंगदअरुह
नुमानु॥ सदाभरथसत्रुघ्नसम

वि

माताजियमेंजांनु॥२९॥सोरठा॥
सुनिप्रांननाथरघुनाथ॥जियकी
जीवनमूरहो॥लछमनहेंनुवसा
थ॥छमिजोचूककपरिजकछु॥२०॥
श्रीरामदंडक॥पालियाकहोंकिप्र
तिहारुकिधोंप्रभुकहोंपुत्रकहोंकि
धोंमिंत्रमंत्रीसुषदानियें॥सुभट
कहोंकिधोंसिष्यदासकहोंदूत
किधोंकेसोदासहाथकोहथ्यार
उरआनियें॥नेनकहोंतनमनकि
धोंतनत्रानप्रांनवुधिकहोंकिधों
वलुविक्रमवषानियें॥देषिवेको
येकयेअनेकभांतिकरीसवालछि
मनुकोमातानुकोनगनगाइयें
॥२२॥मोटनक॥सत्रुघ्नहिवालि
कोंमकहें॥उठानिसजोजहसु
षल्लहे॥मेरेघरसंपतिजुकसव

सुग्रीवहिदेहुनिवाससवै॥२३॥सा
जेजिभरथुसवंधनको॥राषोतिन
धांमविभीषनको॥नेरिसनिकोक
पिलोगनिको॥राषोतिनधांमनभो
गनिको॥२४॥श्रीरामदोहा॥एक॥ए
कनेरिसकेजितनेवानरलोगआगे
होरहेहें॥अमितदुइकेभोग॥२५॥
इतिश्रीमतिसकललोकलोचनच
कोरचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिका
यांविजयगामनोनांमद्वविंसतप्र
कास॥२२॥दोहा॥तेहीसमेप्रका
समेरिषिवहुविधसमआइ॥राज
श्रीकेदूषनहिकरहेश्रीरघुराइ॥
१॥मल्लिका॥एककालरामदेव
साधुवंधकरतसेव॥सोभजेसभा
सुवेस॥देसदेसकेनरेस॥२॥वांनरे
सजूथनाथ॥लंकनाथवंधसाथ॥

रा॰
१३८

सोभिजेसुवेसस्रोर॥मंत्रमित्रठौरठौ
र॥३॥दोहा॥सूरसनृपविलोकिउ
उपजीमदनहिलाज॥आइगए
तैहीसमैकेसवाशिषितिराज॥४॥

ग

अगस्तअत्रिभअंगराकस्पवगोत
मव्यास॥विस्वामित्रपविचमुनि
वालमीकदुर्वास॥५॥वामदेवमुनि
कंन्वजतिभरद्वाजमनिष्ट॥पर्वता
दिदैसकलमुनिआसनहितवसि
ष्ट॥६॥नगस्त्तृपनी॥सवधरामचं
द्रजुउठेविलोकिकेतवै॥सभास
मेतिपायपरविसेषिपूजियोसवै॥
विवेकसोअनेकधादईअनूप
आसनें॥अनर्धअर्घआदिदेवि
नैकियेघनेघनै॥७॥श्रीरामनृप
कमाला॥रावरेमुषकेविलोक
तहीभएडुषदूरि॥सुफलापनि

१३८

हीरहेउरमांअस्रांनंदपूरि॥ देहपा
वनहैगपौपदपस्रकेपयपाइ॥ज
नासुहमपोसवेकुलस्रासुहोमु
निराज॥ च संनिधानभरेतिपाध
नधांमधीधनधर्म॥ स्रघसघम
एसवेनिरवद्यवासरकर्म॥ हीसज
दपिड्रसि हीभइभूरिनिर्मलइष्टि॥
पूछिवकहहोतहेजुनथापिवा
कवसिष्टि॥ ९॥ दोहा॥ गंगासंगम
तेवडेसाधनिकोसतिसंग॥ पाव
नकरिउपदेसस्रतिस्रद्भुतकरतु
स्रभंग॥ १०॥ स्रगलनराज॥ किप्र
विसेषसोस्रसेषकाजदेवराइके
सदांचलोकलोकनाथधर्मविप्र
गाइ॥ स्रनादिसिद्धराजसिद्धराज
स्राजुलीजहीनदेवतानिदेवता
निदोहसुप्पदीजहीं॥ ११॥ दोहा॥

फे

१३६ मोरुग्रीपोलेहितूकोनहेतराघुनं
द॥निरानंदसदोषिएजरपिपरमा
नंद॥१२॥श्रीरामतोमर॥मुनिग्पा
नमानसहंस॥जगजागजागप्रसं
स॥जगमाझ्रहेडुषजाल॥मुषहे
कहाइहकाल॥१३॥नहएज्जुहेडु
षमूल॥सवपापकोग्र्नकूल॥ग्र
वताहिलेरिषएग्र॥काहिकोननें
कहिजाइ॥१४॥चौपही॥सोदर
मंत्रिनिकोजिचरित्र॥इनकेहमप
रमुनिजगमित्र॥इनहीलग्पाए
जकोकाज इनहीतेसवहोतऋ
काज॥१५॥राजभारनलभेयनिद
यौ॥छलवलछीनेंसवेउनलयौ॥
जवलीनोसवराजविचार॥नल
दावंतीदियेनिकार॥१६॥राजा
मुथ्येराजकीगाथ्य॥सोपोसवमं १३९

त्रिनिकेहाथ॥संततमगपालीन
विचार॥मंत्रिनिराजादपैनिकार
॥१७॥राजश्रीरीअतिचंचलतात॥
ताहीकीसुनलीजेवात॥जोवन
अरुअविवेकीराग॥विनसैकोन
राजश्रीसंग॥१८॥सारहजलहू
धावततात॥मलिनहोतअतिता
केगात॥जदपिहेअतिउज्जलदृष्टि
तदपिअजतिरागनिकीसृष्टि॥१९॥
महांपुरिषसोजाकीप्रीति॥हरतिसु
अंग्रामागुतरीत॥विषयमरीचिकु
निकीजोति॥इंद्रियहरनिहारिनी
होति॥२०॥राकेवचनअमलअन
कूल॥सुनतहोतश्रवनतकेसूल॥
मैनवलितनवसनसुदेस॥भिद
तनहीजलउपोउपदेस॥२१॥मंत्रि
निहूकेमतनलेति॥प्रतिसदकैजो

१२१

उत्तरदेति॥पहिलौसुनौनफेरसुनं
त॥मातीकरनीजैपौनगनंत॥२२॥दो
हा॥धर्मधीरताविनयतासत्यसी
लआचार॥राजसिरीनगनैकछु
वेदपुरानविचार॥२३॥चौपही॥सा
गरमैसवकालजुरही॥सीतवक्रता
सासितैलही॥सुरतुरंगचरननितै
तात॥सीषीचंचलताकीवात॥२४॥
कालकूटतेमोहनरीति॥मनिगनि
तैमननिसरनीति॥मदरातेमादि
कताल्लही॥मंदरउदरभरीभ्रमम
ही॥२५॥दोहा॥सैसदहीवहुहंजिह्न
तावहुलोचनताचात॥असेपरा
नितैसीषियोअपरपरिषसंचार
२६॥चौपही॥इठगनवाधेहैंवहु
भाति॥कोजानैकितहैभजिजा
ति॥गजघाटनिभटकोटनिऔरै॥

षङ्गलतासरपंजरपैरे॥ २७॥ अपमा
इनकीनेवहुभांति॥ कोउंनेकित
हूभजिजाति॥ धर्मकोसमंउतजु
देस॥ तजतिभमरिज्यौंकमलन
रैस॥ २८॥ जदपिहोहिसुहमति
सत्त्र॥ फिरैपिसांचीज्यौंउनमंत्र
गुनवंतनिआलिंगतिनहीं॥ अप।
वित्रनिकौछुंइतिनही॥ २९॥ सुगनि
नाकतिअहिज्यौंदेषि॥ कंटकसेअ
तिसाधुनिलेष॥ सुधासोदए।जदपि
आपु॥ सवहीकौंअतिकटकमता
पु॥ ३०॥ जदपिपुरषोतमकीनारित
दपिसकलषलजनमनहार॥ हि
तकारिनकीअतिहैबिनी॥ अहि
तलोककीअन्वेषिनी॥ ३१॥ मन
मृगकेजुवधिककीगीति॥ विष
यवेलिकीवादिदभीति॥ मदपि

गा.

१८१

१६२

सांचिकाकेसीअली॥मोहनीदकी
सज्जाभली॥३२॥आसीविषदोष
दोषनिकीदरीगुनसनपुरिषनिका
रनिछुरी॥कलहंसनिकीमेघावली
कपटन्निसकालीकीथली॥३३॥
॥दोहा॥ कामवामकाकीकिधौ
कोमलकदलिसुवेष॥धीरधर्म
हूजराजकोमनोराहकीरेष॥३४॥
॥चौपई॥ मुषरागीजैसोमीनहूकेरहै
वातवनाइएकदोकहै॥वंधवर्गप
हिचाननतहीं॥मानोसंमपातहू
ग्रही॥३५॥महामंत्रहीहोतुनवाधु
डसीभुजंगकलंकरिक्रोध॥पांन
विलासकदिनआनतरी॥पारदान
गनेचातुरी॥३६॥मगपायहेसलता
वही॥वंदीमुषनिचाउसोपही॥
जौकैसोहूचितवेकरिदया॥वात

१३३

कहैतौबड़िपैमया ॥ ३७ ॥ दासनदीनै
हीअतिदांनु ॥ हसिबोलैतौबड़ैस
नमांनु ॥ जाकाहूसौंअपनोकैहै स
पनैकैसीपदवीलहै ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
जोईअतिहितकौकैहैसोईपरम
अमित्र ॥ सुषवक्ताईजांनजैसंतत
मंत्रीमित्र ॥ ३९ ॥ चौपही ॥ कहैक
हालगताकेसाज ॥ तुमसवजांनत
हौरिषराज ॥ जैसीसिवमूरतिमानिपै
यैसीराजसिरीजानिये ॥ ४० ॥ साव
धानह्वैसेवैपाहि ॥ सांचैदेहिपर
मपदताहि ॥ जितनैनपयाकैव
सिभये ॥ पैलिस्वर्गतैनर्कहिगये
॥ ४१ ॥ इतिश्रीमन्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनिश्रीरांमचंद्र
चंद्रिकायांराजश्रीदूषनवर्ननंना
मत्रिविंसतिमप्रकास ॥ २३ ॥ दोहा ॥

ए.
१३४२

चौवीसयेप्रकासमैकहिकेसव
अनुराग॥ग्यानध्यानमैलीनहै
वरनतहैवैराग॥ ९ ॥रामअश्रमतग
न॥सुमतिमहांरिषमुनियैजग
मैमुष्पनगनियै॥मरनजीवनि
तजेही॥मरिमरिजमभरही॥२॥उ
दारनमधारहततहै॥वहुकष्ट॥नि
मानिकसततहै॥अनततहीपीरअ
नतही॥तनउपचाससहततही॥३॥
दोधक॥पोचभलीनकछुजिय
जानै॥लैसववस्तनआंननआ
नै॥सेवततनकछुहोतवउरी॥षल
तहैतिअयानचढीरी॥४॥हैपित
मातनितंदुषभारे॥अीगतेअ
तिहोतदुषारे॥भूषनप्पासन
नीदनजावै॥षलनकौवहुभां
तिनितावै॥५॥जारतिचित्रचिता

१

दुचितारी॥ दीहतुचाअहिकोप
चवारी॥ कामसमुद्रम्रकोरानि
मूलो॥ जोवनजोरमहांम्रभम्
लो॥ ६॥ धूमसुनीलनिचोलनि
सोहे॥ जाइछुरैनविलोकनमो
हे॥ पावकपापसिषावडबारी
जारतिहेनरकोपरनारी॥ ७॥ वंकहि
येजमभासरसीसीकदेमकामक
छुपरसीसी॥ कामिनिकामनउोर
मसीसी॥ मीनमनुष्मनिकीवन
सीसी॥ ८॥ विजप॥ षेचतुलोभु
दसोहिसिकोमहिमोहमहारक
पासिकेडोर॥ उंचेतेगभगिरएव
तक्रोधधुसुजीहिजिलूहरलावत
भोर॥ असमकोरुकीषाजज्योक
सबमातकामकेबांनानियारे
मातपाचकैरपचकूटहिकासों

ए. १२५३

कैहैजगजीवविचारै॥८॥भूलत
हैकुलधर्मसवैजवहीतवहीव
हस्रानिगुसैजू॥केसववेदपुरान
निकौनसुनैसमुझैनदेसैनवैसे
जू॥देवनितैनादेवनितैनतेद
खानजसौंविलसैजू॥जंत्रनमंत्र
नमूरनैजगजीवनकामुरिसा
चवैसैजू॥१०॥रूपानिनिकेतननैना
ननकेतहफूलकेवाननिवेधु
नुजोलौ॥वाइलगाइविवेकनि
कौवहूवाधककोकाहिसाधुकु
कौतौ॥श्रीरकौलूटतौकेसव
जन्मश्रनेकनिकेतपरौनिके
पौतौ॥तौममलोकसवैजगजा
नौजौकांमुवडौवड़पारनहोतौ
॥११॥मकरंद॥कैपैवखांनीउगे
उगदीठितुचातुचकेसकुचैमत

वेली॥ नईनवगीवयकीगति
केसवदूष्ष्यदीसगईपोतनषेली॥
लियैोसववाधिनिआधिनिघ
रिजिएजवआवेजुएकीसहेली॥
भगीसवदेहदसाजियसाथर
हेदुरदीदुएसीअकेली॥१२॥
विलोकनिएरुहसेतसमेतनू
रउहकेविदियोणनगासे॥उर
किधौआइकेआपकेपंकुरस
लकिपुष्पसमलनसायो॥जरे
किधौकेसवब्याधिनकीकिधौ
औधिकेआषरअनुनपायो॥ज
एसपंजरजीउजरयोकिजुएजा
कंमएसोपहिएयो॥१३॥दिनही
दिनवाढतआधिहियेजाएजा
इसमूलसुवाषदिषेहे॥किधौ
याहीकेसाथअनाथजोकेस

वस्त्रावतजातसदादुषसैहै॥जग
जाकीतृतिजगैजगजीवनपासै
तृंजीवतुजांननपैहै॥मुनिबाल
दुसागइज्यांनीगइतेसजेसेज
एउड़एसानजैहै॥१४॥दोहा॥ज
हांभांमिनीभोगतहविनभांमि
निकहभोग॥भांमिनिछूटैजग
छुटैजगछूटैसुषजोग॥१५॥जोइ
जोइजोकरैअहंकारकेसाथ
अस्नांनदांनहोमादिव्रतभस्म
होततेनाथ॥१६॥तोटक॥जि
पमाअिअहेपदज्योंदमिय॥जि
नहींजिनहीगुनश्री(मिय॥ति
नहीतिनहीलगिल्लोभुदैसे॥प
पलतेतनवादज्योंनत्रसे॥१७॥
॥दोहा॥आंषिनिहीछितआं
घेजीवकौंवहुभांति॥धीज

धीरनबिनकातरकसात्रसाताति
१५॥त्रसाकसाषटपदीदयोक
मलमैवासु॥मत्तदंतगजगंडजु
गनकेअनर्कनिवासु॥१६॥विजय
दांनदयासुभसीलसषाविद्युकै
गुनभिछुककेविद्युकाये॥केसव
साधुसुधीसुरभीसवभाजिगईभ
मभूमिजाये॥सज्जनसंगवछेर
उरैविडरैविडरैव्रषभादिप्रवेसुन
पावैवारवरअघवाघवघेडरमं
दिरवालमकुंदनआवै॥२०॥पात
पापपयोनिधिमेमनमूठमनो
जजिहाजवठेरी॥षलतहीनत
जैजगजीवनजऊवरवानलज्वा
लजरेरी॥मूढतरंगिनमेउरझेसु
इतेपालोभप्रवाहवठेरी॥वूडत
नैतिहितेउवरेतवकेसवकाहूंन

पाठपढ़ैहीं॥२१॥कौनगनैग्रहिलो
कतहीनिविलोकविलोकजिह्वा
जनवेवीरे॥लाजविसालललता
लपटीतननधीजेसत्पतमालनि
तोरे॥बंचकताअपमानअपान
अमोघभुजंगमपातनकैस्ला॥
पाद्वरोकहूंघाटुनकेसवक्वौन
एजोइतनंगनिवेहला॥२२॥दोहा॥
जौक्यौंहूमुषभावनाकाहूंकैज
गहोतिकालुआषपलनंतनुज्यो
जवहीकादतुजोन॥२३॥विजय॥
दौनसपाननिकैकलपद्रुमरट
तज्योनिसीसहिमागे॥संषत
मागसेदुषकेसवज्योअघश्री
हीकेअनुरागे॥पापविलातप
हालेसेपलज्योअघएघवके
निसिजागे॥ज्योंइजदोषतेसंप

तिभागतिन्योंगुनभागतिलौभकें
भागे।२४॥दोहा॥ब्रम्हविस्नसि
वब्रादिदैजितनेदूहमरीरा॥नास
हिकोधावतसकलज्योंवरवान
लनीर।२५॥सुंदरी॥दोषमढौज
दमालगीश्रति॥देषतहीतिहि
तेजुजरीमति॥भोगकीश्रासनगू
ढउजागरि॥ज्योंजसागरमेंमुन
नागर।२६॥सवैया॥माछीकेहे
श्रपनेघरमाछरमूसाकेहैश्रप
नोघरश्रेसे॥कौनेंघुसीकौंघुसि
घिरोरविलाईज्योंश्रालविले
महपेसे॥कीटपखानपतंगसे
भिखुकजीवसवैभ्रमजासहजे
से॥होहुकहाकहिकेसवकौसि
हीनाघरसौंश्रपनोघरकैसे।२७
॥सुंदरी॥जैसेईहौश्रवतेसेहो

जग॥ आपदासंपदाकेनचलौमग
एकहींदेहवियोगुबिनासुन॥ हों
नकछुअभिलाषकरौंमुन॥ २८॥
जोकछुजीउउधारनिकोमति॥
जोंनतहोंतकहोंमुनिहोरतु॥ यो
कहिमौनगहीजगनाइक॥ कस
वदासमनोवचकारक॥ २९॥ चा
मर॥ साधुसाधुकाहिसभाअसेष
मोदहर्षियो॥ दीहदेवलोकतेंप्र
सूनवृष्टिवर्षियो॥ देषदेषिराज
लोकमोहियोमहांप्रभा॥ आई
योतहांतुरंतदेवकीसवैसभा॥ ३०॥
॥ विश्वामित्र॥ व्यासपुत्रकेसमा
नसुद्धिवुद्धिजानिजे॥ ईसकोअ
सेषसत्वतत्वसोवषानिजे॥ दे
षिकेवसिष्टसिष्टनित्यवस्तुसो
धियो॥ देवदेवरामदेवकोप्रवो

धुवोधियो॥ ३२ ॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायांवेदान्तदसावनेंणांनामचतुर्थविंसत्तप्रकास २४ ॥

दोहा ॥ पचीसयेंप्रकासमेवरननुकेसवदास ॥ रिषिवसिस्टउपदेसुश्रीतिकरहैवहुतप्रकास ॥ १ ॥ वसिष्टपद्धटिका ॥ तुमआदमध्यअवसानएक ॥ तुमजीवजन्मसमझोअनेक ॥ तुमहींजुरचीरचनाविचार ॥ तिहिकौनभांतिसमझोमुए ॥ २ ॥ सवजांनिवुझियतुमोहिराम ॥ सुनिजेसुकहोजगब्रह्मनाम ॥ तिनिकेअसेषप्रतिविंवजाल ॥ तिहिजीवजांनिजगमेंक्रपाल ॥ ३ ॥ निसपालका ॥ लोभमदमोहवसकांमजवहीभये ॥ भूलिगयनृपनिज

वंधति निसौंगारे॥ वजियनुवातपह
कौनविधिउध्धरे॥ वेदविधिसोधि
विधिजालवहूधांकरे॥ ८॥ श्रीराम
दोहा॥ जितलजैहैवासुनातिन
नितहूहैलीन॥ जतनकहोकैसेक
रैजीववापुरदीन॥ ५॥ वसिष्टदोध
क॥ जीवनिकीजुगभांतिउरासा॥ हो
तिसुभासुभवुद्धिप्रकासा॥ जतननिसे
सुभपंथलगावै॥ तौनवहीअपनौप
दुपावै॥ ६॥ होंमनतेविधिपरउपासी
जीवउधारनमंत्रसुनायो॥ हैपरिप
रनजोतितिहारी॥ जाइकहीनसु
नीननिहारी॥ ७॥ दोहा॥ ताकीइछा
तेभये॥ आपनमतिसिद्ध॥ तिनतेंच
तुरानविभयेतिननेजगतप्रसिद्ध॥ ८
॥ दोधक॥ जीवसवेअवलोकिउ
धारे॥ आपनेचित्तप्रयोगविचारे॥ सो

हिसुनापेतेतुम्हेसुनाऊ॥जीउउधा
रनमंत्रुवताऊ॥९॥दोहा॥मुक्तिपुरी
दरवारकेचारचतुरप्रतहार॥साध
निकेसतसंगअरुसमसंतोषवि
चार॥१०॥जगतचक्रमूतुमाखो
कज्जलकलितअगाधु॥तामेपे
ठिसुनीकैअकलंकितसोसाधु॥
११॥दोहा॥देषतहूहिककाल
छिपेहू॥जाहिनलागतकर्मकि
येहूं॥सोवतजागतनेकुनछोभै॥
सोसमतासबहीमहसोभै॥१२॥
जीअभिलाषुनकाहूकेआवे॥
पाअगअसुषदुषुनपावे॥ले
पामानदसोमनलावेसोसब
माहसंतोषकहावे॥१३॥आयो
कहाअबहोकहिकोहो॥ज्योंअ
पनोपदुपाऊसुटोहो॥बंधअब

रा॰
१५०

वंधुअवधुहियेमहजांनौ॥ताम
हलागुविचानुवषांनौ॥१४॥चार
मेएकहजोअपन्यावे॥तौतुमेपम
धुआवनपावै॥राम॥जोतिनिरी
हनिरंजनमांनौ॥तामहक्योंरवि
दिक्षवषानौ॥१५॥वसिस॥दोहा
सकलसक्तिउनिमानियेअद्भुत
जोतिप्रकास॥जातेजगकौहोतु
हैउत्पतिस्थितनास॥१६॥श्रीरा
म॥जीववधेसवआपनीमाया
कीनेकुकर्ममनोवचकाया॥जी
वतुचित्तप्रवोधनआनौ॥जीव
नमुक्तिकेभेदवषांनौ॥१७॥वसि
ष्ठ॥जाहिरहअलिप्तहहियेमें
जाहिनलागततकर्मकियेमें॥वा
हिरभेदुसोअंतसयानौ॥ताकह
जीवनमुक्तिवषांनौ॥१८॥दोहा॥

आपुनसोंअवलोकिसबहीजु
कअजुक्त॥ अहंभावमिटिजाइतो
कोनबंधुकोमुक्ति॥ १९॥ श्रीराम
दोधक॥ येसिगरेगुनहोतिहैजा
नो॥ थावरजंगममुक्तिबषांनो॥ ब
सिष्ट॥ जोंनिसबैगुनदोषनिह्ला
रै॥ जीवनमुक्तिनिकेपदमारै॥
२०॥ रांम॥ दोहा॥ साधुकहावत
कहावतकरतहैजगमैसबब्यो
हार॥ तिनकोमीचुनत्यौसककैब
हिप्रभुकोंनविचार॥ २१॥ बसिष्ट
॥ पद्धटिका॥ जगजिनकोमनतु
वचानलीन॥ ननुतिनकोमजन
कातिछीन॥ जिहिछनहूटा दु
षछीनहोनजेकरतअमितआ
नंदउदोत॥ २२॥ जोचाहैजीवनु
अतिअनंतु॥ तोसाधहि प्रानायां

रा॰
१४१

मवंतु॥सुभरेचककपूरकनासुजांनि॥अ
नुकुंभकादिसुषदांनिमानि॥२३॥
जोहृमहृममसाधहिसाघुधी॥ते
तुमहिमिलेपहीसरीर॥श्रीराम
जगतुमतेनाहींसर्वग्यांन॥ग्रवक
होदेवपूजाविधांन॥२४॥वसिष्ठउता
रुका॥हमएकसमैमनिकसेतपसाके॥
तवजाइभेजहिमवंतरसाको॥वहु
भांतिकप्योनपुक्षोंकहिआवे॥सि
तकंठप्रसंनभयेजगगावे॥२५॥स
वैया॥ऊजरउदारउवासुकिविराए
जमानहाकेसमांनग्यांनउपमांन
टोहिये॥साभिजेजटानिविचगंगा
जूकेजलवुंदकुंदकेसीकलीकेसो
एइमनमोहिये॥नषकेसीरेषांचं
दचंदनसीचारुजेअंजनसीगोरे
हृगालनुचिरोहिये॥सुषकेसीसि

हुसिवासोहैसिवजूकेसाध्यजावक
सोपावकलिलालेगोसोहियै
है॥श्री सिव॥ वह्माणिकछुरिषि
राजसयाने॥ वहुभांतिचलेतप
पंथपयाने॥ वसिष्ट॥ पुजवोपर
मेस्वरमोमनइछा॥ सिषवोप्रभदे
वप्रजापतिसिछा॥ २७॥ श्रीसि
व॥ दोहा॥ एमोउमापतिदेवनहि
एंगुनरूपुनभेव॥ देवकहतरिषिको
नसोसिषउंताकोसेव॥ २८॥ वसि
ष्ट॥ तोमर॥ हमकहाजानेअगप॥
तुमसर्वदासवगप अवदेवदेवव
ताइ॥ पूजाकहोसमुझाइ॥ २९॥ श्री
सिव॥ सुचितप्रकासअमेव॥ अव
देवमानतदेव॥ रिषिताहिपूजि
हचिमंडि॥ सवप्राकृतनकोछंड॥ ३०॥
पूजाप्रहेउरआंन॥ निर्म्मांजकोजे

ध्यान॥ यौ पूजि घटिका एक॥ जनु
किये जगपञ्च अनेक॥ ३०॥ जिय जंतु नि
यह ई जो णु॥ सव धर्म कर्म प्रयोग
सम न्हु पुपूजि प्रकास॥ नव भये हम
सदास॥ ३१॥ यह वचन का परवान
सुभ भये अनंत ध्यान॥ दोहा॥ यह
पूजा अद्भुत अगिनि कासु निपु
न नाथ॥ सवै सुभा सुभवासु नामे
जारि अपने हाथ॥ ३२॥ झूलना॥
इहि भांति पूजा पूजि जीवन पर
म भक्ति कहाइ॥ भव भग्त रसभा
गी थी म हि दे हि भ मनि वहा हि
पुनि महाकर्ता महात्यागी महा
भागी हो इ॥ सुहु भाव मे मोप
ति पूजि जै सव कोइ॥ ३४॥ दोहा
रागद्वेष विनके सिहूं धर्मा धर्म ज
होइ हरष सोष उपजै न मनक

तोमहांसुलोइ॥ २५॥ भोजअभो
जनविरतरतनीरसविरससमान॥
भोगहांहिअभिलाषविनमहांभो
गताजांन॥ २६॥ जोकछुआपिनि
देषिजेसोइवानीजानि॥ महां
निभोगीजांनिजेअंठज्ञानेताहि
॥ २७॥ तोमर॥ जिपगपानप्रभभो
हार॥ अरुजोगभोगविचार॥ इ
हभांतिहोइजुएंम॥ मिलिहेतु
म्हारधांम॥ २८॥ चंद्रकला॥ नि
मिवारवस्तुविचारकरेमुषुसाचु
हिपेकरुनाधनुहे॥ अषनिग्रह
सग्रहधर्मकथानिपरिग्रहसा
धुनिकोगनुहे॥ काहिकेसवभी
ताजोगुजगेअतिवाहिरभोग
वेसोतनुहे॥ मनुहायसदाजिनि
केतिनकेघरहीवनहेवनहींघ

स

तुहै॥ ३९॥ दोहा॥ लेइजुकहिजैसा
धुञ्जनुलीनेकोहिजेवांम
सवकेसाधनएकजगुरामति
हारोनाम॥ ४०॥ श्रीराम॥ मोहि
हूतौजगनाइकैसवहीजाम्यौ
आजु॥ अवजोकेहोविसेवनेक
रौतुम्हारेकाज॥ ४१॥ इतिश्रीमत्स
कललोकलोचनचकोरचिंताम
नश्रीरांमचंद्रचंद्रिकायांजगद्वा
रवर्ननंनामपंचविंसतप्रकास॥
२५॥ दोहा॥ छवीसयेप्रकासमे
लोकलोकसुषसाज॥ देवदेवसु
षपाइकैरांमचंद्रकेराज॥ १॥ दोट
क॥ वोलेरिषराजभाथ्यतवैकी
जेअभिषेकप्रयोगसवै॥ सत्रघ
नकह्योउपहैनरहौ॥ श्रीरांमके
नामकोतत्वगहौ॥ २॥ अधावह

धाउरआरगही॥ ब्रंम्हांसुनसो वि
नतीविनई॥ श्रीरांमकोनामरू
होरुचिकैमतिहोइमहांमनको
रुचिकै॥ ३॥ वसिष्टस्वागता॥॥
पितमजवझांनिअरुझी॥ वात
तातकोमजववूझी॥ जोगुजागु
करजाहिनश्रोवस्तांनदांन वि
धकमुनपावै॥ ४॥ हेअसक्तिसव
भांतिविचारो॥ कौंनभांतिप्रभता
हिउधारो॥ ५॥ वसिष्टभुजंगप्रया
त॥ जहीं चिंदघ्रानंदरूपेधरेग॥ सु
मेतापकेतापतीनोहरेगकेहेगा
सवेनामश्रीरामताको॥ सदासि
हिकल्पवृक्षग्राउज्ञाको॥ ६॥ कहो
नामआधोसुआधोनसावै॥ स
रैनामपूरेसुवैकुंठपावैसुधारे
दुहूंलोककेवनदोऊ॥ हियेसप्त

छाडेकहैवनकोउ॥ ७॥सुनावैसु
नैसाधुसंगीकहावे॥ कहावैक
हेपापपूरनसावै॥ स्मरैविस्मरै
वासुनाजारिडारै॥ तजेछघनको
देवलोकेसिधारै॥ ८॥नाममे॥
जवसववेदपुराननिसहे॥ जप
तपतीर्थयज्ञमिटिजेहे॥ दुजसु
रभीनहिकोउविचारै॥ नवज
गुकेवलनामुउधारै॥ ९॥ दोहा
मरनकालकासीविषैमहादेव
केधाम॥ जीवनकोउपदेसहैरा
मतुम्हारेनाम॥ १०॥ मरनकाल
कोउकहेपापीहोइपुनीत॥ सु
षहीहरपुरजाइगोगावैसवज
गगीतु॥ ११॥ रामनामकेतत्वको
जानैभेदविचार॥ गंगाधरिके
धरनिधवालमीकस्तुतिहार॥

॥१२॥ दोधक ॥ सातहुं सिंधुनिके
जलनूरे ॥ तीरथजालनिकेपयपूरे
कंचनकेघटवांनरलीने ॥ आइग
येहरिआंनदभीने ॥ १३ ॥ दोहा ॥ स
कलसवमृतिकासुभओषधी
असेष ॥ सातदीपकेपुष्पफलप
ल्लववस्तुसमेत ॥ १४ ॥ दोधक ॥
आगनुहीरनकोअतिसोहे ॥ कुंकु
मचंदनचर्चितजोहे ॥ हैसरसीस
मसोभप्रकासी ॥ लोचनमीनसरो
जविलासी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ गजमो
तिनजुतसोभिजेमारकतमनिके
प्याल ॥ उदकबुंदजुतजनुलसत
पुरइनिपत्रअपार ॥ १६ ॥ विसेष
का ॥ भांतिनिभांतिनिभाजनराज
तकोनुगने ॥ ठोरहिठोरएहेजनुफू
लिसरोजघने ॥ भूपनकेप्रतिबि

वविलोकितनृपसैनै॥ षेलनतैहैज
लमाझमनोजल्लदेवैनै॥१७॥पद्धि
टिका॥ मृगमदमिलिकुंकुमसुनी
र॥घनसारसहितश्रंवउसीर॥व्य
सिकेसरसोवहुविधिसरीर॥छिति
छिकेचारुावासरीर॥१८॥वहुव
नेफूलफलदलउदार॥तहरघुभ
िमोजनश्रपार॥तहपुष्पवृछसो
भैश्रनेक॥मनिवृछस्वर्गकेवृक्ष
एक॥१९॥तिहिउपरवरेकेवितो
न॥दिविदेषतदेविनिकेविमान॥
नृत्यगीतवाजतनिसान॥दुहुंश्रो
रहोतिमंगलविधान॥२०॥ततुउ
मरिकोश्रासनश्रनूप॥रचितहेम
मयविस्वरूप॥तहवैठश्रापुनश्रा
इराम॥सियसहितममनोरतिस
चिराम॥२१॥जनुघनदामिनि

आनंदुदेत॥ ननुकल्पकल्पवल्ली
समेन॥ किधौसुविद्यासहितगपा
न॥ किधौतपसंजुतसिद्धिजांन॥
२२॥ किधौविक्रमजुतकीरतिप्रवीं
न॥ किधौश्रीनाराइनसोभलीन
कैश्रुतिसोहतिस्वाहासनाथ॥
किधौसुदातागंगासोसाथ॥२३॥
सुंदरी॥ केसवसोभनछत्रुविराज
तु॥ माकरदेषिसुधाधतुलाजतु
सोभितसौतिनकेमनकेगन ला
कनकेअनुएगरहेमन॥२४॥ दो
हा॥ सीतलुतासुभतासवैसुंदरता
कोसाथ॥ अपनीरविकीअंसुलै
सेवतजनुनिसिनाथ॥२५॥ सुंद
री॥ ताहिलियैरविपुत्रसदारतें
चौरविभीषनअंगदठारतें॥ चंद
नचंद्रकचंद्रसुधारते॥ कीरतलै

जानकीजनुवारत॥२६॥लक्ष्मनदर्प
नकौदासोवत॥पांनसत्रुघनवंधु
षवावत॥भाएलैलैनरदेवसदा
रत॥देवअदेवनिपाइनिपारत॥२
७॥दोहा॥जांमवंतहनमंतनल
नीलमएनवसाथ॥लीएंछुवीली
सोभिजेदिगपालनिकेहाथ॥२
८॥रूपवहिक्रमसुरभिसमवच
नाचेनवहूभेव॥सभामधपहि
चांनियेभनरदेवअदेव॥२९॥श्री
ईजवअभिषेककीघटिकाके
वा १ सदास॥वाजेएकहीभेअदुंदु
भिदीहअकास॥३०॥झूलना॥
नवलोकनाथविलोकियोरघु
नाथकोनिजहाथ॥सवसेषसो
अभिषेककीमिलिउचरीसुभ
गाथ॥रिषिराजइष्टवसिष्टसो

मिलगाधिनंदनआइ॥ मुनिवाल
मीकअगस्तकेसवअंगएगनिसा
इ॥२४॥रघुनाथसंभुस्वयंभकोनि
जुभतिदीसुषपाइ॥सुरलोककों
सुएजकीनोदीहनिर्भयएइ॥वि
धसोंषिसनसोविनोकरपूजि
अरूपाएइ॥वहधादइनपव्वह
कीसवसिद्धिसुहसुभाइ॥२२॥
दोहा॥ दीनोमुकटविभीषनै
अपनोअपनेहाथ॥कंठमालु
सुग्रीवकोदीनोश्रीरघुनाथ॥२
३॥चच्चरी॥मालश्रीरघुनाथ
केउरसुभसीतहिसोदई॥स्या
पिपोहननिमंनकोतिनहूषके
करूनामई॥श्रोदेवनदेववा
नएजाचिकादिकपाइयो॥ए
कअंगदछोडिकेजोजासुकेम

नभाइयौ॥३४॥अंगद॥देवहौनर
देववानरनेरिस्यादिकधीरहौ॥भ
रयलछमनआदिदैरघुवंसकेतुम
वीरहो॥आजुमोसहजुहमाजेसु
कएकअनेककै॥बापकोअवहौति
लोदकुदेऊदीहविवेककै॥३५॥रा
म॥दोहा॥कोउमोरवंसकोकरिहै
तुमसोजुद्ध॥तवतेरोमनहोइगोअ
गहमसोसुद्ध॥३६॥विधिसोपुरि
पषारकैरामजगतकेनाह॥दीने
गांउसनोढियानिमंथुरामउलिमा
ह॥३७॥इतिश्रीमत्सकललोक
लोचनचकोरचिंतामनिश्रीराम
चंद्रिचंद्रिकायांश्रीरामअभषे
कवर्ननंनामछवीसमोप्रकास
॥२६॥दोहा॥सतार्इसेवरनिवो
केसवदासवनाइ॥अमरजालअ

स्तुतिकरहिंरामचंद्रकीआरती१॥अ
लना॥तुमहौअनंतअनादिसर्व
गसर्वदासरवरूप॥अवएकहौकि
अनेकहौमहिमांनमानतअप
भमवौकरौजगलोकचौदहलो
भमोहसमुद्र॥रचनारचीतुमता
हिजानतहैनवेदनरुद्र॥२॥श्रीम
होदेव॥अमलचरिततुमवैरिन
मलिनकरहुसाधुकैहु॥साधुपरद
रप्रियाअतिहौ॥एकथलथितिप
वसतजियजननकेसौदासदप
दपेवहुपदमतिहौ॥भूषनसकल
जुतभूमिधरेसीसभारभूपारफि
नसुअभूतभवपतिहौ॥राजाश्री
रामरतसदाहीविलोकिजतुमन
क्रमवचनकिपरमविरतहौ॥३॥रु
द्रवाच॥वैरीगारबांधनकेग्रंथ

निमेसुनिजतुलोचननेहीकोसुव
रनहरकाजुहै॥ ग्गरसेजगामीएक
वालकैविलोकिजतुमातंगनिही
केमतवारकेसोजातुहै॥ अलिग
ीनप्रतकरतेअगंमगोनदुर्गेति
हीकेसोदासदुर्गतसोआजुहै॥ दे
वताईदेषजतुगरनिगढाइगति
चित्तजिपोएंमचंद्रजाकोअसो
एजुहै॥ २॥ पितर॥ देठेएकछत्रत
रछांदसवछितिपरत्राजकुल
दसकलएहहितमतिहै॥ हीन
वामलोचनकहतसवकेसोदा
सविधमानलोचनहेदेषजत
अतिहै॥ चकरछहावतधनुष
धरेदेषिजतुपरमकपालपक
पानकरपतिहै॥ चिरचितुएजु
कौएएजाएंमचंद्रतुमसवलो

गकैहैनरदेवदेवगतिहै ॥ ५ ॥ अनि
चित्रहीमैंआजुवर्नसंकरविलोकि
जतुसाहहीमेंनारिनिकेगारिन।
सौकांमुहै ॥ धुजाकपुजोगिनिसी
चक्रैहैवियोगीदुजराजामैचदे
षीजगजलजसमाजुहै ॥ मेघतो
गगनपगाजतनगरघेरिअपज
सरजजससंहीकोलोभआजुहै ॥
दुषहीकोषंडनहैमंडनसकलज
गचित्तुनियोएमचंद्रजाकोऐसो
राजहै ॥ ६ ॥ वासु ॥ राजाएमचंद्रनु
माजेनुसराजजाकोभूतलकेआ
सपासमागरकोवासुसो ॥ सागर
मैवड़भागवेषमेषनागकेसोस
षजूमैसुषदानिविस्तलकोनिवा
सुसो ॥ विष्नजूमैभूरिभावभवको
प्रभाउजैसोभवजूकेभालमैवि

गा॰
१४९

भूतकौविल्लासुसो॥भूतिमाग्रचं
द्रमासोचंद्रमसुधाकोश्रसुश्रंतु
निमकसोदासचंद्रिकाप्रकासु
सो॥७॥देवगन॥राजाराम चंद्ररा

नुम ४

जुकेरासवकालदोरघुडमदडुप
दोनकेविदारिये॥केसोदासमित्र
दोषव्रत्तदोषमंत्रदोषदेवदोषरा
जदोषदेसतेनिकारिये॥कलहंत

क

घ्रमहिंमडिमंडलकेवल्लिवंउष
उतञ्रषंरषंडकरिडारिये॥वंचक
कठोरटेलिकीजेवारञारञ्रार
ञ्रूढपाठपाठकारीकंठमारिये
॥८॥रिषिय॥भोगभारभयभारके
सवविभूतिभारभूमिभारभूरिञ्र
भिषेकनकेजलसे॥दानभारमान
भारसकलसयानभारधनभार
धर्मभारञ्रस्तञ्रमलसे॥ज

१४९

पभाराजसभाराराजभाराजतुहैरां
मसिच्छ्रोसिषञ्रसेषमंत्रवलेस॥
देसंदसज्जत्तत्रेदषिदेषितिहि
दुषफाटततहेसत्रनिकेसीसदासो
फलसे॥८॥कविकेसवदास॥जा
इनहींकारतूतकहीसबञ्रीसवि
ताकविताकरिहोर॥पाहीतेके
सवदासञ्रसीसपठेञ्रपनाकु
रनिकुनिहारी॥कीरतिदेवनकी
दुलहीजसुदलहञ्रीरघुनाथ
तिहोरे॥सातहूलोकनिसातहूं
दीपनिसातहूसागरपारविहा
रे॥१०॥ञ्रमरञ्रनेतञ्रीरंमली
ला॥ञ्रमञ्रजरञ्रनंतजपज
पचीतञ्रीरघुराइ॥करतसुर
नरनिरषिञ्रचिरजञ्रवनूसु
निसुनिगाइ॥मनोवचञ्रमेन

रा॰
१५०

मनि रषत सिला समप रिना रि॥ सि
लौ ते अति परम सुंदर करी नैकु नि
हारि॥ ९९॥ चौरठा रत मात उपर पा
नपीउ हांड़॥ विदं उज्यों को टंउ ह

स

र कौ टूक कौ नो टुड़॥ साधु होइ ज्ञ
साधु रोष तउ जन हीं को मानु स
कल मुनि गन मुकट मनि के मर
दियो अमिमानु॥ ८८॥ सारसुंदा स
रसार चिरति कर नरत कहलाल॥
एक पति नी व्रत निवाहतन मदन
को मदु घाल॥ सुष द सुकृत पून
सो दाहनन तन पया काज॥ पल
कमे सो इ राजकां उँमा तुपितु
की लाज॥ ९॥ अंगया सो मोदु मा
नत विपन पठ ऐंठ ल॥ सुपनषा
की नाक काटी कान अरी केल॥
चिंचु चां पत अंगुली सु के पचि

लेतउराइ। वंधसहितकमंध्यके
उरमध्यपैठेजाइ॥१४॥सर्वदांसव
त्रसर्वगसर्वदांरसएक॥ अरूपसी
नाविलोकीविगपभमतअनेक॥
लक्षिचूकनसासिकैंकोगनेके
तिकवार॥तालसातउभेदियोसा
एकएककहिवार॥१५॥साधुपरम
असाधुअरुसुग्रीउकीनोमित्र॥
अपराधविनअतसाधुवालो
हन्यौजांनिअमित्र॥चलतजब
चौगांनकौलैचलनदलचतुरं
ग॥देवसबहिचलेजीतनछिं
वांनरसंग॥१६॥भूलिहूंजातन
निहारतहोतुगिरिनिसमान॥
निगरदेषेभयेगिरिनजलध
भैज्यौपांन॥जतनजतनननतर
तसजूनीढिडोलतडीर।गए

ओ ३

रा॰ सागरपारदेपगप्रागदिपाहनपी ८
१५१ ॥१७॥बाजगजरथबांहनीचदिचल
तप्रमतिसुभाइ॥लंककौनिरसं
कनीकेगएअपनेपाइ॥जगकौ
फलग्रहतजतनतनिजजनपुरिष
कहाइ॥वेजठेदएसवरीभाषिया
सुषपाइ॥१८॥कुसमकंदकल
गनकांपतनमूदिलोचनमूल॥स
मरसन्मुषसहेहसिहसिसन्ह
असबरसूल॥दूकरतनदयाद
रसतदेहदंसतुदंस॥भईबाल
कातएवनवंसकौनिरवंस॥१९॥
बांनुअलहिआनकौलगिना
जअपनौलेत॥कालकौरिपु
आपुहतिजयपत्रओरहिद
तपुंन्यकालहिदेतबिप्रनितोलि
तौलिकनंकैसबसोदरकोदईस १५१

वसर्नहीकीलंक॥२०॥होइमुक्तसु
जाहिआवैमार्तेइनिकौनांमसु
क्तएकेनभएवांनरमेकौसिंग्रा
म॥एकपुत्तविनप्रांनषायेवार
वाजेम्हात॥वरषचौदहनीरस
षपिपाससाधीगात॥२१॥छैमे
वरअपराधअपनेकोरिकोटि
करात॥अपराधुआधुनछमि
गयोइजदीनकौतिहिकाल॥जद
पित्तछमनकरीसेवासर्वभावस
मेत॥तदपिमाननसर्वदांकभि
रण्यहीसेहत॥२२॥कहतरिनि
सौपरमसांचेसकलएनाएइ
न॥तनकसेवादासकीकहिके
टगुननिवनाइ॥उतएकअले
केकोपजीतिचौदहलोक॥ठै
रजाकोकहुननताकोदेतअप

नौलोक॥२३॥छाइंरिषिदुजदेवरि
रिषिरिषिराजसवसुषपाइ॥प्रथ
मसकलसनोदियनिकमगट
पूजपाइ॥छोड़िपितरत्रसंकुहि
विपरीतिजदापिदेह॥अवधिके
सवजातसकरवांनस्वर्गसदेह
॥२४॥एकपलउरमाअज्ञाप्राह
रतसवसंसाह॥आइकेसंसार
मेइनिहस्यौभूतलभाह॥सेषु
संभुस्वयंभुगावननिगमनेति
दुजास॥ताहिलघुमतिवरनि
केसवकहैकेसवदास॥२५॥दो
हा॥इहिविधिचौदहभुवनके
गावतजनजससाथ॥प्रेमस
हितपहिराइकेविदाकीएरघु
नाथ॥२६॥झूलना॥अभिषे
ककीयहगाथश्रीरघुनायको

नरकोइ॥ पलुएकुगाइसुपाइहैव
हुपुत्रसंपतिसोइ॥ जजिजोइगीस
ववासुनामवविस्लभगतकहाइ॥
जमएपकेसिरपाइदेसुषलोक
लोकनिजाइ॥२७॥ इतिश्रीमत्स
कललोकलोचनचकोरचिंतामनि
श्रीरामचंद्रचंद्रिकायांश्रीरा
मराजवर्णनंनामसताईसमो
प्रकास॥२७॥ दोहा॥ अठाईसव
रनिवासुरपुरसमसुषसाज॥ अ
ह्मसिद्धिनवनिद्धियुतरामचंद्रके
राज॥१॥ भुजंगप्रयात॥ अनेना
सवेसर्वदासस्पजुक्ता॥ समुद्रा
वधिसप्तईतिविमुक्ता॥ सदाव्र
क्षसदफूलफलजत्रसोहे॥ छहूका
लकेफूलफूलफलेहै॥२॥ सवै
निमृगाछीकेपएपूरी॥ भरीका

मगोसीसर्वेधेनत्री॥सर्वेवाज्ञस्व
र्वाजेतनेसपूरे॥सर्वेदंतिस्वर्दतिने
दर्पपूरे॥३॥सर्वेजीवनेसर्वदानं
दपूरे॥छर्मासंज्ञामीविक्रमीसा
धुसरंजुवासर्वदासर्वेविद्याविं
लासी॥सदासर्वेसंपत्तिसोभा
प्रकासी॥४॥चिरंजीवसंजोग
जोगीअरोगी॥सदाएकपत्नी
व्रतीभोगभोगी॥सर्वेसीलसौं
गंधसुंदर्जधारी॥सर्वेव्रह्मग्यानी
मुनीधर्मचारी॥५॥सर्वेदानअन्न
स्नानकर्माधिकारी॥सर्वेचित्र
चातुर्जेचिंताप्रहारी॥सर्वेपुत्र
पौत्रादिकेसुष्मसाजेसर्वेभक्ति
मातापिताकेविराजे॥६॥सर्वे
सुंदरीसुंदरीसाधुसोहै॥सची।
सोमतीसीजिन्हेदेषिमोहै॥स

वैप्रेमकीपुन्यकीपद्मिनीसी॥ म
वैचित्रनीपुत्रिनीपद्मिनीसी
७॥भेसे॥ संभ्रमीजन्नसोकेसमा
की॥ अधर्मेअधर्मीअलोकेदु
षैतोदुषीतापतापाधिकारी॥ द
लिद्रैदलिद्रीविकारैविकारी॥ ८
॥चौपही॥ होमधूंममलिनाइ
जाहां॥ अतिचंचलदूलैहेतहां
वालनासहेचूडाकर्म॥ तीछ
नताआयुधकेधर्म॥ षदेतज
नेउभिछादान॥ कुटिलचाल
सीतांनिवषांन॥ आकेनैदुज
व्रजनिधरै॥ कोकिलकुलपत्र
निपरिहरै॥ १० फागुहोलीम
निल्लजदेषिये॥ जुवादिवारी
कोपषियेदिनउठेवओड़ी मा
प्रि॥ षेलनमेक्योहूहारियै॥ ११

दंडक॥ भावेजहांविभचारीपरना
रिविहरैमैदजैगजदंडधारीचोरि
परपीरकी॥मानिनीनिहीकेम
नमानिजतु मान भंगसिंधुहि
उलंघेजातजीतिहैसरीरकी॥मू
लतेअधोगतिनिपावतहैकेसी
दासमीचुहीसोहैविपोगइक्षा
गंगानीरकी॥वांध्योवासनानि
जांनिविधवाहेवाटिकाईश्रे
सीरितराजनीतराजेरघुवीरकी
॥२२॥दोहा॥कविकुलहीकोजां
निजेउरअभिलाषसमांनति
पिहीकौछयहानुहेरामचंद्र
केराज॥२३॥दंडक॥लूटिवे
केनातेश्रीपहनतोलूटिजत
तोरवकोमोहननुतोरिजातिय
तुहे॥घालवेकेनातेगर्भघालि

जतुदेवनिकेजाविकेनातेअ
घेवाषजायितुहे॥ वांधि
वेकेनातेतालवांधिजनकेसो
दासमाविकेनानेतेदालिद्र
मायितुहे॥राजारमचंद्रज्
केनामसवुजगुजीतिजतुहा
वेकेनातेश्रांनजन्महायितु है
॥१४॥चंद्रकला॥सवकेकलपद्र
मकेवनुहेसवकेदावानेगाज
तहे॥सवसिद्धुविसेषश्रसेष
तिसोसवलोगसवेसुषसाज
तहे॥सवकेघासोभितदेवस
भासवकेजयदुंदभीवाजतहे॥
कहिकेसवश्रीरघुराजकेराजे
सवेसुराजसराजतहे॥१५॥चं
द्रकु॥जन्महीमकलहुकलहु
प्रियनाहिकुवेरहेकुन्रुपलो

भुसववैकेवयनकौ॥पापनिकीहानि
उतुगुरनिकौवैरीकामुन्नागेसर्व
भक्षीहुपदाहकुन्नयनकौ॥विद्या
हीमवादवङ्नाइकुवारिधुरैकु
जाऽज्वैहेहनमंतुमीतुउदयनकौ॥
न्नांषिनिन्नक्षितुन्नंधुनालकेरक
सकटिन्नैसोराजराजेरामराजीव
नयनकौ॥१६॥दोहा॥कुटिलक
टाक्षकठोरकुचयेहेदुषःन्नदेव॥
दुस्वभावसेलषमेवांम्हनजातिन्न
जेव॥१७॥तोमर॥वङ्सवदवचक
मानि॥न्नलिपसपातोहरजानि॥न
रछांहहीन्नपवित्र॥सरषङ्गनिर्द
यमित्र॥१८॥सोरठा॥गुननतजिन्न
विगुनजाल॥ग्रहतिनित्नप्रतिचा
लिनी॥परचलौतिहकाल॥एकै
कीरतिजांनिये॥१९॥दोहा॥ध

नदलोकसुरलोकमयसप्तलोक
केराज॥सप्तदिपा वतमहिवसी
रामकेराज॥२०॥दसहजारदसेस
वारसावसीइहिराज॥ध्वगन
केकेमगरथकेरामचंद्रकेराज॥२१॥
॥इतिश्रीमत्सकललोकलोचन
चकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रि
कायांरामराजीवर्ननंनाम-अष्टाई
समोप्रकास॥२८॥दोहा॥नववि
नवविंसतेप्रकासमेग्रथ्यमकहो
चौगान॥धांमुधांमुवरनेनिसवे
केसवदाससुजान॥१॥चौपही
एककालअतिरूपनिधांन॥षे
लनकोनिकसेचौगांन॥हाथध
नुषसरमनमथरूप॥संगपपादे
सोदाभूप॥२॥जाकेहजवहीआ

वंद्र

इसुहोइ॥ जाइ चढे गज बाजनि
सोई॥ पसुपति सरघुपति दोवि
पे अनुगति से नु महाल षिपे॥ ३॥
वीथी सब अस्तुबानि भई॥ हय
हाथिन सोसोभति षरी॥ ततपु
जनि सोस रिता भली॥ मानहु मि
लन समुद्र हि चली॥ ४॥ रहि वि
धरां मगए चौगांन॥ साव कास
सब भूमि समान॥ सोभनए क
कोस परिमान॥ रची न चिरताप
रचौगान॥ ५॥ एक को धर घना
थरदार॥ अरथु दूसरी को धवि
दार॥ सो हत लीने हाथन छरी का
ऐपी रीत तो हरी॥ ६॥ देषन लागो
सब जग जाल॥ उपदि पाभु अगो
लालाल॥ गोला जाइ जहां जह

जैवे ॥ होत तितै तित्त ही तित्त सेवै ॥ ९ ॥
मनहु एसिक लोचन रुचि रचै ॥ रूप
संग वहु नाचन नित नचै ॥ लोक लाज
छांडे अंग अंग ॥ डोलत जन जय स
वके संग ॥ ५ ॥ गोला जाके आगे जा
ई ॥ सोई ताहि चलै अपनाई ॥ जै
से त्रिय गनकौ पातिव्यो ॥ जिहि
पायो ताही कौ भयो ॥ ६ ॥ लेकुहु
ढालिन पावै सोई ॥ इत तै उत उत
तै इत होइ ॥ कांम क्रोध मद वध्यो अ
पार ॥ मानो जीव भ्रमत संसार ॥ १० ॥
जहां तहां मो सेवक ईज्यो नाप
च विरोधी होइ ॥ बीघरी प्रत ढाकु
ए सेवै ॥ वदले वाहन वासन तवै ॥
११ ॥ दोहा ॥ जव जो जीतो हाल
ही तित वत ववजत निसांन ॥ हय ग

ए॰ १५७

यभूषनभूरिपरदीजतुविप्रनिदांन ॥ ९२ ॥ चौपही ॥ नवतिहसमएकव ताल ॥ पठैगीतुसुभवुधिरसाल ॥ गोलनकीविनतीसुषपाइ ॥ रामचंद्र सौंकीनीआइ ॥ ९३ ॥ दंडक ॥ पूरव कीपूरवकीपुरीपूरीपापरीपुरीस ननवापुरीवदूरहूतेआरतिकात है ॥ दक्षिनकीजक्षनीसीगाक्षत्रे नरिक्षमगपक्षिमकीपक्षाहीन पक्षीज्योंउरातहै ॥ उतरकीदांति हैउतारिसरनागतनिवातनिउ ताइलीउतारनिकहतहै ॥ गो लनकीमूरतिनिदीजजूअभ यदांनरामवैरकहांजाइपाइन पातहै ॥ ९४ ॥ चौपही ॥ गोलनि कीविनतीसुनिईस ॥ घरकोग

मनकैराजगदीस ॥ पुरपैठतसोभा
अतिभरी ॥ वीथीअसवारनभरिए
री ॥ १५ ॥ मनहुसेतमिलिसहितउ
छाह ॥ सरितनिकेफिरचलेपवा
ह ॥ तेहींसमैसरतनसिगरो ॥ दीप
उदोतनरमैभयो ॥ १६ ॥ नषतनिके
सीनगरीलसी ॥ मानोआधिदिवा
रिवसी ॥ नगरअसोकवृक्षउचि
रैसो ॥ मधुप्रभुदेषिप्रफुल्लितभ
यो ॥ १७ ॥ अधअधूपरउपरआ
कास ॥ चलतदीपदेषिजनुप्रका
स ॥ चौकीदेजनुअपनेभेव ॥ दे
वलोककौंवढौदेव ॥ १८ ॥ वीथी
विमलसुगंधसमान ॥ ताहिवर
नकोसकैप्रमान ॥ महाराजकौं
सहितसनेह ॥ निजुनैननिजनु

देषतगृह॥१९॥बहुविधिदेषततर
केभाइसहजसभामैबैठेजाइ॥पहु
रएकनिसबीतीजही॥बिनती
कोसुकआएतही॥२०॥श्रीशुक
उवाचहरिप्रियाछंद॥पोठिएकृ
पानिधानदेवदेवबामदेवचंद्रचं
द्रिकासमेतिरैनचित्तमोहै॥म
नौसुमतिसुमनसंगाचैतचिर
सुषतरंगआनंदमयअंगअंग
सकलसुषनिसोहै॥ललितल
ननिकेविलासभमरभमतहैं
उदासअमलकमलकोसवा
सआसपासकीनै॥नजितजि
मायादुरंगभगतएवेअनंतन
वकापदनयनवयनमानहुम
नदीनै॥२१॥घरबरसंगीतगी

तवाजतवाजेअजीतकामभ
पआगमजनुहोतहैवधाए॥ए
जभवनआसपासहीपवक्षके
विलासजगतजोतजोवनजनु
जोतिवंतआए॥मोतिनिमय
भित्तिनहीचंद्रचंद्रिकासमहीं
पंकअंकअंकिनभवभूमिभेद
सोकरी॥मानोससिपंडितक
रिजौन्हजोतिमंडितश्रीषंड
सैलकोअषंडसुंदरीदरी॥२२॥
एकदीपडुतिविभातिदीपति
मानिदीपपातिमानोभवभूप
तेजमंत्रिनिमेराजे॥औरेम
निषचितषंभाजनवझभा
तिभेएषतग्रहग्रहअनेकम
नोमोनसाजे॥अमलकमल
जलनिधांनमोतिनकेसुभ

वितानतानतापलिकाजराइ
जटितजीवहरषे॥कोमलत
ततराग्तालततनसुषकोसज
लालमनहुसोमराजपर
सुधाविंदुवरषे॥२३॥फूलन
के विविधहाराघुरलनउरम
तसुठारविचविचमनिस्याम
हाररुपमानुकंभाषी॥जीतो
सवजगतुजनितुमसोहिपहा
रमानमनहुमदनधनपततै
गुनउतारराषी॥जलथलफ
लफूलभूरिअंबरपटवासधू
रिस्वक्षजक्षकर्दमजियदेव
निअभिलाषे॥केसरिकुमकु
मजिवादिमगमदकापूरआ
दिवीरावनितनिवनाइभाज
नभरिराषे॥२४॥पंन्नगीनगी

कुमारि अरु मतुरी सुरी जिहारि वि
विधि वीन किन्नरी सु किंनरी व
जावे ॥ मानो निहि काम भक्ति स
क्ति अरु आप अरु आपनी निदेह निधारि
प्रेम निभारि भजन भेद गावे ॥ सो
दारिसां वंधन रे सेनापति दास द्व
नदे स दे स के नोरेस मंत्रि मित्र ले
षिये ॥ वहुरे सु अरु सुरसिद्ध पं
डित मुनि कवि प्रसिद्ध के सव व
हुरि राजे लोक दे षियो ॥ २५ ॥ राज

दोहा ॥ कहके सव सु षके वचन
सुन सु निपा म विचित्र ॥ राज लो
क देषन चले राम चंद्र जग मि
त्र ॥ २६ ॥ नाराज ॥ सुदेस राजलो
कु अरु आसपास को तु देषिये ॥
चौविचारि चौपरि पूरव दि
ले षियो ॥ सु वेस एक पौरि सिं

धुएकुदंतिराजेहै॥सुपेकुवाजि
राजएकनंदिवेषसाजुहै॥२७॥
दोहा॥पाचचौकमधहरचेसा
तचौकतलहारि॥षटऊपाति
नकौतहांचित्रचित्रविचारि॥२८
चामर॥भोजएकचौकमधद
सौरचीसभातिसौरविचारमंत्रि
औरनत्सकीप्रभा॥मधचौकमे
तहांविदेहकंन्यकावसै॥राम
चंदसवेभाइलीनसर्वदालसै
॥२९॥दोहा॥मंदिरकंचनकौअ
तसोहै॥स्वेततहांछितुरीमन
मोहै॥सोहनतीरषमेजुहमानो
सुंदरदेवदिवस्नवषानो॥३०॥
मंदिरलालनिकौमनुमोहै॥सां
मतहांछितुरीइकसोहै॥ताहि
प्रहैउपमासवसाजे॥सूरजअ

कमनोमनिराजे॥३१॥मंदिरनीलु
वनोमनुमोहै॥ खेततहांछतुरी
अतिसोहै॥मांनहुहंसनिकीअ
वलीसी॥प्रातहिकालउआरच
लीसी॥३२॥मंदिरसेतुलसेअत
भारी॥सोहतिहैछतुरीशुषका
री॥मानहुईसुरीसुरकेसिरसो
हे॥मूरतिराघवकीमनुमोहे॥३३॥
तोटक॥सवधांमनिमेंरकुधांम
वनो॥अतिसुंदरश्वेतसरूपस
नो॥सनिसुरवृहस्पतिमंदिर
मै॥परिपूरनचंदमनोविलसै॥
३४॥वो पद्दी॥ वहुधांमंदिरदेष
भले॥देषनसुभसालिकाचले॥
सीतभीतजैमा [illegible] रनमेत्रसै॥
पलकुवसनमालामेलसै॥३५॥

जलसालीं चात्रक ज्यों एरे॥ अलि
ज्यों गंधसालिकां गये॥ निपटरं
क ज्यों सोभतिभये॥ मेवाकी सा
लीमें गये॥ ३७॥ मानिनी निकें
से मनभेव॥ गए मांनसालीमें दे
व॥ सुभसिंगारसालाकों देषि॥
उलटेललिततनयनसेलेषि॥ २
मंत्रिनसों बैठेसुषपाइ॥ पलकु
मंत्रिसालामें जाइ॥ चतुरचोर
ज्यों सोभतभये॥ धांनीधधेन
सालहिंगये॥ ३८॥ तोटका॥ ज
वराउ में षुनाथ गये॥ बहुधां
अवलोकितसोभभये॥ चंदन
कीसबबसुधिकी॥ मनिलाल
सिंनिसुधाधधरी॥ ३९॥ बरणा
अतिलालसुचंदनके॥ उपजे

वनसुंदानंदनके॥गजदंतनिकी
सुभसीकनई॥तिनिवीचनिवी
चनिस्वर्नमई॥४०॥तिनकेसुभ
छुपराजतहै॥कलिसामनि
नीलविराजतहै॥अतिअद्भुतथं
भनिकीदुगई॥गजदंतिसुकंच
नचित्रमई॥तिनिमाअलसेव
ड़भाइनके॥सुभकंचनफूलज
राइनके॥४१॥रूपमाला॥वर्नव
र्नजहांतहांवढ़धांवनेतिवितां
न॥आलेमुकतानिकीअस्यू
मकाविनमान॥चौषटेमनिनी
लकीफटिकांनिकेतिकपाट॥द
वदेषिजुहोतहेसवदेवताजनु
भाट॥४२॥स्वेतपीतमनीनिकी
पादांचीउचनीलदेषिकेजनु

देषिजैसुभलोललोचनिमीनसु
महीरनिकेतिऋंगनिद्वाहिउरा
लाल॥सुंदरीतिनिसूलहींमनवि
वेकसुषजाल॥४३॥स्वागता॥धं
मनिधांमनिआएनसोहै॥देषि
देषरघुनाथविमोहै॥वानिसो
भसुभकौनकहैजू॥जत्रतत्रमनु
भूलिरहै॥४४॥दोहा॥जोकेर
पुनरेषएजानतवेदनगाय॥रा
गिमहलमैंएमगयएजःश्रीके
साय॥४५॥इतिश्रीमन्सकललो
कलोचनचकोरचिंतामनिश्रीरा
मचंद्रचंद्रिकायांश्रीरामसंदिर
वर्ननंनामउनतीसमोप्रकास२९
दोहा॥यहतीसयेंप्रकासमेंप्रथ
मकहैासंगीत॥भोजनविधिसव

वनिकैवहुवसंतकीरीत॥५॥वतु
पदी॥दुतंगसदनकीसहसवद
नकीवनैमतिनविचारी॥अध
धनीगसघातीचिवहुधां
सुषकारी॥चित्रीवहुचित्रनिप
मविचित्रनछकुलचारुसु
हाये॥सवदेवअदेवनिअहनर
देवनिनिषेनिषिसिनोये॥२॥
तहअशीवनिवालागलागन
गनसालावुधिवलनूपनिवा
ठी॥सभजातिचित्रनीचित्रगृ
हेतैनिकसभरीजनुठाठी॥मा
नोगनसंगनियोप्रतिअंगनि
नूपकनूपविराजे॥वीनानिवजा
वैअद्भुतगावैगिगिनीलाा
जै॥३॥दंडक॥अपघनघाइनवि

लोजनुघाइ्लनषनोसुषकेसो
एइभगटभमानहै॥ सोहेमनुलो
मैतनुनेननितुदेनुहेतुसषासो
चमोचढ्षमानविधानहै॥ आ
गमनिगमतंत्रसाधुसवमंत्रज
त्रगिगनिकाविकैकेवलआप
नहै॥ बालनिकेतननतानअमि
तप्रकासवरीअिामदेवकोम
देवकेसेवानहै॥ ४॥ पद्धटिका॥
सुनादग्रामनतनसलाल॥ सुव
गविविधूलपअलतिकाल॥ व
हुकलाजाति मूर्छ्छाजाति॥ वउ
लागगमकगननचतजाति॥ प
वहुविविधिवचनआकासचा
ल॥ मुषचालिचारुअरुसवुवा
लि॥ वहुउरफतिरफपतीअउ

ल॥ अनुलागराटरागंगजाल॥ हिउ
लथ्यौटकी अमसदिंउ॥ पदपल
टीहरमरीनिसंकाऽउ॥ सुनिनकी
भमीदोषिमतिधीतु॥ भमुसीष
तहैसतधामरीतु॥ ७॥ मोटनक॥
नाचैनरवेषअसषतवै॥ वरषैवि
रसैवहुभांतमवै॥ नौउरसमिश्र
तभाउनचै॥ कोन्वैनहिहसलके
दवचै॥ ८॥ दोहा॥ पाइपषावप्र
तालसोघतिधुनिसुनिपहगी
तु॥ मानोचित्रविचित्रमतिपर
तुसकलसगीतु॥ ९॥ अमलक
मलकरअंगुलीसकलगुननि
कीमूए॥ लागतमृदमृदंगमुष
सब्दहहतमपिपूए॥ १०॥ कोटभां
तसंगीतसुनकेसवश्रीरघुना
थ॥ सीताजूकेग्रहगएगहैप्री

तिकोहाथ॥१९॥सुंदरी॥सुंदरमंदि
रमैंमनुमोहति॥स्वर्नसिंघासनउ
परसोहति॥पंकजमेकरहाटक
माना॥हेकमलाकमलापतिज्ञा
नो॥२०॥फूलनकोसुवितांनत
नोवा॥कंचनकोपलिकाइकता
नर॥जोतिजराइजरीअतिसोभ
नु॥सुजमंडिलनेनिकसोजनु
॥२३॥कुसमविचित्र॥दरसनहीने
ननिरुचिवने॥वसनविछाएस
वसुषसने॥अतिसुचिसोहेक
वहूनसुने॥जनुतनुलेकेसमसि
कावने॥२४॥चोपही॥चंपकद
लदुतिकेगेउवे॥मनहुरूपके
रूपकउवे॥कुसमगलावनिकी
गलसुरी॥वनीजाइनानेननि
छुरी॥२५॥दोहा॥रामचंद्ररमनी

प्रभुतापपैठेजाइ॥पदपंकजनि
पंकजनिपषारिकैकाहिकेसवसुष
पाइ॥१६॥तोमर॥जिनकेनपनरे
ष॥तेपोठियेनरवेष॥निसनासि
यैइहिवार॥वहुवंदिवोलनहार
१७॥दोहा॥राजलोगजागेसवैवं
दीजनकेसोर॥गएजगावनरांम
कौंमात्रिकादिउठिभोर॥१८॥वस्त
ति॥जागिजेत्रलोकदेवदेवरामदे
वभोरभयोभूमिदेवभगतदरसपा
वै॥ब्रंम्हामनमंत्रवरनविस्तचि
त्तचात्रकषनउदहृदयकमलमि
त्तजगतगीतगावै॥गगनऊदनर
वअनंतसुकादिकजातिवंतछे
नछेनछविछीनहोतिपीनभए
तारे॥मानहूपरदेसदेसब्रंम्हदे
षकेप्रवेसठोरठोरतेविलासजा

तभूपभारे॥१२॥अमलकमलत
जिअमोलमधुपलोलटोलडोल
वैठतउरिकरिकपोलदांनमांन
कारि॥मानहुमुनिग्यांनवहुछोउ
छोउगृहसमहुसेवतगिरगनअने
कसिद्धसिद्धधारी॥तरकिनउदि
तभएदीपदेहमलिनभएसदन
हदपवोधउदपज्योकुवुद्धनासे॥
चकवाकनिकटगरीचकरीमन
मुदितभईजैसेनिजुजोतपाइ।
जीवजातभासे॥२१॥अरुनतरुन
केविलाससहससकिरनकेप्रका
ससातदीपअासपासदीपतदि
सनासैदासतअानंदकंदनिस
विनउतिमंदचंदज्योप्रवीनपर
षजुवतिहीनदीनभाषे॥निस्त
वरचंपकेविलासदासहोतहैउ

दासमूकेप्रकासत्रासभागततम
भारे॥फूल्लतसुभमकलगातअंस
भमेलसविलातअावतज्योसुषद
एममुषतिहारे॥२७॥सारसकपि
कमरालकेकींकोकिलरसालबा
ल्लतकलवारपारभूरिभेटगनिये॥
कीजेअस्नानदानसकलजानिजे
विधानवचनमानिजेप्रमानकरना
मयसुनिये॥सोदासुनमंत्रिमित्र
द्विसद्विसकनपविचित्रसवतमुनि
कविप्रसिद्धसिद्धहारेठ॥एमचंद्र
चंद्रवारमानहुचितवतचकोरकु
वलयजल्लिजलधिजोरचोपचि
त्तवाढ॥२८॥नाचतरचितचितएक
जाचकगनगनअनेकचानेमा
गधअगाधविरदवदेहैं॥मानहु
मंडुकमोरचात्रकचपकारतसोर

तडितवसनसंजुतघनस्योमहेत
तैरे॥केसवसुनिवचनचानुज्ञागे
दूसरेकुमारनपुष्पाइज्याइलीन
जनजलथलवारके॥वोलिहसि
विलोकिवीरपानदानहरीपीरप्र
रेअभिलाषलाषभांतिभांतिलो
कलोकके॥२३॥दोहा॥आगतश्रीर
घुनाथकेवाजेएकहिवार॥निकर
नगरेमगरकेकेसवआठहुद्वार
॥२४ मरहट्टा॥दिनदुष्टनिकंदनश्री
रघुनंदनअंगनआएजांनि॥आं
गीनवनारीसुवनसिगारीआरी।
लीनेपानि॥दातोनकरतहेमन
हिहारतहैवारवारघनसार॥सजि
सजिविधमूकनिप्रतिकंठक नि
ठरतहैग्रेतअपार॥२५॥दोहा॥सं
ध्याकरिरविपाइपरिवाहिरआए

रांम॥ गनकचिकित्सनिआसिषा
वंधुनिकरेमनाम॥ २६॥ मरहठा सु
निसत्र मित्रकीनपचारिवकोरैय
तरावतवात॥ सुनिजाचकजनके
पसुपंछिनकेगुनगनउर आवदात
सुभतनमंजनकरिअस्नानदांन
विधिपूजेपरनदेव॥ मिलिमित्र
सुभोदरवंधुसहोदरकीनेभोज
नभेव॥ २७॥ दंडक॥ निपटनवीन
रोगहीनछुछीरलीनपीनपान
तनमनतनयहरतेहे॥ नामेमरी
पीठिलागेनृपकेषु निडीठिडी
ठिस्वर्नअंगमढी आनदभरतेहे॥
कासकीदोहिनीस्यामपाटकी
ललितलौंईघंटनिस्योपजि
पजिपाइानिपरातिहे॥ सोभनस
नौठियनरांमदेवदिनप्रतिगीस

ए॰
१६७

तसहसदैदैभोजनकरतेहैं॥२५॥ तो
टक॥ नवभोजनश्रीरघुनाथ्यकरैं
षटरीतिमिठाइनचित्तहरैं॥ पुनि
षीरसुचोविधिभातुवसो॥ तक्रती
निप्रकारनिसोभसनो॥२६॥ षट
भांतिपिहतिवनाइरुची॥ पुनिपां
चसुविंजनिरीतिरची॥ विधिपां
चसुएरिटिनिमागतहे॥ विधिपां
चवरान्नअनुएगतहे॥३०॥ विधि
पांचअथांनेवनाइकिये॥ पुनि
छीरसुहेविधिमागिलिये॥ वि
धिदोइपक्ष्यावरीसातपने॥ पु
निआसहेविधिस्वादघने॥३१॥
॥दोहा॥ पांचभांतिज्योनारएस
षटरसनुचिप्रकास॥ भोजनके
रघुनाथ्यजूवालकेसवदास॥३२॥
हरलीला॥ वेठेविसुध्यग्रहअ

१६७

गजअगजाइ॥ देषीवसंतनितसुं
दरमोददाइ॥ मौरसालकुलकी
मकमलकाल॥ मानोअनंगधु
जराजतिश्रीविसाल॥२३॥ फूली
लवंगलवलीलतिकाविलोल॥
झूलेतहांभमरआनदकलोल॥
बोलेसुहंससुककोमलककिरा
ज॥ मानोवसंतभटबोलतहकी
ज॥ सोहेपराग चहूभागउडेसुग
ध॥ जातेविदेसविरहीजनहोत
अंध॥ पालसमालविनपत्रविरा
जमान॥ मानोवसंतदियकामहि
अग्निवांन॥२४॥ विज्जय॥ फूलेप
लासविलासथलीवहुकेसव
दासप्रकासनथोरे॥ सेषअसेष
मुषानलकीजनुज्वालविसाल
चलीदिविवौरे॥ किंसुकश्रीसुक

तुरनकीरुचिराजेरसातलमेचित
चोरै॥ चिंचुनिचापचहुंदिसिडो
लतचारुचकोरश्रगारनिभोरे
॥३६॥ मोतीदाम॥ जेरविरहीज
नजोवतगात॥ धरैउरसीतलसो
जलजात॥ मनोमनमीननिकोर
तिनाथ॥ पसारिदयोजनुमनमथ
हाथ॥३७॥ जितेनरनागरलोगश्र
पार॥ सबैवरनैरघुनाथनिहार॥
किधौपरमानदकोयहफूल॥ विल
कतिहीसुहरैसवसूल॥३८॥ किधौ
वनजीवनिकोमधुमास॥ रचौजग
लोचनभौरविलास॥ किधौमधु
कोसुषदेतश्रनंग॥ धरौमनमी
ननकाजश्रंग॥३९॥ किधौरति
कीरतिवल्लिनिकुंज॥ सवैगनप
छिनकेजहपुंज॥ किधौउदया

चलकेसिहंसु॥ किधौसरसीरुह
अपारअंसु॥५०॥दोहा॥प्राचीदिस
तेहीसमैप्रगटभयोनिसिनाथव
रनतताहिविलोककेसीतासीता
नाथ॥५१॥हरिनी॥मूंषिसचीज
नुडारदई॥फूलनिकोसुभगैट
नई॥दर्पनसोससिश्रीकरकौ॥
किधौआसनकांममहीपतिकौ॥
॥५२॥मोतिनिकोश्रुतिभूषनभ
नौ॥भूलगईरविकीत्रियमनौ॥
अंगदकोपितुसोसुनियै॥सोह
नतारहिसगहिलियै॥५३॥नृप
मनोभवछत्रुधरो॥लोकवियो
गिनिकोविरहरोदेवनिदीजलरा
मकह्यो॥मानहुफूलसरोजरह्यो
फैनुकिधौनभसिंघलसे॥देवा

नदीजलतुहंसवसै ॥ ९४ ॥ दोहा ॥ ॥
चारुचंद्रकासिंधमैसीतलसरस
सतेज ॥ मनौसेषमयसोभिजेहरि
नाधिष्ठितसेज ॥ ९५ ॥ श्रीराम ॥ दउ
क ॥ केसोटासहैउदासकमलाक
रसौंकोसोषकप्रदोषतापतमोग
नतारियै ॥ अमनअसेषकेविसेष
भाववरषतकोकनदमोदचंदउषं
उनविचारियै ॥ परमपीयूषपदवि
पुषपनुषनुषसंमुषसुषदविव
धनिउरधारियै ॥ हरिहरीहियमैं
नहरिनहरिनैननचंद्रमानचं
दमुषीनारदनिहारियै ॥ ९६ ॥ हनु
मान ॥ अंकनससंकतपयोधि
उकीपंकनसुअंजननरंजितर
जनिनिजनारीको ॥ नाहिनैअ

लवकज्ञलकतितमपुंजनिकीछि
तिछांहछहीछलुनांहीमुषकारी
कौ॥केसवकृपानिधानदेषियेवि
राजमांनमानियेग्रमानएमवेन
वनचारीकौ॥लागतहैंजाइकेउ
नागदिगपालनिकेमेरेजानमो
हीकत्निकीरातितिहारीकौ॥४७
॥दोहा॥आहीजानिवसतरित
वननिविलोकैएमुधएनिधसो
सीतसहितरतिसमतजनकाम
॥४८॥इतिश्रीमत्सकललोकलो
चनचकोरचिंतामनश्रीरामचंद्र
कायांवसंतालोकवर्ननं॥नाम
त्रिविसतप्रकास॥३०॥दोहा॥
इकतीसएप्रकासमेंउपवनकौ
अनुराग॥सीताकोवरननकरैस

सु॰
१७०

षसौं सुषकै भाग॥९॥ ब्रह्मरूपक॥
भोर होत नहीं गसौं सु राज लोक मध्य
बाग॥ बाज राज स्त्रानि सौं सु शिगित
रूप सानुराग॥ सुभ संभ चारि होत तिम
सु रनिके उदार॥ सी बिसी षेल तिन
होति चित्र चंचला प्रकार॥ २॥ तोमर
॥ चढि बाज ऊपर राम॥ बन कौं चले त
जि धाम॥ चढि चित्र ऊपर काम ज
न मित्र कौं सु निराम॥ ३॥ मग मै बि
लंबु ना कीन॥ बन राज मध्य प्रवीन
सब रूप भूप दुराइ॥ जुवती बिलो
कित जाइ॥ ४॥ स्वागता॥ राम साथ
सुक एक प्रवीनो॥ सीप देषि गन ब
नै नलीनो॥ केसपास स्त्रति स्याम
सनेही॥ हास होत प्रभ जीव बिदे
ही॥ ५॥ भांति भांति कवरी सुभ देषी॥ ७०

रूपभूपतरवारविसेषी॥प्रियाप्रेमअ
मरापनहारी॥दोहदुषःषलषेउन
हारि॥२॥चौपही॥किधोसिंगारि
सरितसुषकारि॥वंचकतानिवहाउ
नहारि॥कंचनपत्रपातिसोपांन
मनहुसिंगारलोककेजांन॥७॥सी
सफूलसिरवेंदालसे॥भांगसुहा
गमेनोसिरवसे॥पाटिनिचमक
चित्रचोधिनी॥मानोदमकतिहै
दामिनी॥८॥सेदुरमागभरीअत
भली॥मोतिनिंकीतिनपेअव
ली॥गंगागिरातनसोतनजोर॥नि
कसीजनुजमुनाजलफोर॥९॥सी
सफूलसिरजसोजराइ॥मांगफू
लसोहेतिहिठाइ॥वेनीफूलनि
कीवनिमाल॥भालभलोवेद
जुतलाल॥१०॥तमनगरीपरेते

सु॰
१७२

जनिधांनमानोचठेवारहभांन म
कुटिकुटिलवङ्कभाइनिभरी॥ ला
लल्लालदुतद्वीसनिषरी॥२१॥म
गमदतिलकुरेषजुगवनी॥ तिन
कीसोभासोभनिषनी॥ जनुजम
नाषेलतिसुभगाथ॥ पासपितह
पसारेहाथ॥२२॥ पंकजवाटिका॥
लोचनमनहमनोभवजंत्रनि॥ भं
जुमऊपरहेंहरमंत्रनि॥ सुंदरसुष
दसुअंजनिअंजित॥ वांनमदन
विषसोजनुरंजिति॥२३॥ चौप
ही॥ सुघटनासिकाजगुमाहियो॥
मुकतफलनिजुक्तसोहिपों॥ आ
नदलनिकामनहसफूल॥ सुहि
जातससिमनहसफूल॥२४॥ पं
कजवाटिका॥ जनुभालतिलकु
रविबनहिलीन॥ नपभूपअंका

सहदीपदीन॥ताटंकजटितमनि
स्रुतिवसंति॥रविचक्रएकारथसे
लसंत॥२५॥स्रुतिमूलमलीनसह
अलकलीन॥फहराति पताकाज
नुनचीन॥स्रुतिस्रवनदसनदुति
यालसंति॥जनुदाडिमबीजनिको
हसंति॥२६॥संध्याहिउपासतभू
मिदेव॥केवांमदेवकीकरतसेव॥सु
भतिनिकेसुषमुषकेसुवासु भष
उपवनमलयाचलनिवासु॥२७॥
चौपही॥मदमुसक्यानिलतामु
तुहारे॥वोलतवोलफूलसेझरे॥
तिनकीवांनीसुनमनहारे॥वांनी
वीनाधरेअतारे॥२८॥लटकेंअधि
कअलकचीकनी॥सूक्षमअमम
लचिलकसोंसनी॥नकमोती
दीपकदुतिज्ञानि॥पाटीजनिहि

ऐहितदानि ॥२१॥ जोतवढावति द
सउमारि ॥ मानङ्गस्यामलसीक
पमारि ॥ जनुहितहीरविरचैतेछा
र ॥ स्यामपाटकीडोरीडोरि ॥ २७ ॥
नूपअनूपउचिरसभीन ॥ पानुर
नैननिकीपतरीनि ॥ नेहनचावत
हितरतिनाथ ॥ मरकतलकुटलि
येजनुहाथ ॥ २८ ॥ दोहा ॥ गगनचं
दतेअतिवडोतिसमुषचंदविचार
दशीविरंचविचारतिहिकलाचो
गनीचारु ॥ २९ ॥ दंडक ॥ दीनोडी
सदंडवलुदलवलुवधिवलुनप
वलुप्रवलप्रवलसमीपकुलव
लकीकेसवपरमहंसुवलुवाहु
कौसवलुकहाकहौवडौप्रवडा
डीदुगजिल्लकी ॥ विधिवलुचंडव
लुश्रीकौवलुश्रीसवलुश्रीसकर

हैमित्रवलुरक्ष्यापलुपलकी॥ मंत्र
वलुहींनजांनुअवलामुषनिआ
नीनी किहीं छिड़ाइ लहीकमला
कमलकी॥२३॥ दोहा॥ रमनीमुष
षंटलनिरषिए कामनुलजाइ॥
जलदजलधसिवसुरमेएषतुव
दनुदुएइ॥२४॥ हाकलिका॥ भूष
नग्रीवनिकेसवभांतिनिसोहति
हे॥ लालसितासितपीतप्रभाम
नमोहतहे॥ सुंदरएगनिकेजनु
वालकुआनिवसे॥ सीषनकोंव
हुभागनिकेसवदासलसे॥२५॥ चौ
॥ चौपही॥ हरिसीसुंप्रदषिना
मुक्ताभानप्रभाभूषिता॥ काम
लमदनिवंतसुहेला॥ अलंकार
मयमोहनमिला॥२६॥ काम्पपध्ध

तिसोभागहै॥ तासौवाहूपासकवि
कहै॥ नवरंगवहूअसोककेपत्र॥ ति
नमैराघवरामचरित्र॥२७॥ देषहू
देवदीनकेनाथ॥ हरतिकुसुमके
हारतिहाथ॥ सुंदरअगरनिम
दीवनी॥ मनमथप्रभुवरनिसी
मतिघनी॥२८॥ राजलोकमंन
चिरये॥ मानौकामिनिकानिकर
कैलये॥ अतिसुंदरउरमैउरजा
त॥ सोभावरनैजनुजलजात॥२९॥
अषिलनूपमयजलकरिधरे॥ व
सीकरनचूरनचयपरे॥ कामकु
अरअभिषेकनिमित्र॥ कलसर
चैजनुजोवनुमित्र॥३०॥ दोहा॥
रामसजलश्रृंगारकीललितता
सीराज॥ जिनहिफलनेकुचनृप

फललैजगजोतिसमाज॥३१॥चौ०॥
अतिसठुमरोमावलिवेषि॥उपमा
दीनीसुकसविसेष॥उरमैमनोम
दनकीरेष॥नाकीदीपतिदिपति
विसेष॥३२॥दोहा॥कटिकेतत्व
नजानियेसुनिप्रमत्रभुवनराइ॥
जैसेसुनियतुजगतकेसतअह
असतसुभाइ॥३३॥नराज॥नितं
ववित्रफूलसेकरिम्रदेसछीनहे॥
विमूतमेटिसीसवेसुलोकला
जलीनहे॥अमोलऊजरेउदाज
भजुग्मजानिये॥मनोजकेप्र।
मोदहोंविनोदजंत्रमानिये॥३४॥
छवानकीछईनजाइसुध्यसा
धमाधुरी॥विलोकिभूलिज्ञान
चितचित्तचालआतुरी॥विसु

पादपद्मचतुअंगुलीनषावली
अलक्तजुतमित्रकीसुचितवैठ
कैवली॥३५॥दोहा॥कठिनभूमि
अतिकोवरीजावकजुतसुभांइ॥
जनुमानिकतत्तुवानिकीपहिरी
तरीविनाइ॥३६॥चौपही॥वरनव
रनअगियासुधरे॥मदनमनोह
रकेमनहरे॥अंचलअतिचंच
लतुचिरचेलोचनचलजिनि
केसगनचे॥३७॥दोहा॥नष
सिषभूषितभूषननिपठिसुव
नेकमंत्र॥जोवनश्रीचलजा
निकेवांधेरक्षाजंत्र॥३८॥संपू
र्णमूर्त्ति॥मोहनसक्तिनअसी
मकरध्वजकीजैसी॥मंत्रवसी
करसाजेमोहनमूरतिराजे ३९

॥रूपमाल॥ भालमैभवा।षिधो
समिकीकलाजनुएक॥सोषुति
हिउपजावहीमद्दहांसचंद्रस्त्र
नेक॥मा।एकविलोककेहाजा
।किकियाछा।॥नैनको।चितेकु
रैको।पतिचित्रमाअस्त्रपा।॥४५॥
॥चौपही॥कंटकअटकतफटि
फटित॥उडिउडिजातवसनजान
उनिकेतननवनहिलषपरे॥मन
गनसुमनसुमनधरे॥४२॥दो
हा॥उपमागनउपजाइहाविग
।एसंसा।तिनकीउपमापेसपा
।चि।षीक्रता।॥४२॥इतिश्री
मत्सकललोकलोचनचकोरचिं
तामनिश्रीरामचंद्रचंद्रकाया
जुवतीजनवर्ननंनामइकतीस
माप्रकास॥३१॥दोहा॥वतीसे

जा

मेवागविधिवहुफूलैफलवेलि॥प
र्वतनैसलितापुगटअरुकाहिजे
जलकेलि॥१॥सुंदरी॥जानुकीके
जियकेसुषदाइकु॥अचांनकजोर
पोरघुनाइकु॥अैसेचलेसवकेव
नलोचन पंकजवातवहेमनरो
चन॥भ॥रांमसौरांमप्रियाकहोसो
हसि॥वागदिषावहुलोकनुकेम
सि॥रांमविलोकतवागअनेतहि
जैसोअवलोकतिकांमवसंतहि
॥२॥लोचतमोरनहासुषसंजुत
जैसोविरदावलिभाटनिकेसुत
कोमलकोकिलकेकुलवोलत
पानकपाटकुचीजनुषोलत॥८॥
फूलतजेवहुवक्षनिकेगन॥छं
उतआनंदआसुनिकोजन दा
डिमकीकलिकामनमोहत॥है

९८

मकुपीजनुवंदनसौं॥५॥ दोहा॥म
धुवनफूलेदेषिसववनतेहैनिर
मक॥ सोहतुहाटकुषचितितिजु
वतिनकेताटंक॥६॥ दोधक॥ वे
लकेफूलसेअतिफूले॥ भौरभमे
तिनिकेरसभूले॥ पोकरवीकेली
वनएजे॥ मनमथवाननिकीग
तिसाजे॥७॥ केतुकीपुंजप्रफुलि
तसोहे॥ भौहहेतिन[illegible]तेमन
मोहे॥ श्रीरघुनंदनआवतभाग
जेअपलोकहतेअनुएगे॥८॥
दोहा॥ स्यामअनंदुतिपलककी
फूलेवहुतप्रलास॥ जगेकामकौ
लामनोमधुरितुवातविलास
९॥ तोटक॥ वहुचंपककीकलि
काहुलसीतिनमेंअतिस्याम
लसाभलसी॥ उपमासुकसारि

वि

कचित्रधरी॥ जनुहेमकुपीसवसो
धभरी॥१५॥ चौपही॥ अलिउठिधर
तमंजरीजाल॥ देषेलाजसजेसस
ववाल॥ अलिअलिनीकेदेषत
भाइ॥ चुंवतचतुरमालतीजाइ॥१॥
अद्भतिगतिसुंदरीलोक॥ विहस
तिषुषटपटमुषरोक॥ गिरतस
दाफलश्रीफलवोज॥ जनुधस
देतिदेषिवछोज॥१४॥ नारक॥ उ
दरउरदाडिमदीहविचार॥ सुंद
रीनिकेदंतनिहार॥ अतिमंजु
लवंजुलकुंजविराज॥ वहुंग
धनकेतनपुंजनसाजे॥१३॥ नर
अंधभएटरसेतनुमोर॥ जिनि
केजनुलोचनहेकेइठोर॥ थ
लसीतलतप्रसुभावनसाजे॥ स
सिमरजकेजनलोकविराजे॥

॥१४॥ जलजंत्र विराजत भाति भली
है॥ धरते जलधार अकास चली है॥
जमुना जल सक्षम वेष सुधारे॥
जन चाहति है रवि लोक विहारे॥
॥१५॥ चर्च्चरी॥ भांति भांति के हाक
हां लग वाटिका वहुधां भली॥ ब्र
म्ह घोष वसे तहां जनु है गिरा वन
की थली॥ नील कंठन चैवने जनु
जानि जे गिरिजा वनी॥ सोभजे
चहु घां सुगंध मनो मलै वन की
घनी॥१६॥ चौपही॥ करूनामय
वहु कालनि फली॥ जनु कमला
की वास स्थली॥ सो भति रंभा सो
भामनी॥ मनो सची की आनंद
वनी॥१७॥ कमला॥ ततु चंदन के
उज्जलतन धरे॥ लपटी लवंग ल
ता मनु हरे॥ नपदेषि दिगंवर वे

१०· दनकेरे॥ सिचंद्रकलाधत्नूपनिध
१२८ रे॥१८॥अतिउज्वलतासवकाल
हिवसे॥सुषहीपिककेमुषहीवि
लसे॥रजनीदिनआनंदनिहे॥ ६
मुषचंदनकीजनुचंदिनिहे॥१९॥
४ सवजीवनकोवहुष्पजहां॥विर
हीजनहीकहदुष्यतहां॥अग
मुपानहिकोसुनियं॥अतिहां
निसुसोकेहिकीतिनियं॥२०॥
दोहा॥तापहिकोताउनजहांत्रि
षचातकको चित्त॥पातफूलद
लनकोभमुभोरनकोनित्त॥२१॥
॥तारक॥तिनिमेइकुकत्सुकुप
वीतुसोहे॥म्रगपक्षिनकोजहपु
जविमोहे॥वहुभांतिसुगंधमले
गिरमानो॥कलधौतसुनूपुसुभ
उवषानो॥२२॥अतिसीतलसं १२९

करकोगिरिजेसो॥ सुभसेतलसे
उदयाचलतेसो॥ दुतिसागरमम
यनाकुमनोहै॥ श्रजलोकम
नोदुतिहंसघनोहै॥ २३॥ तोटक
सोतोतिहितेसुभतीनिचली॥
सिगरीसलितानिकीसोभदली॥
इकचंदनकेजलउज्जलहै॥ जनु
जेनहुसुताशुभसीलगहै॥ २४॥
॥ चौपही॥ सुजकोमारगुच्छ
वछायो॥ जनद्विवितभूतलर
विआयो॥ जनुधरनीमेलसति
विसाल॥ तुरितजुहीकीजनुव
नमाल॥ २५॥ दोहा॥ तज्योनभा
वैएकुपलुकेसवसुषदसमीप॥
जातसोहतुतिलकसोदीनो
जंवूदीप॥ २६॥ दोधक॥ एननि
केमदकेजलदुजो॥ हेजमनाज

लकेपयपूजी॥धारमनौरसराज
विलासनपंकजजालमईवनमा
लनि॥७॥दोहा॥दुषषंडनत
षारसीकिधौंअषलाचारुकी
डागिमौतनगकीपहहकेहसंसार
॥८॥कीडागिरतेआलिनिकीआ
वलीचलीप्रकास॥किधौंप्रतापी
नकीपदवीकेसवदास॥९॥चौ
पही॥औरनदीजलकंकुमसो
हे॥सुभगएामनमानहुमोहे॥कं
चनकेउपवीतहिसाजे॥भाते
सौंपहषंडविराजे॥१०॥फूलप
एगनिकोमनुमोहे॥पावनफू
लडुहूंदिसिसोहे॥लौंगफूल
मयसेवदलेषी॥एलवीजवकु
कालुकदेषी॥कौरिफूलदल
नावनिमाही॥औसुगंधतह

हैवहुधाही॥३०॥दोहा॥षेवत
मेत्तमलाहअलिकावनैपह
जोति॥तीनोसरितामिलत
जहतहांत्रवेनीहोति॥३१॥सो
ताश्रीरघुनाथजूदेषीअमति
सरीर॥दुमअवलोकतिछां
हकैगयजलाश्रवतीर॥३२॥
चौपही॥आएकमलवासुसु
षदेन॥सुषवासुनिआगेहैंलैन
न॥देषोजाइजलाशयचारु
सीतलसुषदसुगंधअपारु॥३
४॥चतुपदी॥वनुश्रीकोदर्प
नचंद्रातपजनकिधोसरदआ
वास॥मुनिगनमनसाविरहीज
नसोविसवलथानिविलास॥
प्रतिविंवितथिरचरजीवमनो
हाजनहरिउदरअनंत॥वंधन

जुतसोहैत्रभुवनमोहैमानोव
लिजसवंत॥३५॥चौपही॥विष
मयपैसवसषकोधामु॥संवरन
पवठावैकाम॥कमलनिमध्य
मधुपसुषदेत॥संतहिसोजनुह
रिहिसमेत॥३६॥वीचवीचफूले
जलजात॥तिनितेअलिकुलउडउ
डजात॥संतहियनतेमानहुभा
जचंचलीपापकीराज॥३७॥दं
डक॥एकदमयंतीऐसीहरैहं
सिहूंसवंसएकहंसिनीसीवि
सहारहियेरहिये॥भूषनगिर
तएकलेतिवडवूडवीचमीनग
तिलीनहीनउपमानटोहिमी
एकपतिकंठलागिलागिवूडि
वूडिजातिजलदेवतासीदिवि
देवताविमोहिए॥केसोदास

जल

वेल

आसपासभ्रमभ्रमतजलकेलि
मैजलजमुषीजलज्वैसीजा
हिए ॥३८॥ दोहा ॥ क्रीडासरवामे
नपतकोविहृधांजलकेलि ॥ नि
कसततरुनसमतज्योंसूरजाकरन
समेलि ॥ ४९ ॥ हाकलिका ॥ नीर
नितेनिकसीत्रियसबै ॥ सोहतिहे
विनभूषनतबै ॥ चंदनचित्रकपोल
निनहीं ॥ पंकजकेकरसोहततहीं
॥४०॥ मोतिनिकीविथुरीसुभछूटे
हेउरओउरजातनिलटे ॥ हांसिनि
गालत्ताजनुवनी ॥ भेटतिकेल
पलताजनुअनी ॥ ४१ ॥ केसनिवा
रनिसीकरएमेंऐसेनकीतमपीज
नुवमे ॥ सज्जलश्रवएछोउतवैने
छूतहेजलकेकनषने ॥ ४२ ॥ भोग
भलेजिनसोमिलकर ॥ छूटतजा

रा॰
१३०

नतिरोवतिषरे॥भूषनजेजलमध्य
हाहे।तिवनयालवेधूरिनिलहे
॥४३॥भूषनवस्त्रजहींसाजिलए।
चारहुंहादुंदिभीदए॥४४॥दोहा॥
गंगकुभवावरेवहिरवाबनब्रह्म॥
जानिलियेजनआइसोषोरबं
उप्रसिद्ध॥४५॥चोपही॥सुषदसु
षासनगनपालिकी॥फिरकवाहि
नीसुषचालिकी॥एकनिजातं
हयसोहिये॥ब्रषभकुंगआंगमा
हिये॥४६॥तिनचढराजलोकुस
बुचलो॥नगरनिकासोभाफल
फल्यो॥मनिमयकनकजालका
षनी॥मोतिनकीझालरिअति
बनी॥४७॥घंटावजतचहुंदिस
भले।रामचंद्रतिहिगजचढिच
ले॥चपलाचमककचाउआतिय

ठ॥मनैनोमेषमघवाग्रानूठ॥४९॥चाम्र
सपासनरदेवग्रपार॥पायपयादे
राजकुमार॥इहिविधिगएराजद
रबार॥वंदीजनजसुपठतग्रपार
॥४९॥विजय॥भूषितदेहविभूति
दिगंबरनाहिनेग्रमरग्रंगनवीने॥
हरकेसुंदरसुंदरीकेसबदोरदीन
मैमदिरकीने॥दषिजमंडितदंड
निसेभुजदंडदवोग्रसिदूंडविही
ने॥राजनिश्रीरघुवीरकेवरकुंमे
रलकंडिकमंउलत्तीने॥५०॥दो
हा॥कमलकुलनिमेजातुज्योंभ
मरभ्योरसचित्त॥राजलोकमेंतो
गएरामचंद्रजगमित्र॥५१॥इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनश्रीरामचंद्रचंद्रिकांपां
उपवनविदेवर्णनंनामबतीम
नो

ए॰
१८१

सोप्रकास॥३२॥दोहा॥तेतीसये
प्रकासमेचतुराननसिषपाइ॥ही
नाहैसुतजननिमिहेवाल्मीकके
जाइ॥१॥त्रभंगी॥दुर्जनदलनेइ क धा
त्रभुवननाइकेहेजगनाइकरघु
नाइक॥सोभेसिंघासनप्रभाप्रक
सनदुषनासिक॥सुग्रीवविभी
षनसकलवंधजनसहिततपो
धनभूपतिकगन॥आएसवमु
निजनसकलदेवगनिषगनि
षंगमृगकाननचतुरानन॥२॥तो
टक॥अतिआदरसोअकुलाइ
नए॥अतिपूजनकेवहुधाविनए
सुषदाइकआसनसोभयेस
विकोज्ञजथाविधिआनदये॥३
२
॥दोहा॥सवनपसावूझियोकु
सलप्रसंनवनाइ॥चतुरानन।

कर्म
विना
सन

१८१

बोलेवचनअधाविनयवनाइ॥
४॥मानोरमा॥सुनिजेचितुदेज
गकेप्रतपालक॥सवकेउरहो
हंजिहृपिवालक॥सवकोस
वकालसदासुषदाइक॥जनगा
ववेदमनोवचकाइक॥प्रतुम
लोकचेतचिसोवहुधावत॥सु
निजेप्रभुउजाहेसवइी॥अवज
नभूमिहहकोउनजाइ॥निरमेगमि
टिगोसवपापहीपुंसनिकेमग॥
६॥दोहा॥वालपुरीधनपतिपुरी
सुरपतिसुषसाज॥सत्तलोक
वैकुंठपतिवसोअवधिमेराज
७॥तोमर॥हसिपोकहोषुना
थ॥सवसीसवैविधिगाथ॥मम
एकइक्षसुजान॥कवहूंनहोइ
सुआन॥तुमपुत्रहोसनका

त

ग.
१८२

दि॥मोभगतज्ञानेंअरूदि॥सुत्तमां
निमिकतिनकेत्ति॥भुवदेवभुवप्र
गटेति॥९॥हमदिग्रतिानहिसभा
उ॥कछुअपदेनेगाउ॥अबदेहिह
मकिहिठोर॥तुमकहासुगसिमो
र॥१०॥ब्रह्मांचर्तुपदी॥सबवेमुनि
नेतपवलपूरविदिनिसनालसु
जाति॥वडूधावडुवानपतिअ
वतारनिदेअापनहभांत॥मुनि
प्रभुअाषंडलमथुगमंडलेमेदी
जेसुभग्रांम॥वाढवडुकीरतिलन
वनासुहतिअतिअजेपसंग्रां
म॥११॥दोहा॥जिनिकेपूजनुम
भप्रअंतजामीश्रीपतिनकी
वानकहाहमेवूअतत्रभुवनदी
प॥१२॥दुजअाप्रतेहीसमेमत
कपत्रकेसाथ्य॥कातविलापक

लापहाराम चंद्र रघुनाथ॥ १३॥
गलिका॥ बालकै गतासु दे षिध
म राज सौं विसेषि॥ बात याकही
निहार। दोसु कौन को विचार॥ १
४॥ धर्मराजमनोरमा॥ निजु सद
निकीतप सानि सुधालक॥ वह
धाम वदेव निकेसव बालक॥ की
वेगि विदा सिगरे सुर नाइक॥ च
ढिपुष्पक भ्रात सुचल रघुनाइक॥
१५॥ दोधक॥ राम चले सुनि स
द्र की गीता॥ पंकज जो निरगये ज
हसीता॥ देषि लगी पग राम की रा
नी॥ पूज के व अति कोमल बानी॥
१६॥ श्रीसीता॥ कौन हूं पूरव पुन्य
हमारे॥ आजु फले जु हांपग धारे॥
१७॥ ब्रंम्हा॥ देवनि कौ सब काज
कीनौ॥ रावन मारि विडौ जस लीनौ

नौ॥१७॥मैविनतीवहुवारलेकी
नी॥लोकनिकीकरुनारसभी
नी॥उत्तरमोहिदियोसुनिसी
ता॥जाकीनजांनपरैजगगीता॥
१८॥मागतुहौकछुमोकहदी
जै॥चित्तमैप्रारविचारुनाकी
जे॥आजुतौचालिचल्यौतुम
औसे॥रामचलेवैकुंठहिजेसे॥
१९॥सिषजहीकछुनैनवाए॥व्र
ह्मनहीनिजुलोकसिधाए॥तं
मतहीसिन्रसइकोषंजपो॥ब्रा
ह्मनकोसुनुजीवनमंत्रो॥२०॥
सुंदरी॥एकसमैरघुनाथमहांम
ति॥सीतहिदेषिसगर्भवतीरति॥
सुरमांगुजुजीमहभावतु॥मोमनु
तादरसैसुषुपावतु॥२१॥सीत
जौतुमहोइप्रसंनमहांमाति॥मि

रिवैठेतुमहीसोमदारति॥ अंतर
कीसबबातनिंतजानतहोसं
वकीसवतेपर॥२२॥ श्रीरामा॥ दो
हा॥ निर्गुनतेसर्गुनभयोसुनिसं
दरतुवहेत॥ श्रीकेछमागोसुमु
षितुचेतिहारहेत॥२३॥ श्रीसी
ताजू॥ जोसवतेहितुमापरकीज
तु॥ ईसमयाकोकिवचुदीजतुहे
जितनेरिषिदेवनदीतट॥ होति
नकोपहिराइफिरोपट॥२४॥ श्री
राम॥ दोहा॥ प्रथमदोहदेक्योक
रानिकुलसुनियहबात॥ पटप
हिरावनिरिषिनिकोजेजोसुंद
रिप्रात॥२५॥ दोहा॥ भोजनुको
तवश्रीरघुनंदन॥ पोढरहेतवदु
षनिकंदन॥ वाजवजेअधिरात
मईजव॥ दूतनआनिपनांमकि

रा॰
१८४

प्रेतवा ॥ २६ ॥ चूअनतदूतनकौरघुनं
दन ॥ सोकपवादुकहौजगवंदन ॥
कोमेरोजसस्वपजसकहहुरीको
नीतेकोपापनिभनहुरी ॥ २७ ॥ दू
त ॥ दोहा ॥ तिपाजककीएकसु
निन्हुठगहुरीएमासारपितासमुझ
कैतवकहौल्लेपहुचैातिहवार ॥
२८ ॥ याकेन्यातेचूकजोसोवगसो
तुममोह ॥ पाछेभावैसोकरोपह
हेत्रियासुतोह ॥ २९ ॥ तवहौजे
केन्याकहौतेजानौराम ॥ रावनके
घरसियारहौवहुरल्यायेराम ॥ ३० ॥
॥ चंचला ॥ दूतभूतभावनाकही
कुनजारवेन ॥ कोटिधांविचारि
योपरेविचारतेकछून ॥ सरवत्र
दोतहोतवंधन्याइयोसुजान ॥
रामचंद्रदेखियेविभातचंदकेस

मान॥३१॥वसंततिलक॥बहुभां
तवंदनताकरी॥हसबोलिपोनकृ
पाकरी॥हममैकछुदुजदोषहै
तोतेकिपोप्रभरोषुहै॥३२॥अथ
दोहा॥मनसांवाचाकर्मनाहम
सेवकसुनतात॥कोनुदोषनहि
बोलिजनुज्योंकहिआएबात॥३
३॥श्रीराम॥कहिजेकहानकही
परै॥कहिजैतज्योंबहुत्वंडरै त
वदतवातसवकही॥बहुभांति
देहिसदादही॥३४॥दोहा॥सदा
सुहृज्योंजांनुकीनिंदतज्योंषल
जाल॥जैसेश्रुतिहिसुभावहीपा
षंडीसवकाल॥३५॥भवअपवा
दनतेतज्योंजोचाहतसीताहि॥
जैसेजगसंजोगतेजोगीजनम
नताहि॥३६॥अथअनूपमाला॥ङ

मनिमानिकेतुमसुहसीतहआं
नियोनिजधाम॥ अवलोकपाव
कपावकपंकजोरविअंकपंकज
दाम॥ किहिभंतिताहिनिकासहो
अपवाददवादिवषांन॥ सिवसंभु
धर्मसमेतश्रीपतिमाषिवोली
आंन॥२१॥ जमनादकेअपवाद
तेदुजछोडिलोकपिलाहि॥ वि
हीनकोदुषदेतजोपाहरछांडि
चंद्रकलाहि॥ पहहे॰ असत्य
जुहाहिगोअपवादसत्यसना
थ॥ प्रभछाडसुध्यसुधाहिपी
वतुआपनेविषहाथ॥२२॥ दो
हा॥ प्रियपावनप्रियवादिनी
पतिव्रताअतिसुद्धजगकोउ
तअनुवर्तिनीछांडतलोकवि
वुद्ध॥२३॥ वेमातावेसेपितानु

मसभेसापाइ॥भएमयेअपलोक
केभाजनभूतलआइ॥८०॥और
महरिलीला॥सांचीकेहीभएथवा
तसवसुजांन॥सीतासदासुध
कृपानिधांन॥मेरीकछुरिस्पासु
पावेहरि॥मोकोहतोजोवानक
होफर॥८१॥लछिमन॥दोषत
जेनसदासुभगंगा॥छांउहूगेवहू
त्वंगतंगा॥मायहिनिंदतहेसव
जोगी॥क्योंतजिहेभवभूपति
भोगी॥ग्पासहिनिंदतहेमठधा
री॥भावनहेहहिभक्तिनिहारी॥निं
दतहेतुवनामहिवामी॥केकहि
जेतुमअंतरजामी॥८२॥दोहा॥
तुलसीकोमाननप्रियागेतमकी
त्रियअगप॥सीताकोछांउनकह
नकेसहोसरवाप॥८३॥सुकघ

ए॰ १८६

नरूपमाल॥सपनेहींनहिछांडिये॥ त्रियगुविनीपल॥छाडजोतनवसु हसीतहिगर्भमोचनहोइ॥पुत्र होइकेपुत्रिकायहवातजानिन जाइ॥लोकुलोकनिमेअलोकु विलोकुवेरिघुराइ॥८४॥दोहा॥ रामचंद्रजगचंद्रतुमफलदलमू लसमेत॥सीतापावनपावनी आइनहींदुषदेत॥८५॥घरघर प्रतिहेजगसुषीरामतिहारेराज॥ अपनेहींघरकरतकततसोकअ सोकसमाज॥८६॥श्रीरामदोध क॥तुमबालकहोवहुधासवमे प्रतिउत्तरदेहुनफेरिहमे॥जुकेहे हमवातसुजाइकेरो॥मनमेंमनवि चारनओरधरो॥८७॥दोहा॥ओ रहोइतौजांनिजेप्रभसोकहाव

साइ॥ पंहविचाकैसत्रुघ्नंनयेग
पम्रकुलाइ॥४८॥श्रीराम सीतहि
लेअ्रवसत्व जेजे॥ राषिमहाव
नेमेफिअ्रंजे॥ लक्षिमनजोफि
उत्तरदेहौ॥ सासनभंगकेपापन
पैहौ॥४९॥ लछमनलेवनसीय
सिधाए॥ थावजंगमहीदुषपा
ए॥ गंगहिदेषकेहोनवसीता॥ श्री
रघुनंदनकीजनुगीता॥५०॥पार
भएजवहीजनदोउ॥ भीमवनी
जनजंतनकोउ॥ निर्जननिर्म
लकाननदेष्यो॥ भूतपिसाचनि
कौघरलेष्यो॥५१॥नागसुरूपनी
सुनोनपांनकाकिंा॥ पंछसुकी
नेसाकां॥ नहोमधुमदेषिजे सु
गंधवंधलेषिजे॥५२॥सुनोनवे
दकीगिरा॥ नवुध्धिहोनहेथिरा

रिषीनिकीकुटीकहां॥पतिव्रता
वैसजहां॥५३॥मिलैनकोउवेकह
नआउतेनजातहै॥उराति हौंम
हाहिसे॥चलेहमैकहांलिये॥५४
॥दोहा॥सुनिसुनिलक्ष्मनभी
तअतिसीताजूकेवैन॥मुषउत्त
रआवैनहींजलभरआऐनैन॥५
५॥नराज॥विलोकलक्ष्मनेभई
विदेहजाविदेहसी॥गिराअचे
तह्वैमनोघनेघनीतडित्तसी
कोजुछाहऐकहाषऐकहाय
वासमो॥सोचिषोसवैसरीरनै
नहीगकाससो॥५६॥दोहा॥म
नकजानिलछिमनतहींमारन
लगेतिहिकाल॥भरीअकास
वांनीतवैघजोहुजिषेगीवाल
॥५७॥नृपमाल॥रामकीजपसिद्ध

सीतहिंक्योचलेवनछाडि॥ छो
हएकफनीकरिफनदीहमाल
निमांडि॥ वालमीकविलोकि
योवनदेवताजनुजांनि॥ कल
पव्रक्षलताकिधोदिविलेगिरि
भुवआनि॥ प॰ च॰ सीचमंत्रसजी
वननितवजीउठौतिहिकाल
पूछियोमुनकोनकीविछिपाव
धूअजुवाल॥ सीता॥ होंसुता
मिथलेसकीदसरथ्येपुत्रकलि
श्कोनदोषतजीनतकोनआ
पुनअत्र॥ प॰ टी॥ मुनि॥ पुत्रिकेसु
निमोहिजांनोवालमीकदुजा
ति॥ सर्वदा मिथलेसकेतुहसर्व
दासुभभाति॥ होहिगेसुतद्वैसु
धीपगधारियेममवोक॥ राम
चंद्रछितीसकेसिरगाइयोति

इलोक॥ ६७॥ सर्वधांमुनिसुष्प
सीतहिलैगएरिषिराइ॥ श्राप
नीतपसानिकैसुभसिहुसोसु
षपाइ॥ पुत्रहैभएएककुस
दूसरलवजानि॥ जातिकर्मन।
श्रादिदैसवकिएवेदवषानि ६८
॥दोहा॥ वेदपठाएप्रथमहीं धु
र्नवेदसविसेषश्रस्त्रसस्त्रदी
नेसवैमंत्रश्रसेष॥ ६९॥ इतिश्री
मत्सकललोकलोचनचकोर
चिंतामनिश्रीरांमचंद्रचंद्रि
कायां॥ कुसलवउतपतिव
र्ननंनामतेतीसमोप्रकास
३३॥ दोहा॥ चौंतीसएप्रकास
मैस्वांनसभामैश्राइ॥ सत्रुघं
नजूमारिहैलवनासुरकोजा
इ॥ दोधक॥ एकसमैहरिधिम

दीने

सभामह॥सोभतहैनारदेवप्रभाम
हे॥संगसवैरिषिराजविराजै॥सोद
रमंत्रनिमित्रनिसाजै॥२॥कुकरऐ
कुफिरदहिआयोडुंदभीदीहडु
वारवजायो॥वाजतहीलछमनउ
ठधाए॥स्वानकोंकारनपूछनआ
ए॥३॥स्वान॥काहूकेक्रोधविरो
धनदेषौमकोराजतपोमयलेषौ
तामहमेदुषदोघमायो॥एमहि
सोंसुनिवेदनआयो॥४॥लछम
नु॥धर्मसभामहरामहिजानौ
स्वांनचलोनिजदुष्यवषांनो॥
स्वांन॥होंअवराजसभानहिआ ए
ऊ॥आवतकेसवसोभनपाऊ॥५॥
दोहा॥देवकुदेवनदेवघरपाव
नथलसुषदाइ॥अनबोलेआ
नंदमतिकुसितजीवनहिजाइ॥

रा॰
१०६

दोधक॥राजसभातवस्वांनवुलायो
रामविलोकतिहीं सिरनायो॥रा
मकहोजुकछूदुषतेरे॥स्वांनन
संककहोप्रभुमेरे॥१॥स्वांनतार
क॥तुमहोसवगपसदासुषदा
री॥अहोसवकोसमअपसदा
री॥जगसोवतुहैजगतीपति
जागे॥अपनेअपनेसवमारग
लागे॥२॥नरदेवनपापपरेपर
जाके॥निसिवासरहोतनरक्ष
कताके॥गुनदोषनिकोनिज
होहनदेसी॥तवहीनपहोतुनि
रैपदपेसी॥६॥दोहा॥निजस्वा
रथहीसिद्धजमोकोकस्योंहा
र॥विनअपराधअगाधमतिता
कोकहाविचार॥१०॥दोधक॥
तवताकहलैनगएजनधायेत

प्र

१०६

वहींनगाीमहतेगहिल्पाये॥ श्री
राम॥ यहकूकेतुक्योविनदोय
हिमारे॥ अपनेजियत्रासकछु
नविचारे॥ ११॥ दोहा॥ पहसाव
तुनोपंथमहहोभोजनकोजातु
अपउरमेअकुलाइकेकीनोया
कोघातु॥ १२॥ श्रीराम सभापति
स्वांगता॥ तुमवंम्हवह्मरिषिराज
वषानो॥ धर्मकर्मवहधांमवृजा
नो॥ कौनदंउदुजकोंदुजदीजे॥
चितविन्नाकिहोसारीकीजे॥ १३
॥ स्वान॥ शीससीषयहपाकहदी
जे॥ चूकहीनश्री कोऊनकीजे
हैअंदउभुवदेवसदाई॥ जत्रतत्र
मुनिजेषुराई॥ १४॥ श्रीरामनो
मरा॥ मुनिस्वाननंकहिदंदुहम
याहिदेहिअषंउ॥ कहिवातनं

उत्तुहार॥ हियमाझ्म्राप्रविचार॥१५॥
॥दोहा॥ मेरोभायोजोकोरामचं
द्रहितुमंडि॥ कीजेदुजपदमठ
पतीआरधर्मसवछंडि॥१६॥नि
सपालका॥ पीतपहिराइपटवा
धिसिरसोपठो॥ वोरअंगराग
गजोरवद्धधांगठी॥ पूजपारिपाइ
इमठनाहितवहीदेषो॥ मत्तगज
राजचठविप्रमठकोगषो॥१७॥दो
हा॥ भयोएकेतेराजदुजकन्यो क
ह्योस्वांनकरतार॥ भोगलागेभा
गवनवजतदुंदभीद्वार॥१८॥सुंद
री॥ वृझतलोगसभासवस्वानहि॥
जांनतनाहिनेयापरमानहि॥वि
प्रहितेजुदईपदवीवड्॥ हैपह
निग्रहकेधोअनुग्रह॥१९॥स्वान
एकुकंनोजहतोमठधारी॥देव

चतुर्भुजकोअधिकारी॥तापहको
ऊवैजबआवै॥अंगभलीरचना
निवनावै॥२०॥जादिनकेसबकोउ
नआवै॥तादिनपालिकतेनउठा
वै॥भेटनिलेवहुधाधुनकीने॥नि
त्यकेरभवभोगप्रवीने॥२१॥एक
दिनाइकपाहुनोआयो॥भोजन
कोवहुभांतिबनायो॥ताहिपरो
सनकोपितुमेरो॥वोलिलियोहि
तुहेसबकेरो॥२२॥ताहितहांवहु
भांतपरोस्यो॥क्योहूकहूनषमाअ
रोध्यो॥ताहिपरोसतहीषस्यो
यो॥ऐवतहोहसकंठलगायो॥२३
॥चामर॥माहिमातुदूधभातुतम
भोजकोदियो॥वातसोमिराइता
तछीरअंगलीछियो॥छोटूको
भष्योगयोमनेमेहांसुनकेजो॥हो

भम्योअनेकजोनअौधिअांनस्वा
नभो॥२४॥दोहा॥वाकोथोरोदोष
मैदीनोदरअगाध॥रामचारारी
सतुमछमिजोयहअपराध॥२५॥
इहिलोककस्योअपवित्रउहिलो
कनरकसुषवास॥छुवैजुकोउमठ
पतिहिताकोपुन्यविनास॥२६॥अ
स्लोक॥रामायने॥व्रंम्हस्वंदेवद्रव्यं
चस्त्रीणांवालधनंचयत॥दत्तंह
रतियोमोहाद्दिष्टंसहपतत्यध॥२७
स्कंधपुराने॥द्रहणंचारायदेवस्य
केसवस्यविसेषत॥माठपत्यंत्व
याकुयात्सर्वधर्मवहिष्कम॥२८॥
पद्मपुराने॥पत्रंपुष्पफलंतो
यंद्रव्यमन्नमठस्यच॥जोग्राति
शपचेत्योनरकानेकविंशति
॥२९॥देवीपुराने॥अभोज्यमठना

मंत्रमुक्तकर्चोद्दापपरांचरेत ॥ स्पष्टू
मादापतिंविप्रसवासाजलमावि
प्रेत ॥ २० ॥ दोहा ॥ औरऐककथा
केहोविमलभूपकीराम ॥ यहेस्त्र
जोध्यावसतुहैवसकारकेधाम ॥
वसंततिलक ॥ राजहुतोदुषप्र
बलअनेकहारी ॥ बाएनसीछ
त्रविमलनिवासकारी ॥ सोसत्स
केतइहिनामप्रसिध्धसूरी ॥ वि
द्याविनोदरतधर्मविधानपूरी
॥ २१ ॥ संकल्पद्रुमवहुधातिहिचो
रलीनो ॥ धर्माधिकारपेएकडु
जातिकीनो ॥ वंदीविनोदगनवि
लासकर्त्ता ॥ पावैसदासुडजन्म
सेषहर्त्ता ॥ २२ ॥ राजाविदसवहूव
मूसाजिगसोहै ॥ जन्मांतहांज
अुवीरनिसोभसोहेआएकाल

लकिलहूतकलेसकारी॥ लीनैग
येनपालहिजहांदंडधारी॥३४॥
॥धर्मराजभुजंगप्रयात॥ कहा
भोगवेगमहाराजहूमे॥ कियापै
किपुंन्यकेरभूमे॥ राज॥ सुनोदेव
मोकोकछुसुधिनाही॥ कहौसु
पुहीपापुजोमोहमाही॥३५॥ ध
र्मराज॥ कियातेहजातीसुधर्मा
धिकारी॥ सुनोनित्यसंकल्प
चित्तापहारी॥ दियोदुष्टवेस्यानि
इंडानिलैलै॥ महापापमाथेति
हारेसुदेदै॥३६॥ हुतेतेसवेदेस
हीकोनिरंता॥ भलेकीवुरेकीक
रैतेनचिंता॥ महासक्ष्मेहैधर्म
कीवातलेषो॥ जितौपुंन्यकी
नौतितौपापुलेषो॥३७॥ दोहा॥
कालसर्पककवलतेसवैराजके

धर्म॥ ताहीतेअतिकठिनहैनपति
दानकेधर्म॥३८॥ स्वानभुजंगमप्रि
यात॥ भएकोटिधांनकंसंपन्नता
कोइतौदोषसंसर्गकेसिद्दिजाको
सर्वपापभक्षीनिमेमुक्तलेषी॥२
त्यौंअधमेआनिकंकालवेषी॥३
९॥ दोधक॥ बोलिउठेदरवार वि
लासी॥ हालसेजमुनातटवा
सी॥ आदरकैतिसभामहबोलो
पूजनकेक्रमकोमगषोलौ॥४०॥
श्रीरांम॥ आएकहांकोउआइ
सुदीजे॥ मनोरथुआपनोपूरन
कीजे॥ जीविनसोसबुराजुतिहा
रो॥ निर्भयह्वैभुवलोकविहारो॥४१॥
गनिका॥ सुधिदेसपरावरसुभए
सवैइहिवार॥ ईसआगमसंगमा
दिकहीअनेगप्रकार॥ धांमपाव

रा॰
१६३

नेह्नगसोपदपद्मकेपरसपाइ॥जन्म
सुध्यभसोसवैकुलइष्टहोंमुनिरा
इ॥४५॥पादपद्मनामहीभएसुहृ
सीषहाथ॥नेत्रपावनत्रपदेषतही
भएमुनिनाथ॥नासिकासेनागंध
भईमुलेतनिनाम॥भएश्रवनसु
ध्यसुसवदसुध्यसुनाइपीउषधां
म॥४६॥रिषिमाहहठा॥तुमहोसवला
इकश्रीरघुनाइकउपमादीजेका
हे॥मुनिमानससंतोजगननियंता
श्रादिनश्रंतनजाहृ॥मोऐलवना
सुजैसेमधुमुत्रमोएश्रीरघुनाथ
जगजपरसभीनोश्रीसिवदीनो
सूलहिलीनोहाथ॥४७॥दोधक
देवसवैनहारिगएजू॥श्रोरसवै
नादेवहएजू॥श्रीरघुनंदनजुद्ध
हिमाड़ो॥संकरकोजनसेवकछांडो

सु

॥४५॥दोहा॥जाकहमेलतुसल्ल
वहसुनिजेरघुराइ॥जाहिभस्म
करसर्वपांवाहीकेकरजाइ॥४६॥
पादारबहमकोदएमथुरामंडिली
आपु॥वापेवसननपावही विनाव
सेअतिपापु॥४७॥सेहिगेसत्रु घ्र
केसुनतुमकोतिहिकाल॥वासुदे
वद्धरक्षिहौहोतुमकातिहिकाल
॥४८॥भुजंगप्रयात॥चलोवेगि
सत्रु घ्रताकोसघारौ॥वहेहैंदसुनो
भावहेहमारो॥सदासुहवंदावनी
भूवनीहे॥तहांनित्यमेरीविहार
स्थलीहै॥४९॥यहेजानिभेमेदुजा
तीनिदीनी॥वसेजत्रवृंदापिया
प्रेमभीनी॥सनासानिकीभक्ति।
जोजीयजागे॥महादेवकोसल्ल
ताकोनलागे॥५०॥विदाह्वैचले

श्री

रामपैसत्रुहंता॥चलेसाथमहाधीर
यो॥जुद्धंता॥चतुर्थीचमृचारिहं
वोरसाजे॥वजेदुंदभीदीहदिगंतगा
जे॥५१॥दोहा॥केसववासरवारिहे
रघुपतिकेतुमवीर॥लवनासुरके
जमनिज्योमेलेजमुनातीर॥५२॥
मनोरमा॥लवनासुरआइगयो
जमुनातट॥अवलोकहिस्योरघु
नंदनकेभट॥धंनुबांनलियेनिक
सेरघुनंदन॥मदकेगजकोसुतुके
हरकंदन॥५३॥लवनासुरभुजंगप्र
यात॥सुन्योतनहोतरहांभलिआ
यो॥महादेवकीसामहाभस्मपा
यो॥सत्रुघन॥महाराजश्रीरामम
हेत्रुध्यतोसो॥तज्योदेसकेकेके
केराजध्यमोसो॥५४॥लवनासु
र॥वहेरामराजादसग्रीवहंता॥सुतो

वंधमेरेपरास्त्रीनिरंता॥ हतेतेतो
हिवाकोकेराचित्तुभाषै॥ वडेभा
गमेरमेहांवेपाषे॥५५॥ भएक्रुद्ध
तेसेडवेक्रुध्यरंता॥ डस्त्रोश्रस्त्र
सहेप्रयोगीनिहंता॥ वलीविक्र
मीधीरसोभाप्रकासी॥ नस्योहषु
देहीनवषैविनासी॥५६॥ सवघ
नदोहा॥ लवनासुरसिवसलवि
नाश्रोरनेलागेमोहि॥ शूललि
येविनभलहोहोंनमारिहोंतोहि
५७॥ मोटनक॥ लीनोलवनासु
रसलजही॥ मान्योरघुनंदनवा
नतही॥ कारोसिउसलसमत
गपे॥ सलीकापुष्पत्रिलोपभ
यो॥५८॥ वाजेदिविदुंदुभीदीह
नवै॥ आएसुरइंद्रसमेतसवेदे
व॥ कीनोवहुविक्रमपारनमे॥

मागोवादानतेचैमनमै॥पद॥स
त्रुघननागस्वरूपिनी॥सनास्व
वृत्तिजोहरै॥सदासमूलसोजरै
अकालमतिसोमरै॥अनेक
नर्कसोपरै॥८०॥देव॥सनास्वजा
तिसर्वदा॥जथापुरातनर्वदा
मेजैसजैतिसंपदा॥वित्तध्यकी
असंपदा॥८१॥दोहा॥मधुएमं
डिलमधुपुरीकेसवसुवसव
साइ॥यहिकहिदेषसत्रुघन
श्रीरामचंद्रकेपाइ॥८२॥इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनिश्रीराम चंद्रचंद्रिकां
यां॥लवनासुरवधवर्ननं॥नाम
चौतीसमोप्रकास॥३४॥दोहा॥
पैतीसयेप्रकासमै अस्वमेधकी
जग्य॥करिहैंश्रीरघुनाथजू

बाजु छांडि सब जग्य ॥१॥ बिस्वामि
त्र बसिष्ट सों एक समै रघुनाथ ॥
श्राभी के सब कहन अस्वमेध
की गाथ ॥२॥ चामर ॥ मैथिली स
मेत तो अनेग दांन में दियो ॥ राज
सय आदि दै अनेक जग्य में कि
ये ॥ सीय त्यागि पाप तें महा सु
होंहि पाऊं ॥ अस्वमेध औ एं
कु जानिकी बिना करों ॥३॥ बसि
ष्ट ॥ दोहा ॥ धर्म कर्म सब की ज
री सु फल तउ निके साथ ॥ ता बि
ने जा कछु कीजई सो इही निर्फ
ल नाथ ॥४॥ बिस्वामित्र तोटक ॥
का जे जन भूपन नू पाई ॥ मि
थले सु सुता इक स्वन में ही ॥
बिराज सबै तृषि बोलि लिये ॥
बिधि सौं सब जग्य विधान कि

प्र॰
१९६

मे॥५॥हयसारनिमैहयछोरिल
यो॥सत्रिवर्नसुकेसवसोभियो॥
श्रुतिस्यामलएकुविराजतुहैस्र
लिसोसरसोतुहलाजतुहै॥६
रूपमाला॥पूजिप्रबचनस्वक्ष
त्रक्षरपट्ठवांधियभाल॥भूरि
भूषनसत्रदूषनछोडियोहिका
ल॥मंगलेचतुरंगसेनहिसत्रुहा
तिहिसाथभांतिभांतिनिमानु
दैपदृऐसबैरघुनाथ॥७॥जात
हैजितवाजुकेसवजातहैति
तलोग॥वोलिविप्रनदानदी
जैजंत्रतंत्रसभोग॥वेनवीन
मदंगवाजतडुंदभीचङ्भे
व॥भांतिभांतिनिहोतिमंगल
देवसेनदेव॥८॥कमल॥रा
घवकीचतुरंगचमूचयकोग

नैकेसबराजसमाजनि॥ सूरति
रंगनिकेउड्डैपगतुंगपताकन
केपटसाजनि॥ दूटपरेतिनतेम
कताधरनीउपमावरनीकविरा
जनि॥ वृंदमनोमुषफेननितेवि
थोराजसिरीथवैमंगलल्लाज
नि॥ ३१॥ दंडक॥ नादपूरिघूरिघू
रितोरिवनचूरिगिरसोषिजल
भूरिभूरिथलथलमाथकी॥ के
सौदासआसपासटोरटोरराषि
जनतिनहूंकीसंपतिसवआप
नैहीहाथकी॥ उंनतननवाइनत
उंनतनवायेभूपसंत्रनिकीजी
वकीसुमित्रनिकेहाथकी॥ मुद्र
तसमुद्रसातोमुद्रानिजमुद्रि
तकैदिसिदिसिजीतिआईसैं
नारघुनाथकी॥ ३०॥ दोहा॥ दि

रा॰
१६७

सिविदितिनिम्रवगाहिकेसुष
हीकेसवदास॥वालमीककेम्रा
श्रमहिगपोतुरंगमकास॥दोधक
दाहेतेमुनिवालकधाये॥पूजित
वाजविलोकनम्राए॥भालकौ
पट्टजहीलववांचौ॥वांधितुरंग
विजैरसुएचौ॥१२॥श्लोक॥ए
कवीराचकौसिल्पानस्पपुत्रोर
घूदह॥तेनएंमेनउक्तोसावा
जीघृनातुमावली॥७३॥दोधक
षारवमंचहुवारतेगाजी॥कौं
नहिरेयहवांधियवाजी॥वाल
उठोलवमैयहवांधो॥योकहि
केधनुसाइकसाधौ॥१४॥मारभ
गाइदयेसिगरेपो॥मन्मथके
सरपानषनैजैसो॥भागतहै
भटसोलवग्रागे॥श्रीरामके

१६७

नामतेंज्यो श्रबभागे ॥ २५ ॥ भुजंग
प्रयात ॥ जौधामगेवीरसतुघ्नघाप्र
कोदंडलीनेमहांरोषछायो ॥ टोटोत
हांएकुवालै विलोको ॥ ऐकोतही
थोननाएचुमोको ॥ २६ ॥ सचवध्रसुंदरी
वालकछाडिदैछोरतुंएगम ॥ तोसौं
कहाकौऐसंगासंगम ॥ रूपरवीतुहि
मैकरूनारसु ॥ विप्रनितेकछुवीरहै
नैजसु ॥ २७ ॥ लव कछुवातवडीन
कहैमुषप्योरे ॥ लवसौनजुऐलव
नासुभारे ॥ डजदोषनिहींवलु
ताकोसंघारे ॥ महिंजुरहैतिहि
कौकहमाऐ ॥ २८ ॥ चामर ॥ एमवं
धवानतीनछांडिसोचसूलसे ॥ भा
लमेसालवाललागिसोन फू
लसे ॥ नव ॥ घातकीनराजतांत
गाततेकिपूजियो ॥ कौनुसत्रुतै

हयोजुनामुसचहांलिसो॥२१॥नि
सिषालिका॥ऐषकावानवडुभां
तिलवछांडिम्रो॥एकधुजसतज
तुतीनथेषंडिसे॥सम्रदसाथ्य
सुतश्रस्रकाजोधे॥ताहिसिय
पूतुत्रनतूलषंडनके॥२४॥ताकु
षुहांवबानवहेकालीनें॥ल
वनासुकोघुनंदनुदीनो॥लव
केउमेउथ्योवहपच्ची गुआइ
गिाएनमेवहछत्री॥२५॥मोटन
क॥मोहेलवभूंमिगिरजवही॥जु
यदुंदुभीदीहवजेतवही॥भुश्रेते
एषऊपरश्रांनधो॥सत्रुघंनहि
सैकत्रनानिभो॥२६॥षोतवही
तिहिछोलिसो॥सत्रुघनहिश्रा
नदचितभयो॥लेकेलवकोतिब
लेजवहीसीतापहवालगएत

वही॥२३॥बालक॥बाच्य॥अूल
ना॥सुनिमेथिलीनपएककौ
लववाधियौववाजि॥चतुरंग
सेनभजाइकैतवजीतिसौवह।
आजि॥उलागिगोसएककौमु
वमेगिरोमुरछाइ॥वाजलैलवलै
चल्यौनपडैदभीनिवाजाशि॥२४॥
दोहा॥सीतागीतापुत्रकीसुनसु
नभइअचेत॥मनोचित्रकीपुत्र
कामनक्रमवचनसमेत॥२५॥
॥गीतका॥पुहाथजीरघुनाथ
कोसुतक्योपोकरतार॥पतिदेव
तासवकालतौलवजीमिलेइ
हिवार॥षिहेनव्याकुसहेन
बालवलेइकोनछिडाइ॥वनम
ध्यटेरसुनीजहीकुसआइसौ
अकुलाइ॥२६॥कुसदोहा॥॥

रा॰
१९९

रिपुहि मारि सिंघार दलजमंतें ले
उछुराइ॥ लव हि लिये पहो द षिहो
मातातेरे पाइ॥ २७॥ विजय॥ गहि
रामवसिंधम राव राज्यो जिहि वाल
वली वलसौं वारयो ॥ ताहि दिस
सिराव नके गिरि सेत जात नजा
हि नहे यो॥ मूलसमूलतषारि लि
यो लवनासुर पी छे ते जाइ सुद
यो॥ राघवके दलमत्त करी सुर
अंकुसदे कुसके सवफेयो॥ २८॥
॥ दोहा॥ कुसकी टेरसुनी जहीं फू
ल फिरे सत्रुघ्न॥ दीपविलो किप
तंग ज्यों जदपि भये वहु विघ्न॥ २९॥
तोटक॥ रघुनंदनकौ अवलोक
तहीं कुस॥ उरमांझ हयो सर वंध्य
निरंकुस॥ सुगिरे रथ ऊपर लाग
तहीं सत्रु॥ गिरि ऊपर ज्यों गजरा

१९९

जकलेवत॥ ३० ॥सुंदरी॥ नूअिगिरे
अहिाजवहींनेभागिगइतवही
भटकेगन॥ कोठिलियोजवहीलं
वकोसत॥ कंठलगपोतवहींउठसो
दत॥ ३१॥ दोहा॥ मिलेजुकुसलव
कुसलसोनाजुवांधितहमूल॥
नमैठाढेसोभिजेपलुपतिगनिपत
तूल॥ ३२ ॥ इतिश्रीमत्सकललोक
लोचनचकोरचिंतामनिश्रीराम
चंद्रचंदिकायांसत्रुघुनसंमोहन
वर्ननंनामपेनीसमोप्रकासः॥ ३५ ॥
दोहा॥ छत्तीसमेवरनिवोलवकु
सकोअतिजुद्व॥ रनमैठाढेसोभ
जैलक्षिमनसोतिरसुद्ध॥ १॥ रूप
माल॥ जगपमंडिलमैंहनेरघुनां
थजूतिहिकाल॥ अंगचर्मकुर
गकोअरुस्वर्नकीसगवाल॥ आ

१
२००

सपासरिषीसमोहनमरलोदासा
ष॥ आनिभगुलले।गवरनीजुध
कीसवगाय॥ ॥ मगुलवाच
वालमीकथलवाजुगयोजू॥ वि
प्रवालकनिघेलियोजू॥ एकवा
चिपटुघोटकुंवांध्यो॥ दोरिदीहध
नुसाइकुसाध्यो॥ ३॥ भांतिभांति
सवसेनुसघाल्यो॥ आपुहाथज
नुईसमुधाल्यो॥ अस्त्रसस्त्रनुव
वंधजुधामो॥ षंडषंडकरिवाही
ज्ञमो॥ ४॥ रोषवषववहवांनुलयो
जू॥ इंद्रजीतललगिआपुदसोज
कालनृपडरमधमहयज्ञ॥ वीरम
रक्षितभूमिपरेजू॥ ५॥ तोमर॥ व
हवीरलेअस्वजि॥ जवहींचले
तजिआजुतवओरवालकआं
नि॥ दलुलोरिकियोतजिकांनि॥ ६

तिहिमारियौतुवबंधु॥ तवहंकैगयौ
सवअंधु॥ वहवाजुलैवहवीर र
नमेरत्यौनुपिधौनु॥ ७॥ दोहा॥॥
वुधिवलविक्रमसीलगुनन्तृपति
हारांम॥ काकैसधरिवालहैजी ५
तेसवसंग्राम॥ ८॥ श्रीरांमवाच॥
गुनगनप्रतिपालकरिकुलघा
तकवालकेतरनंता॥ दसरथनृप
कौसुतमोदरामैरलवनासुरकौ
हंता॥ कोउहैमुनिसुतकाकप
क्षजनकहिजनुहैतिहमारजग
तजालकेकमकालकेकुटिल
भपांनकभोर॥ ९॥ सुनिजेसुभल
छमनुराघकुलरक्षनलैहवाज
कौसाधु॥ मुनिसिसुजिनमारिवं
धुउधारिक्रोधुनकाढुविरोधु॥ व
ङ्सहिनदक्षिनादैपदक्षिनाच

रा०
२०८

ल्यो परमान धीर॥ देषत मुनि बा
लक सोदर घालक उपज्यो अद्भु
त कतुना वीर॥१०॥कुसदोधक॥
लछिमन को दल लुटी रषे दष्यो॥
काल हिने अति भीम विसेष्यो॥
दूमे कहा तु कहाल व कीजे॥ वा
ट गहो कि धो घोट कुदीजे॥११॥
देव॥ वू अत हो यह है मतु कीजे
मो अ सु देव रास्त्र सनदीजे॥ लक्ष
मन को दल सिंधु निहारो॥ नाक
ह वान अगस्त ह मारो॥१२॥ को नु
यहे घटि है अरि घेरे॥ नाहि ने
हाय सरासन मेरे॥ ने कत हो ड
छि तो मन कीनो॥ सब वजै रिक
धी घन दीनो॥१३॥ लै धनुबान व
ली तव धायो॥ पत्र निज्यो दल मा
ठि ज गायो॥ सो दोरी सोदर सास

२०९

घोरे॥ज्यौंवनपावकपौंनविहारे२४
भागतहैभटमौलवज्ञ्रागे॥रामके
नामतेज्यौंअघभागे॥जथपज॥
थयोमामिभिगाये॥वातवडेजनु
मेघउडाये॥२५॥विजय॥अति
रोसरसेकुसकेसवत्रीरघुनाथ
हिसोरनरीतिरचै॥तिहिकारन
वारभईवहुवारनिषंगहनैनग
नैविरचै॥तहकुंभकटेगजमोती
फटेचिलकैवहुभ्रानितरोरिखै
परिपूरनपूरपयानितेजनपीक
कपूरनकीकिरचै॥२६॥नराज॥
भगेचमूंचमूंपभूपछाडिछांडि
लक्ष्मने॥भगेरथीमहारथीगयं
दवंदकोगने॥लवेकुसेनिरंकु
सेचिलाकिवंधरामको॥उठ्यो
रिसाइकैहठीवध्योसुलाजदं

मको॥१७॥कुसताको॥नहोंमक
राक्षनहोइंद्रजीत॥विलोकितु
म्हेरनहोडरुभीत॥सदांतुमल
क्ष्मनउत्तिमगाय॥करोंजिनत्र्या
पनीमातुत्र्यनाय॥१८॥लक्ष्मन
कहोकुसजोकहित्र्यावहिवात
विलोकतुहोउपवीतहिगात॥इते
पवालवहिक्रमजांनि॥हियेक
तुनाउपजेत्र्यतित्र्यांन॥१९॥विले
चनलोचनहेत्र्यतितोहि॥तजो
हठित्र्यानिमिलोकिनमोहि॥हि
येउपजावहुमानहिदाउ॥छमो
त्र्यपराधुत्र्यजोघरजाहु॥२०॥ह
रिनी॥होहतिहोंकवहूंनहितो
हि॥तुमहीवरवांननिमारहुमो
हि॥वालकविप्रकहाहुनिपो॥ले
कत्र्यलोकनिमेगनिसे॥२१॥

त्नव॥ लक्ष्मनहायहच्याधरो॥
जगपद्मथांप्रभकैनकैरा॥ हो हय
कैकवहूननतजो॥ पट्टलिषोसो
ईवाचिलजो॥२२॥ देधकबान
एकतवलक्ष्मनछैरे॥ वर्मचर्म
वहुभांतिनिषेदे॥ ताहिहीनकु
सचित्तविमोहे॥ भूमिभिन्नगुन
पावकसोहे॥२३॥ क्रोधसहितन
ववांनचलायो॥ पवनचक्रमि
लचित्तुउडायो॥ मोहिमोहिर
थऊपरसोए॥ ताहिदेषिजठजं
गमोएए॥२४॥ नराज॥ वितामराम
जानिकेभाथ्यसोकयाकहे॥ वि
चारचित्तमाजवीरवीर है वकहार
है॥ सरोषदोषलक्ष्मनेत्रलोक
ताविलुमहोइ॥ अदेवदेवताल
सेकहासुवालदीनदोइ॥२५॥

श्रीरामवाच॥ जोइसतवरदूतल
छिमनहेकहाइहिकाल॥ जोइ
केयहवातकहिजैरछियेमुनि
बाल॥ हैसमर्थसनाथवेअसम
र्थअरुअनाथ॥ देषिवेकहल्यार
येमुनिपुत्रउन्निमगाथ॥ २६॥
दोधक॥ भग्गुलअाइगएनवहीब
हु॥ बारपुकारतअारतरक्षहु॥ वस
वभांतिनसेनसघारे॥ लक्ष्म
नतौतिनकौनहिमारे॥ २७॥ बा
लकजांनितजेकरुनाकर॥ वेत्र
तिठीठभयेदलसंघर॥ क्योंहन
भाजतगाजतहैरन॥ वीरअना
थभएविनलक्ष्मन॥ २८॥ जान
हिजेउनिकौमुनिबालक॥ वेको
उहेजेजगतीप्रतिपाल॥ हैंकोउ
रावनकेकिसहाइक॥ कैलवना

सुकेसुषदाइक॥२६॥भयजू॥ बाल
कांवनकेनसहाइक॥नालवनासु
केसुषदाइक॥वेनिजुबालकवृक्ष
निकेफल॥मोहतहेरघुवंसिनके
वल॥२० जीतहिकोरनमेसत्रुष
नहि॥कोकैलक्ष्मनकेतनसक्ष
हि॥जवतैलक्ष्मनसीयतजीवन
लोकअलोकनिपूरिएहेतनन॥२७॥
छोटेईचाहततेतवतैतन॥पाइ
निविन्नकिपीतनुपावन॥सत्रुषंन
तजोतनसोदरलोजनि॥पूतभए
तजिपापसमाजनि॥२८॥पातक
कोनतजीतुमसीता॥पावनहोत
सुनेजगुगीता॥दोषविहीनजदे
षहिलावे॥सोफलपेप्रभकाहि
नपावे॥२९॥हमहीतिहितीरथ
जाइमरेगे॥संगतिदोषअसेष

हरैंगे॥ बांनररक्षसरिक्षतिहारे गर्भ
वरषवंसहिभारे॥३४॥ तालगिकै
यह बात विचारी॥ होप्रभुसंततग
र्भप्रहारी॥ चवरी॥ क्रोधकेनवभर
यअंग्रदसंगरसंगरकोचले॥ जांम
वंतवलीविभीषनऔरसबमल
भले॥ कोगनैचतुरंगसो नहिएध
सीवरुधांभुरी॥ जाइकैअवलोकि
येरनमेगिरिगिरसेकरी॥३५॥ इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचको
रचिंतामनिश्रीरांमचंद्रिचंद्रिका
यांलछिमनसमोहनवर्ननंछती
समोप्रकास॥३६॥ दोहा॥ सैती
सयेप्रकासमैभरथहिजुहनि।
दांन॥ सुग्रीवविभीषनकोकरब
हुविधसोअपमान॥१॥ भरथ
रूपकमाल॥ जामवंतविलोकि

यौरनभीमभूहनिमंत॥ओनकी
सरिताअनंतअनंतनृपडुरंत॥ज
त्तेतत्रधुजापरीपठदेहदेहनिभ
प टूटटूटिपरेमनोसुभव्रक्षवा
तअनृप॥५॥पुंजकुंजरसुभसंद
नसोभिजेजनुसूर॥ठलिठलिच
लेगिरीसनिपलिओनितपूर॥
ग्राहतुंगतरंगकक्षपचातुचर्मवि
साल॥चक्रसरथचक्रेपरतगीध
व्रध्धमराल॥३॥केकरेकरवाहमी
नगयंदसुदभुजंग॥चीरिचौरसु
देसकेसषआसमानसुरंग॥वा
लुकावहुभांतिहेमनिमालजा
लप्रकास॥पेरपारभएतिहेमन
वालकेसवदास॥८॥दोहा॥ना
मवरनलषुवेषवलकहारीमि
हनिमंत॥रानोवउँविक्रमकि

रा॰
२०५

योजीतेजुद्ध अनंत ॥ ५ ॥ दोधक ॥ ह
निमंतदुरंतन दो अवगाहे ॥ एमस
होदराजी अभिलाहैं ॥ नवज्यौं तु
मसिंधहिनाषिगएहो ॥ अवनाक
हूक्यौंतुमभीतभएहो ॥ ६ ॥ हनूमं
त ॥ दोहा ॥ सीतापदसन्मुषहते
गएसिंधुकेपार ॥ विमुषभएक्यों
जानतसिन्नैमोभरथइहिवार ॥ ७ ॥
॥ दोधक ॥ धनवानघरमुनिबा
लकआए ॥ जनुमनमथकेजुग
रूपसुहाए ॥ कारिवकहसएनि
केमदहीने ॥ रघुनाइकमानहू
हैवपकीने ॥ ८ ॥ भरथ ॥ मुनिबा
लकहौतुमजगपकएहो ॥ कैधौ
वरवाजनवाधनआहो ॥ अपए
घकेमेअवआसिषदीजे ॥ बा
जुतजोजियरोषनकीजे ॥ ९ ॥

दोहा॥ बाधौ पदु जोसीपहस्त त्रि
निकाज प्रकास॥ रोषकरयौ विनक
जतुमहम विप्रनकेदास॥१०॥ कु
सदोधक॥ वालकसव्व कहोतुम
कासो॥ देहनिसोकिधौजीवप्रभा
सो॥ हैजठदेह्न केहैसवकोउ॥ जी
वप्रसुवालकवह्ननहोउ॥११॥ जीउ
मौनजरै कह्नछीजे॥ ताकहसो
चुकहाकरलीजे॥ जीवनविप्रन
छत्रिसुजांनो॥ केवलब्रंम्हहिये
महआनो॥१२॥ केतुमदेह्नहमक
छुसिक्षा॥ तौहमदेहितुम्हैयह
भिक्षा॥ चित्तविचारिकरौसाइ्गी
कीजे॥ दोषुतुम्हेनहमेअवदी
जे॥१३॥ विप्रवालकनिकीसुनिवा
नी॥ कुहसरएसुतभोअभिमानी
विप्रत्तुमसीससम्हारो॥ रा

षिलेहु अवताहि पुकारौ ॥ १४ ॥ ले
व ॥ सुग्रीवकहा तुम सों न माआे
तौ कौ आनि कां तनु जानि केछा।
आे ॥ वालि वली तमनाचनचा
ऐ ॥ सो सो तुम क्यों न माउ न आ
ऐ ॥ १५ ॥ फलहीन सुता कहवा न
चलासो ॥ आति वात भसोबहुधा
मुर आसो ॥ तवदौरि के वानु विभी
षनली नो ॥ लवताहि विलोकि
तही हसि दीनो ॥ १६ ॥ आउ विभी
षनतूं कुलदूषन ॥ एकतु ही कुल
कौ किल भूषन ॥ जुद्ध जो जभले
भय जीके ॥ सत्रु हि आनि मिले
तुमनीके ॥ १७ ॥ देवव धून व वाह
रिल्याय़ो ॥ क्यों तव हीन जि ता
हिन आसो ॥ जो अपने जियको
डरवा ऐ ॥ छुद्र सवे कुल छिद्र व

ताए॥१८॥दोहा॥जेठौभैयाअंन
दाताजापितासमान॥ताकीत्रिय
तैलैकरीपतिनीमातुसमान॥१
९॥कोजानैकैवारतूंकहीनहूहै
माइ॥सोईतूंपतिनीकरीसुनि
पापिनकेराइ॥२०॥तोटक॥सि
गेदेलमायहहसावतहे॥रघुवं
सहिपापनसावतहे॥धकुताक
हतेजुअजोजुजिसो॥षलजाइ
हलाहलक्योनपियो॥२१॥अ
वहेकछुतोकहलाजहिये॥क
हिकोनविचारहण्यालिये॥
अवजाइकरीषकीआगिजरे
गलुवांधिकेसागरवूडमरे॥२२॥
॥दोहा॥कहाकहोहोभरथसो
जानतुहेसवकोइ॥तोसेपापी
संग्रहेक्योनपराजयहोइ॥२३॥

रा०
२०७

विजय॥हासिनिहैंकुसमभरविभी
षनआनतमेरसरंजिगनूए॥भूरि
भेरेउठिवैठतहींउमेआतिएसक
मासिमनूए॥सोहतिदंतनिकीकि
रचैविचछोडतलोहकेरोसदनू
ए॥षाइतमारतंनिकेसंगकोज
नकांमोकपाकनूए॥२४॥दोहा
वङ्तजुङ्भयोभरथसौदेवअ
देवसमांन॥मोहिमोहिरथपर
गिरमोरमोहनबान॥२५॥इति
श्रीमत्सकललोकलोचनचं
कोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचं
द्रिकायां॥भरथसमोहनवर्न
नं॥नामसेतीसमोप्रकास३७
दोहा॥आतीसएप्रकासमेकुस
लवरनेमेआदि॥अंगदगर्भघ
टाइहेकेसवश्रीरघुराइ॥१॥भर

पहिभेपे विलवंकछु आइगएर
घुनाथ॥ देषौवहसंग्रामथलुज
अगिमोसवमाथ॥२॥ तोटक॥
रघुनाथहि आवतआइगये॥ न
मेमुनिवालकनूपाये॥ तेनरूप
सुसीलनिसोअपने॥ प्रतिविवि
मनोमुषदर्पनमे॥३॥ श्रीरामउ
पेंद्रवज्र॥ सीतासनाथमुषचंद्र
विलोकि राम॥ वूझेकहांवसतहो
कोनग्राम॥ मातापिताकवनक
वनहिकर्मकीन॥ विद्याविनोद
किहिसिषएअलदीन॥४॥ कु
सचकचारि॥ राजराजकहातुम्हेम
ममवंससो अवकाम॥ वूझली
जइशीसलोगनिजीतिकेसंग्रा
म॥ श्रीराम होंनजुद्धकरो केहवि
नविप्रवेषविलोकि॥ वेगिवीर

एकथाकहौतुमआपनीहिसाए॥क
५॥कुलवाच्य॥ कंसकामियल
सकीहमपुत्र जायेदो॥३॥वालमी
कश्रसेषकर्मकियेकपासेभो
३॥अलअसलसवेदयेअत्रवे
दभेदपठाइ॥वापकोनहिनातु
जोननआजुलोषुए॥३६॥दो
धक॥जानुकीकेमुषआपरआ
नै॥ाामतहीअपनेसुतजाने वि
क्रमसाहससीलविचारुजुह
न्नथामहिअवधुत्तार॥७॥श्रीराम
अंगदजीतिइन्हेगहिल्यावो॥के
अपनेवलमारभगावो॥वेगि
बुआवहुचित्रचिताको॥आजु
तिलोदकुदेहुपिताको॥४॥अं
गदतोआतिअंगनिफूले॥पान
केपतकहौतुमभूलेजाइजुले

वसौतत्रलैकै॥ बातकहीसतषं
उनकैक॥ ९॥लव॥ अंगदजोतुम
मैवलुहोतो॥ तोवहसूराजकोमु
तकोती॥ देषतहींजननीजुतिहा
री॥ वासगसोवतजैसोवरनारी॥ १०॥
जादिननेजुगराजकहाये॥ विक्र
मवुद्विविवेकवहाये॥ जीवतही
किमरपहजैहो॥ कोंनपिताहि
तिलोदकुदैहो॥ ११॥ अंगदहाथ
गहेतरुजोई॥ जातुतितेतिल
सोकरिसोई॥ पर्वनपुंजजितेर
निमेले॥ फूलकेतूलजैसोवांन
निझेले॥ १२॥ वांननिवंधिरहीम
वदेही॥ वांनरतेवाहूंभयोसेही
भूतलतेसरमारउठासो॥ षेलकी
गेदकज्योफलपासो॥ १३॥ सोह
तुहेअधगरधऐसोहोतुवदान

टकौनभजेसो॥जानका●हूंनइ
तेउतपावैगोवलुचित्तुदसोदि
सधावै॥१४॥वालुघटैजुभयेगुनु
भंगी॥ढ्केगयोञ्चकचसंककोसं
ककौसंगी॥हारबुनाइकहैजनु
तेरा॥राषहुगर्भगयेसवमेरा॥१५॥
दीनसुनोजनकीजववांनी॥जीक
उनालववांननिञ्चांनी॥छोडि
टयोगिभूंमिपर्योइी॥विढ्वल
ढ्कविनमार्योमर्योइी॥१६॥श्री
रामसवैया॥भोवसभटभूपभि
रवलषतपराकरतारकरेकै॥भा
रेभिरनभूंधपभूपनटारटरेहि
मकोटिञ्चरेकै॥रामसौंषर्गहने
कुसकेसवभूमिगिरेनकटेहुंग
रेकै॥रामविलाकिकहीसञ्च
दुतषाइमरेनेगनागमरेकै॥१७॥२०६

दोधक॥ बांनरी क्षजिते निसचारी॥ सैनासवैइकबांनसघारी वां नविधेसिगेजवजोए॥ स्पंदन मेरघुनंदनसोए॥ १८॥ गीतिका॥ रनहीकैसवसीसभूषनसंग्रहे॥ जिभलेभलेहनिमंतकोअनुजांमवंतहिवाजसौग्रसिलैब ले॥ रजीतिकेलवसाथलेकुसमातकेसुषपांपरे॥ सिरसूंघिकंठलगाइ आंननिचूंमिगोदहु औधरे॥ १९॥ इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामनिश्रीरांमचंद्रचंद्रिकामा॥ कुसलवजुद्धिवर्णननाम॥ अठतीसमोप्रकास॥ ३८॥ दोहा॥

उनतालीसेवरनवोकुसलवसीताआइसिनासवेजिवाइ

हैमिलहैश्रीरघुराई॥१॥गीतका
चींन्हदेवरकेविभूषनदेषिकैह
निमंत॥पुत्रहोविधवाकरीतुमकु
मकीनदुरंत॥बापकोंरनमारिकै
अरुपित्रसर्वसंघारि॥श्रांनिश्री
हनिमंतवाधिनश्रांनियोंमुहि
गारि॥२॥दोहा॥मातासवकाकी
करीविधवाएकहिवार॥मोते
श्रानपापिनीजायेवंसकुठार
३॥दोधक॥पापीकहाहतिपा
पहिजेहो॥लोकचतुर्दसठोरुन
पैहो॥जेकुमारकेहेजनिकोई
जारजजाइकहोवहदोई॥४॥
कुस॥मोकहदोसुकहासुनि
माता॥वांधिलयोजुसुनोजा
वभ्राता॥होंतुमहीतिहिवार
पठायो॥रामपिताकवमोहिसु

नासो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मोहिविलोकि
विलोकिकै रघुपति पोढेराम ॥ जीव
तछांडे जुहै मैमाताकरिविश्राम
॥ दो ॥ दोधक ॥ आइगयेतबही
मुनिनाइक ॥ श्रीरघुनाइककेगु
नगाइक ॥ बातविचारिकिहीमि
गरीकुस ॥ डष्णुकियोमनमेंक
लअंकुस ॥ ७ ॥ मुनउवाच ॥ की
जैविलंबुनसंतनसीता ॥ भामी
कहूंनमिटैसुभगीता ॥ तूंपतिदे
वनिकीगरवेटी ॥ तेरीजगमतु
कहावतिचेटी ॥ ८ ॥ तोटक ॥ सि
गरेरनमंडिलमाअगये ॥ अवलो
कितहीमुनभीतभये ॥ डरुबाल
ककोअतिअद्भुतविक्रमु ॥ अ
वलोकिभयोमुनिकेजियस
भ्रमु ॥ ९ ॥ दंडक ॥ श्रोनितस

लिलनखांनासलिलचरागिर
वालिसुतविषविभीषनजाम्बो
है॥चवरपताकांवडीवाडवाग्न
नलसमरोगरिपुजांमवंतके
सवविचाग्योहै॥वाजसरवाज
सुरगजसेअनेकगजभरथसे
वंधरिद्वअमतनिहाग्योहै॥सो
हतसहितसषरांमचंद्रकुसल
वजीतिकेसमरसिंधुसोचिह्न
सुपाग्योहै॥१०॥सीताजू॥दो
हा॥मनसावाचांकर्मनाजो
मेरेमनरांम॥तोसवसेनाजी
उठैनेकुनहोहिविरांम॥११॥
दोधक॥जीउठीसवसेनसभा
गी॥केसवसोवततेजनजागी॥
स्योसुतसीतहिलेसुषकारी॥
राघवकेमुनिपाइनिपारी॥१२

सोदरसुंदरपुत्र मिले जब॥ वरषा
वरषासुरफूलनिकीतव॥ वद्ध
धांदिविदुंदिभिकेगनवाजे॥ दि
गपालगयंदनकेगनगाजे॥ ५३॥
अंगद॥ रामदेवतुमगर्भप्रहारी॥
नित्पतुक्षसमतिबुध्यहमारी॥ तु
हदेवभमनकहिआयोदासु
जोनप्रभमाएगलायो॥ ५४॥ रूप
माल॥ सुंदरीसुतलैसहोदावा
जुलैसुषपाइ॥ संगलैमुनिवा
लमीकाहदीहदुष्पनसाइ॥ रा
मधामचलेभलेजसुलोकि
लोकपठाइ॥ भांतिभातिसुद
संकेसवडेंइभीनिवजाइ॥ ५५
भरथलछमनसत्रुहांपुरभीर
ढारतजात॥ चोरढारतहेडुह
दिसपत्रउत्तमगात॥ छत्र है

काइंद्रकेसुभसोभिजेवहुभेव॥म
न्नदंतचढेठपैठेजयसव्द देवअदेव॥
६॥तोटक॥जगपथलीषेनंदनश्रा
ये॥धांमनिधांमनिहोतवधाये
श्रीमिथलेसमुतावडंगी॥म्पो
मुतसासुनिकेपगलागी॥७॥दो
हा॥चारिपुत्रवंहुपुत्रमुतकोमिल्या
नवदेषि॥पायोपरमानंदमुनिरि
गपालनसमलेषि॥८॥नूपमा
ला॥जल्लपूरनकैरमापतिदानुदे
तअसेष॥हीरनीरजचीरमानि
कवरषिवरषावेष॥अंगअंगतत्त
डागवागफूलेफलेवहुभांति॥
भौनभूषनभूमिभाजनभूरिवा
साणाति॥९॥दोहा॥एकअयु
नगजवाजहैलीनिसुरभिसुब
र्न॥एकएकविप्रनिदियेकस

वसहिलसुवर्न ॥२०॥ देवकुदेवनदे
वघाजितनेजीवत्रलोक ॥ मनभा
योपायोसवनुकीनौसवनिस्त्रसो
क ॥२१॥ अपनेघासोदानिकेपुत्र
विलोकसमान ॥ न्यारेन्यारेदेसके
नपतकरेभगवान ॥२२॥ कुसलव
अपनेभाएथ्यकेनंदनपुष्करतक्ष
ल ॥ लछिमनकेअंगदभयेचित्रके
तनंदस ॥२३॥ भुजंगप्रयात ॥ भ
लेपुत्रहेदोहसत्रुघ्नजाए ॥ सदा
साधसेवेउभागपाए ॥ सदामि
त्रपोषीहनेसत्रछाती ॥ सुबाहू
वरैदूसरेसत्रघाती ॥२४॥ दोहा
कुसकोदईकुसावतीनगरीकोसलदेस ॥ लवकोदईअवंतिका
उत्तरउत्तमदेस ॥२५॥ पश्चिमपुह
करकोदईपुष्पावतीनाम ॥ ल

सनिताताछहिदईलईजीनिसं
ग्राम॥२६॥अंगदकौअंगदनगर
दीनौपछिमओर॥चंद्रकेतचंद्रा
वतीलीनौउनजोर॥२७॥पु
एदईसुवाहुकोंपुनपावनगा
थ॥सत्रघातकीनृपकरदेसन
केरघुनाथ॥२८॥तोटक॥इहि
भांतिसुरक्षितभूमभई॥सवपुत्र
भतीजिनवाटिदई॥सवपुत्रम
हांप्रभुवोलिलिये॥वहुभांति
निकेउपदेसदिये॥२९॥चांमर
वोलिमंनअर्द्धईंद्धमूढपैनकी
जई॥दीजियेजुवाततातभूलि
सोनलीजई॥नेहराजेनदंड
दुष्यमंत्रिमित्रिकों॥जत्रतत्रजा
हुतौपत्याहुनाअमित्रकों॥३०॥
नराज॥जुवानषेलिजैकहूंनज्यों

तुवेदसछिपे॥ अमित्रभूमिमेमोनमोनभक्षुभक्षिये॥ करेनमंत्रमूठसेनगूठमंत्रषोलिये॥ सपुत्रहोइजोहठीमठीनसोनबोलिये॥ २१॥ वषानदंउजेप्रजाहितसमानमानियो॥ अगाधुसाधुपूछिकेजपापराधुमारियो॥ कुदेवदेवनारिकोनवालिचित्तुलीजई॥ विरोधुविप्रवंससोंसुस्वप्रहीनकीजई॥ २२॥ भुजंगप्रयात॥ पराद्रव्यकौनाविषैप्रायदेषौ॥ परस्त्रीनिज्योजीपरस्त्रीनिलेषौ॥ दहौकामक्रोधमहामोहलोभै॥ तजौगर्भकौंसर्वदाचित्तछोभै॥ २३॥ जसैसंग्रहौनिग्रहौजुद्धजोधा॥ करौसाधुसंसर्गजेबुधिबोधा॥ हितूहोइसोदेइजोधर्मसिक्षा॥ अ

धर्मीनिकौदैतहावाकुभिक्षा॥३४॥
कृतघ्नीकुवादीपरस्त्रीविहारीक
रैविप्रलोभीनधर्माधिकारी॥स
दाइप्रसंकल्पकौरक्षिलीजैदु
जातीनिकौआपुहीदानदीजै॥
३५॥विजय॥तेरहमंउल्लमंडितभू
तलभूपतिजोक्रमहीकूमसाधै
कैसहूंताकहसत्रुनमित्रनकेसब
दामउदासनबांधै॥सत्रुसमीपप
रैजिनिमित्रुसुसत्रुउदाससदां
करिजोवैविग्रहसंधिनिदांननि
सिंधुलौलेचहूंवोरनिसौसुष
सोवै॥३६॥दोहा॥एजष्मीवस
कैसहूंहोइनउरअवदात॥जैसे
तैसेआपुवसताकोकीजैतात॥३७
इहिविधिसिषदेपुत्रसवविदा
करदैराज॥सोहनसीतानाथस

गराजसुबंधसमाज ॥३८॥ गीतक ॥
रामचंद्रचरित्रकोजुसुनेसदासुष
पाइ ॥ नाहिपुत्रकलित्रसंपतिदे
हिष्यीरषुराइ ॥ अन्नानदानअ
सेषतीरथन्हानकोफलहोइ ॥ ना
रिकैनरविप्रछत्रियवैस्यसूद्रजुको
इ ॥ ३९ ॥ नराज ॥ असेषपापपुंज
केकलापआपनेवहाइ ॥ विदेहि
राजसोसदेहभक्तरामकोकहाइ ॥
लहेजुमुक्तिलोकलोकअंतमुक्ति
होहिताहि ॥ पढैगुनेकहैसुनैसु
रामचंद्रचंद्रिकाहि ॥ ४० ॥ इतिश्री
मत्सकललोकलोचनचकोरचिं
तामनिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायां ॥ श्री
सीतारामसमागमवर्ननंनाम ॥ उ
नतालीसमोप्रकास ॥ ३९ ॥ इतिश्री
रामचंद्रकासंपूर्णसुभंभवतमंगलं

ए॰
२१५

दादात॥दोहा॥जेसीप्रतदेषीहती
तेसीलइ‍ईउतार॥भूलचूकजहजां
नवीलेवीआपसमार॥१॥मिती
चैत्रशुक्लपक्षे॥७॥बुधवासर॥
संवत॥१९२१॥मुकाममवानपु
र॥लिष्यतंपंश्रीचोवेरामप्रसा
द॥जोकोउवांचेसुनेताकोजे
श्रीरामपोंचे॥जथ्याप्रतपा‌ई
तथालिषीममदोषनदीयते